सुख-समृद्धि, संतान, मकान, व्यापार, और
तन-मन की समस्याओं का निवारण।

अनुभव सिद्ध चमत्कारी उपायों एवं लाल किताब के गुप्त भेदों और दुलर्भ महादशाओं / अन्तर्दशाओं के विवरण सहित।

गुरू हरकेश कुमार (त्रिशूलवाले)

समर्पित

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र पर विगत कई वर्षों से काम कर रहा हूँ पर कभी भी यह नहीं सोचा था कि इस पर पुस्तक लिखूंगा।

अचानक एक दिन मेरे परम मित्र डा0 अनिल तनेजा जी से मुलाकात हुई जो कि स्वयं चिकित्सक होते हुए भी हस्तरेखा में परांगत है, उनकी वास्तु में भी रूचि है। तब मैंने अपनी पहली पुस्तक ज्योतिषोवास्तु लिखी थी।

उसी का ही परिणाम है कि मैंने ''लाल किताब'' लिखी जो मूल लाल किताब पर आधारित है जिसे लिखने में ललित वशिष्ठ मेरे गुरू भाई, पंडित सतीश कौशिक, सतीश चौधरी (समाजसेवक), सतीश कपिला, राकेश दीवान, मेरा बेटा अभिषेक जोली, मेरी बेटी मोनीषा जोली ने काफी सहयोग दिया।

इस पुस्तक में इन सब के पर्याप्त सहयोग के कारण ही इस ग्रन्थ की रचना संभव हुई।

गुरू हरकेश कुमार
(त्रिशूलवाले)

भूमिका

मेरी यह पुस्तक मेरा व्यक्तिगत अनुभव है जो कि मेरे विगत 20 वर्षों का अनुभव है उसमें लाल किताब के व्यवहारिक पक्ष की विवेचना की गई है। इसके माध्यम से विभिन्न ग्रहों की मन्दी व अच्छी स्थिति का ज्ञान प्राप्त हो सकता है। एक बार ठीक प्रकार से ग्रह की स्थिति जानने के बाद ही अचूक उपाय सिद्ध होते हैं। इस किताब में विभिन्न योगों को विस्तार से समझाया गया है। इसलिए सामान्य ज्ञान वाला व्यक्ति भी इसको समझ सकता है। इसको इतना सरल व सरसता पूर्ण लिखा है कि पाठक आसानी से लाल किताब के विभिन्न योग व उपायों को समझ सकते हैं। साथ ही विभिन्न ग्रहों व योगों की सहायता से अपना व किसी का भी भविष्यफल जान सकते हैं। इसमें मैंने लाल किताब कुण्डली रचना व विभिन्न ग्रहों की लाल किताब आधारित महादशा तथा अन्तर दशा का वर्णन भी किया है। सामान्यतः बाजार में प्रचलित लाल किताबों में वर्षफल कुण्डली के आधार पर फलादेश करना बताया गया है जो इतना सटीक नहीं होता। मैने पहली बार प्रस्तुत पुस्तक में लाल किताब की ग्रह दशाओं से फलादेश करना समझाया है जो कि बहुत ही सटीक है। कुछ विशेष प्रकार के उपायों का भी वर्णन किया है जो मैंने अपने अनुभव में प्रत्यक्षतः काम करते देखा हैं। इस पुस्तक में जातको की कुण्डिलियों का विवरण दिया गया है जिसको लेखक ने विस्तृत फलादेश उदाहरण देकर समझाया है और उनका भविष्य कथन किया है। यह कुण्डिलियां लेखक के नियमित यजमानों की है।

आज के भौतिकतावादी दौर व तेज रफ्तार वाली जिन्दगी के युग में हर व्यक्ति अति व्यस्त व समयाभाव के कारण दुखों व कष्टों के निवारण के लिए हर समय चमत्कार की आशा रखता है। ऐसे में लाल किताब के अनेक उपाय जिनको श्रद्धा व विश्वास के साथ करने से अतिशीघ्र व कम खर्च में आशातीत लाभ होते देखा गया है।

मेरा अपना अनुभव यह रहा है कि लाल किताब के आधार पर ग्रहों की उत्तमता/नीचता की पहचान करना अति कष्टसाध्य है। जहाँ पर अधिकतर बन्धु पाठकों ने स्वयं भी अनुभव किया होगा।

मैंने अपने अनुभव के आधार पर बहुत ही सरल भाषा में पहचान का तरीका सुझाया है। आप इस पुस्तक के आधार पर स्वयं किसी भी ग्रह की शुभता या अशुभता का निर्धारण कर सकेंगे। इसके अभाव में अपनी मर्जी के उपाय कर दिए जातें हैं जिससे आशातीत लाभ से जातक वंचित रह जाता है तथा कभी-कभी दुष्प्रभाव का शिकार भी हो जाता है। एक बार ठीक प्रकार से निर्धारण होने पर कि "कौन सा ग्रह अशुभ है और जातक की समस्या विशेष क्या है?" को ध्यान में रखकर इस पुस्तक की सहायता से आप जिस भी उपाय का निर्धारण करेंगे वह समस्याओं के अचूक निवारर्णाथ सिद्ध होगा। लाल किताब का अध्ययन करते वक्त ग्रह किस राशि में बैठा है यह देखना अत्यंत आवश्यक है। और कौन सा ग्रह किस ग्रह पर दृष्टि डाल रहा है। दृष्टि डालने और साथ-साथ बैठने से ग्रहों की तासीर बदल जाती है इसलिए ग्रहों की दृष्टि और राशियों का विशेष महत्व होता है।

इस पुस्तक में लाल किताब की दशा भी दी जा रही है जिससे फलादेश करने में आसानी होगी जैसे लाल किताब में मंगल को 6 वर्ष दिये गए हैं 28 वर्ष से लेकर 33 वर्ष तक इन 6 वर्षों में पहले के दो वर्ष मंगल में मंगल के होंगे फिर मंगल में शनि के और बाद में मंगल में शुक्र के होंगे। ऐसा नहीं है कि अगर आपका मंगल शुभ या अशुभ है तो 6 वर्ष शुभ या अशुभ फल करेगा। पहले दो वर्ष मंगल के आधार पर होंगे। फिर दो वर्ष शनि के आधार पर होंगे। फिर दो वर्ष शुक्र के आधार पर फल होगा। कई उदाहरण कुंडलियां देकर समझाया गया है।

लाल किताब के रचियता पंडित गिरधारीलाल शर्मा जी का आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने अनूठी किताब की रचना की जिसमें कारगर और सस्ते उपायों से जातकों को मदद मिलती है।

पाठकों से निवेदन है कि वे इस पुस्तक को पढ़कर मुझे इसकी कमियों और सुझावों से अवगत कराएं जिससे आगे इसमे सुधार कर सकूँ।

गुरु हरकेश कुमार (त्रिशूलवाले)

आभार

प्रिय बन्धुओं,

इस पुस्तक को आपको समर्पित करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस पुस्तक में मैंने अपने जीवन के अभी तक का अनुभव आपको समर्पित किया है। आशा है आप इससे लाभान्वित होंगे। यह मेरा दूसरा प्रयास है। मैं अपनी पहली पुस्तक ज्योतिषोवास्तु आपकी सेवा में समर्पित कर चुका हूँ। सुविज्ञ पाठकों ने इसे हाथो-हाथ लिया। उसमें भी मेरा यह प्रयास रहा कि पाठकों को प्रचलन से कुछ अलग दिया जाए। मुझे माननीय बन्धुओं, पाठकों से अत्यधिक सराहना मिली। मेरी आशा है कि आप सभी की कृपा व शुभकामनाओं से यह पुस्तक भी आप को ज्योतिष की नई गहराइयों से आपका परिचय कराएगी। वैसे मुझे ज्योतिष में बचपन से ही रूचि थी। मैंने ज्योतिष पर कई पुस्तकें पढ़ी और पाया कि इनसे आम आदमी कुछ भी नहीं सीख पाता। इन पुस्तकों में विरोधाभास होता है अन्तोत्गत्वः किसी ज्योतिष, विद्वान की शरण लेनी पड़ती है।

मैंने इस पुस्तक के द्वारा लाल किताब को सरल बनाने की कोशिश की है जिससे सिर्फ और सिर्फ इस पुस्तक को पढ़कर कोई भी पाठक अपनी कुण्डली को सार्थक रूप से पढ़ सकता है और सस्ते और सरल उपायों द्वारा अपना जीवन रसमय व सुखमय बना सकता है। ज्योतिष सीखने के लिए कई विद्वानों से सलाह-मशवरा किया लेकिन, किसी की भी बात समझ नहीं आई।

बहुत ही तलाश करने के बाद गुरु एस. के. मेहता से परिचय हुआ। उन्होंने मेरी पत्री बहुत अच्छी तरह से देखी। उनकी कही हुई बातें सब सही साबित हुई जिससे मैं बहुत प्रभावित हुआ। मेरे बहुत आग्रह करने के बाद वे मुझे ज्योतिष विद्या सिखाने के लिए तैयार हुए। श्री एस. के. मेहता के आर्शीवाद से ज्योतिष विद्या का ज्ञान प्राप्त हुआ। फिर मैंने अभ्यास करना शुरू किया उसके बाद मैंने लाल किताब का अध्ययन किया और पंडित कृष्ण अशांत से

लाल किताब के बारे में कई बार चर्चा हुई। वे काफी व्यस्त रहते थे।

इसके बाद फिर मेरी तलाश आगे बढ़ी। फिर मेरी लाल किताब के अनुभवी तजुर्बेकार गुरू नफे सिंह डबास से परिचय हुआ। जिनसे लाल किताब का काफी ज्ञान प्राप्त हुआ। उनके आर्शीवाद से लाल किताब के अनुभव इस पुस्तक में लिख रहा हूँ। फिर भी मेरी रूचि यहाँ पर नहीं रूकी। सरदार मलकीत सिंह और सुखप्रीत सिंह के साथ मिलकर मैने वास्तु शास्त्र के विषय पर काफी अध्ययन किया।

फिर मैंने वास्तु और ज्योतिष का एक साथ अध्ययन किया। इस अध्ययन से ज्ञान प्राप्त हुआ कि जिनके घर में पूर्व दिशा में दोष हो उनके कुण्डली में सूर्य खराब होता है। ऐसे ही प्रत्येक ग्रह किसी न किसी दिशा को प्रभावित करता है। फिर इसके ऊपर मैंने पुस्तक ज्योतिषोवास्तु लिखी। जिसमें वास्तु और ग्रहों का समन्वय किया गया है। मेरी पुस्तक ज्योतिषोवास्तु पढ़कर कोई भी व्यक्ति अपने घर की दिशा को देखकर अनुमान लगा सकता है कि उसका अपना कौन सा ग्रह शुभ या अशुभ है। इसी बीच गुरू राजेन्द्र कुन्द्रा से परिचय हुआ जिनसे मैंने हस्त रेखा का ज्ञान प्राप्त किया।

"दान व कर्म की जीवन में महत्वता क्या है?" अनुभव लेखक को धार्मिक गुरू श्री श्याम सुंदर जी महाराज से प्राप्त हुआ यह अपने आप में साक्षात् सत्य व प्रत्यक्ष फलदाई है।

विषय-सूची

सूर्य (सू.)	=	Sun
मंगल (मं.)	=	Mars
बृहस्पति (बृ.)	=	Jupiter
शनि (श.)	=	Saturn
केतु (के.)	=	Ketu
चन्द्र (चं.)	=	Moon
बुध (बु.)	=	Mercury
शुक्र (शु.)	=	Venus
राहु (रा.)	=	Rahu
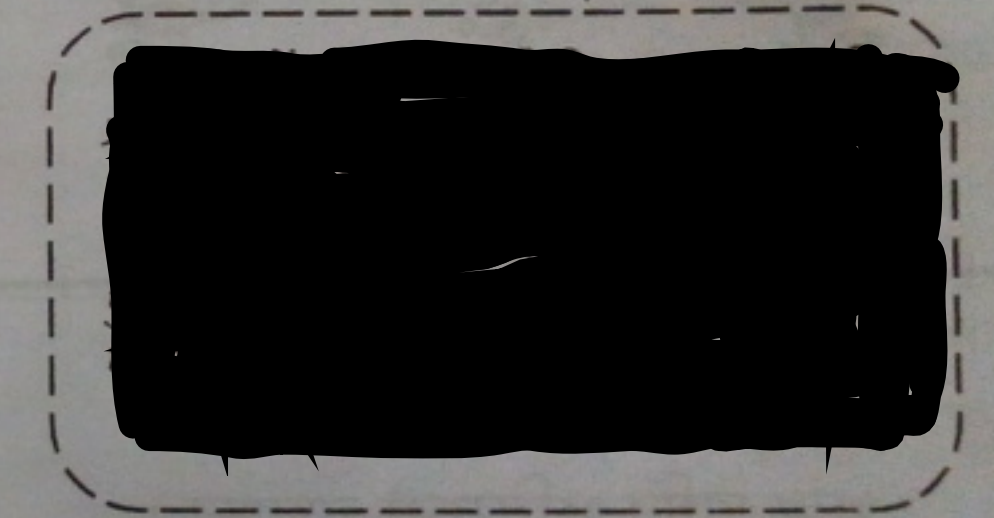
ॐ

श्री गनेशाय नमः

ब्रहमा मुरारिः त्रिपुरान्तकारी
भानु शशि भूमिसुतो बुधश्च।
गुरूश्च शुक्रः शनिः राहु-केतवः
सर्वे ग्रहाः शान्तिकराः भवन्तु॥

अपनी किस्मत अपने आप बदल सकतें हैं।

"अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारना"
यानि अपनी किस्मत अपने आप खराब करना।

हमारे बुजुर्गों और ऋषि मुनियों ने हर कहावत बड़े तजुर्बे और अनुभव के आधार पर लिखी है। अगर कोई अपनी किस्मत अपने आप खराब कर सकता है तो अच्छी क्यों नहीं कर सकता है? हर बात के दो पहलू होते हैं नहीं तो उसका कोई मतलब नहीं होता।

"सुख का एहसास तभी होगा जब दुख होगा।
रोशनी का एहसास तभी होगा जब अंधेरा होगा।
दिन है तो रात है, जिन्दगी है तो मौत है।"

अगर कर्म और उपाय करने से किस्मत नहीं बदलती हो तो कोई भी कर्म व उपाय न करें। एक बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि उपाय करते समय आप के दिल में यदि श्रद्धा और विश्वास नहीं है, या कोई भी भ्रम है तो उपाय नहीं करना चाहिए। उपाय श्रद्धा, विश्वास होने पर ही असर करते हैं। कोई विद्वान ज्योतिष आचार्य और गुरू आपको उपाय बताता है तो गुरु से तकरार न करें और न ही ये जानने की कोशिश करें कौन सा उपाय किस कार्य के लिए है।

"गुरू और शिष्य की बीच में जो मिलन है,
वह शिष्य के मौन और गुरू के शब्द में होता है।"

"सदा ही गुरू शिष्य को पहचानता है,
शिष्य कभी गुरू को नहीं पहचान सकता"

खुद इन्सान की पेश न जाए, हुकम विधाता होता है।
सुख दौलत और साँस अंतिम, उम्र का फैसला होता है।

बीमारी का इलाज है, मगर मौत का कोई इलाज नहीं,
सांसारिक हिसाब किताब है कोई दवाए खुदाई नहीं

लाल किताब के फरमान :
कुदरत से किस्मत किस तरह आयी।

फरमान नं0 1

हुकम विधाता जनम मिले तो, लेख ज्योतिष बतलाता है।
लाल किताब बच्चा ग्रह चाली, किस्मत साथ ले आता है।
इस बच्चे की नन्हीं मुट्ठी में, पकड़ा देव आकाश का है।
भरा खजाना जिसके अंदर, निधि सिद्धी की माला है।
नौ निद्धि को ग्रह नौ माना, सिद्धि बारह राशि है।
नौ जब जब बारह गिनते होती माला पूरी है।

राहू केतू जो पाप गिने हैं, ग्रह सब ही को घुमाते हैं।
गुरु अकेला दो को चलाये घूमते प्रारब्ध में हैं।
सात हो नौ या माया चौरासी, पाप फर्क दो ही का है।
पाप अगर सब दुनिया छोड़े सात ग्रह बच जाता है।
राशि बारह में सात ग्रह से नरक चौरासी कटता है।
नन्हीं मुट्ठी ही खुलती बच्चे की, आकाश हवा भरपूर हुआ।
हरकत, गर्मी पानी से मिट्टी, ब्रह्मान्ड सारा जाग पड़ा।
हाथ दाया और कुण्डली जन्म का, तदबीर मर्द का नाम हुआ।
कुण्डली चन्द्र या हाथ बाएं से, तकदीर बशर का काम हुआ।
उल्टे हाथ से औरत माना, ग्रह फल राशि आम हुआ।
इल्म क्याफा ज्योतिष मिलते, लाल किताब का नाम हुआ।
नौ ग्रह राशि बारह घूमी किस्मत का आगाज हुआ।
नेक हवा जब चलने लगी तो, जहान दोनों आकार हुआ।

तरफ बारह त्रिलोकी होते, गुरु जगत में जन्म हुआ।
माया हवा जब चलने लगी तो, पिछला जन्म अब खत्म हुआ।
राजा सूर्य बच्चा ग्रह चाली, घर अपने प्रवेश हुआ।
अक्ल लेख का झगड़ा चला तो, गृहस्थी गुरु उपदेश हुआ।

फरमान नं – 2

लाल किताब है ज्योतिष निराली,
जो किस्मत सोई जगा देती है।
फरमान पक्के देके बात अंतिम दो,
लफ्ज़ो से ज़हमत हटा देती है।
शर्त राहू केतु की 7वीं भी तोड़ी,
जन्म राशि भी वो मिटा देती है।
लगन एक का हिन्दसा लेकर जो चलती,
खत्म 12 पर वो कर देती है।
है बुनियाद रेखा कयाफा से चलती,
फलादेश ज्योतिष बता देती है।
हवाई ख्यालों को एक तरफ करती,
खड़ा घोड़ा चन्द्र को कर देती है।
नं027 नक्षत्र न पंचांग गिनती भुला,
राशि 12 को वो देती है।
सिर्फ पक्के घर 12 आखिर लेती ग्रह,
नौ से किस्मत बता देती है।
जन्म वक्त दिन माह उम्र साल सब कुछ,
अहम नाम को उड़ा देती है।
फखत रेखा फोटो या कोठे से कुण्डली,
जन्म मय चन्द्र बना देती है।
लिखित जब विधाता किसी की हो,
शक्की उपाय मामूली बता देती है।
ग्रह फल व राशि के टुकड़े दो करती,
या रेखा में मेखा लगा देती है।

फरमान नं0 – 3

जब बच्चा पैदा होता है बन्द मुट्ठी लाता है और जब वो इस दुनिया से कूच करता है तो हाथों की मुट्ठियां खोल जाता है।

(नोट : बुलन्द आसमान की अंतिम हद और पाताल की गहरी तह से घिरे दरम्यानी खाली ख्याल या आकाश में गैवी और जाहिरा हवा के दोनों जहानों में आने जाने के कुल रास्तों को जन्म मरण की गांठ लगा देने वाली चीज ग्रह चाली बच्चा कहलाई)

छोटा सा बच्चा अमूमन मुट्ठी बन्द ही रखता है, और आसानी से किसी दूसरे को अपने हाथ की हथेली देखने नहीं देता। ज्यों-ज्यों बढ़ता है मुट्ठियां खुली रखने का आदी हो जाता है और आखिर एक दिन ऐसा आता है कि वो भरी दुनिया से मुंह मोड़ लेता है जिस्म अकड़ जाता है और वही मुट्ठी जोर से बंद करने पर भी बंद नहीं होती। मतलब ये कि वो बचपन में अपना कुदरती भेद और छोटी सी मुट्ठी का खजाना किसी को दिखाना नहीं चाहता और अब अपनी निश्चित उम्र के लिए साथ लाया हुआ दाना पानी और दुनिया का तमाम हिसाब किताब खत्म कर चुका है तो बाकी बची हुई चीज को मुट्ठी भरकर अपने साथ नही ले जा सकता। मुट्ठी बंद करके साथ क्या लाया और कौन सी चीज की मुट्ठी भरकर अपने साथ न ले जा सका यह एक भेद है जिसका मतलब इसी मुट्ठी में ही भरा हुआ है।

बन्द मुट्ठी में क्या है सिर्फ खाली जगह, जिसका दूसरा नाम आकाश है जिसमें कि सिर्फ हवा भरपूर है। हवा से जब आग मिली तो पानी बना, उससे मिट्टी मिली तो दुनिया का सब भण्डारा पैदा हुआ दूसरे ख्याल में बन्द मुट्ठी के आकाश में जमाने की हवा का मालिक बृहस्पति था जिसमें गर्मी के भण्डारी सूर्य को चमक से चन्द्र के पानी और शुक्र को मिट्टी के बाद मंगल का खाना पीना, और बुध को अकल व बोलना बुलाना, शनि का जादू मंतर और देखना दिखना राहु को रहनुमाएं व कल्पना और केतु का चलना फिरना या गैरों से मिलना मिलाना और हुकम कुदरती की अपना ही खुद बनाना।

लेखक के अनुभव

ब्रह्मांड में ग्रह चाल की बदलती हुई अवस्था

बच्चा जब पैदा हुआ तब इस जमाने की हवा में आया तब बच्चे का शरीर नरम, मुलायम एवं कोमल और भोला-भाला था। बच्चे की ज्यों-ज्यों उम्र बढ़ी ग्रहों ने अपना असर डालना शुरू किया। गुरु से शिक्षा लेकर तब कर्म धर्म करना सीखा और मान-सम्मान बेइज्जती का फर्क मालूम होने लगा।

वक्त वह आया जो रूहानी हालत का हुआ। पट्ठे तक जो बढ़ते थे बढ़ चले तब बृहस्पति की उम्र 16 से शुरू हुई 21 वर्ष मुकम्मल हुई। अब वक्त आया इल्म हुनर का खुद अपने हाथों से धन कमाने का बच्चा बालिग हुआ। उम्र 22 से 23 वर्ष वक्त सूर्य का हुआ। माता की सेवा करने लगा। अपने कमाये धन से उम्र हुई 24 वर्ष वक्त चन्द्र का हुआ। अब आया वक्त शादी का परिवार गृहस्थाश्रम का और बाल बच्चों का वक्त शुक्र का शुरू हुआ। 25 वर्ष अब आया। वक्त मंगल का उम्र 26 वर्ष खाने पीने और भाई का। हिम्मत, ताकत बढ़ाने का। दुनियादारी निभाने का रिश्तों को मजबूत करने का। अब वक्त होगा बुध का जो कि व्यापार का स्वामी है। दिमाग चालाकी से व्यापार को उम्दा करने का उम्र हुई 34 वर्ष। मकान जायदाद को बढ़ाने का वक्त आया। उम्र हुई 36 वर्ष वक्त हुआ शनि का। अब वक्त आया राहू की रहनुमाएं का वर्ष 42 से 47 तक का अब वक्त आया केतू का घुमने फिरने का वर्ष 48 से 50 तक का।

ग्रहों का चक्र

इस ब्रह्माण्ड में 12 राशियां और 27 नक्षत्र है। 7 ग्रह और दो छाया ग्रह है। हर एक ग्रह उपने निर्धारित समय तक प्रत्येक राशि में रह कर अपना चक्र पूरा करता है। जैसे शनि ग्रह एक राशि में ढाई वर्ष रहता है और 30 वर्ष में अपना चक्र पूरा करता

है। गुरु एक वर्ष एक राशि में रहता है और 12 राशियों का चक्र 12 वर्ष में पूरा करता है। राहु और केतु 18 माह एक राशि में रहते हैं और 18 वर्ष में अपना-अपना चक्र पूरा करते हैं। सूर्य एक राशि में एक माह रहता है और एक वर्ष में 12 राशियों का चक्र पूरा करता है। चन्द्र ग्रह सबसे तेज गति का ग्रह है चन्द्र ग्रह एक राशि में सवा दो दिन रहता है और 27 दिन में 12 राशियों का चक्र पूरा करता है? मंगल ग्रह एक राशि में लगभग 45 दिन रहता है और लगभग 540 दिन में 12 राशियों का चक्र पूरा करता है। बुध ग्रह एक राशि में लगभग 25 दिन रहता है और लगभग 300 दिन में 12 राशियों का चक्र पूरा करता है। शुक्र ग्रह एक राशि में लगभग 30 दिन रहता है और 300 दिन में 12 राशियों का चक्र पूरा करता है।

लाल किताब के अनुसारं जब बच्चा पैदा होता है उसके पहले 6 वर्ष शनि का प्रभाव रहता है। जैसे किसी का जन्म 01-05-1945 है तो उस पर 30-04-1951 तक शनि का प्रभाव रहेगा इस से आगे के 6 वर्ष में राहु का प्रभाव रहेगा यानि के बच्चे के सातवें वर्ष से लेकर 12वें वर्ष तक उसके बाद 3 वर्ष केतु को दिये गये हैं यानि 13, 14 और 15वें वर्ष, फिर 6 वर्ष गुरु के होते हैं यानि 16वें वर्ष से लेकर 21वें वर्ष तक उसके बाद 2 वर्ष सूर्य के हैं अर्थात् 22वें और 23वें वर्ष बच्चे पर सूर्य ग्रह का प्रभाव रहेगा। 24वां वर्ष चन्द्र ग्रह का है इस वर्ष चन्द्र ग्रह का प्रभाव रहेगा। शुक्र ग्रह को 25वां, 26वां और 27वां वर्ष दिया गया है। इसी तरह मंगल ग्रह को छः वर्ष यानि 28वें वर्ष से लेकर 33वें वर्ष तक। आखिर में बुध को दो वर्ष दिये गये हैं यानि 34, 35वें वर्ष। इसी तरह ये 1 चक्र पूरा होगा तब 36 वर्ष से फिर से दूसरा चक्र शुरु होगा।

कोई ग्रह जब भी बहुत खराब या अच्छा होगा तो अपनी उम्र के आधे में भी अपना प्रभाव डालेगा जैसे किसी जातक का बुध ग्रह बहुत ज्यादा खराब है तो उसकी उम्र के 17वां वर्ष पर भी बुध ग्रह खराब प्रभाव डालेगा। इसी तरह सब ग्रहों के प्रभाव को समझना चाहिये।

लाल किताब की दशाएं

जैसे ज्योतिष में विशोंतरो दशा योगिनी दशा होती है। वैसे ही लाल किताब में भी दशायें होती हैं। जैसे किसी का जन्म 01-01-2003 को हुआ है तो उस पर 31-12-2008 तक शनि की दशा होगी जिस में पहले दो वर्ष शनि में राहू के होंगे 01-01-2003 से 31-12-2004 तक फिर दो वर्ष बुध के होंगे 01-01-2005 से 31-12-2006 तक और अन्त के दो वर्ष शनि के होंगे 01-01-2007 से 31-12-2008 तक। अगर शनि लाल किताब के अनुसार कुण्डली में अच्छा है तो 6 वर्ष जातक के माँ पिता के लिए अच्छे होंगे।

वर्ष फल में शनि जिस-जिस भाव में भ्रमण करेगा वैसे-वैसे फल देगा। शनि में राहु के वक्त राहु अच्छे भाव में भ्रमण करेगा तो अच्छे फल देगा नहीं तो खराब फल करेगा। शनि में बुध के अन्तर काल में अगर बुध अच्छे भाव में भम्रण करेगा तो अच्छे फल करेगा नहीं तो खराब करेगा। शनि में शनि के अन्तर काल में शनि जिस भाव में भम्रण करेगा वैसे ही फल करेगा। कुण्डली में शनि शुभ होगा और वर्षफल में भी शुभ भाव में भ्रमण करेगा बहुत ही शुभ फल देगा। अगर अशुभ होगा और अशुभ भाव में भ्रमण करेगा तो बहुत अधिक शुभ फल देगा। शनि कुण्डली में शुभ होगा और भ्रमण अशुभ भाव में करेगा तो मिश्रित फल देगा। ऐसे ही अशुभ होगा और भ्रमण शुभ भाव में करेगा तो भी मिश्रित फल देगा। शनि में राहू के समय दोनो ग्रह शुभ भाव में होंगे और वर्षफल शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो बहुत अधिक शुभ फल करेगा। एक शुभ होगा एक अशुभ होगा तो मिश्रित फल करेंगे या जिस भाव में भ्रमण करेंगे उस भाव के अनुसार शुभ या अशुभ फल करेंगे। ऐसे ही शनि में बुध और शनि में शनि की अंतरकाल को समझें।

शनि दशा के बाद राहु की दशा का समय होगा जो कि 6 वर्ष का होगा 01-01-02009 से 31-12-2014 तक का होगा अगर जन्म कुण्डली में राहु अच्छा होगा तो अच्छे फल, खराब होगा तो खराब फल करेगा।

राहु की दशा में पहले दो वर्ष का अन्तर मंगल का होगा 01-01-2009 से लेकर 31-12-2010 तक का होगा। मंगल और राहू अच्छे भाव में भ्रमण करेगा तो अच्छे फल करेगा नहीं तो खराब फल करेगा।

राहु की दशा में फिर दो वर्ष केतु के होंगे 01-01-2011 से लेकर 31-12-2012 तक का समय केतु का होगा अगर केतु और राहू शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो शुभ फल प्रदान करेगा अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा।

राहु की दशा में फिर दो वर्ष खुद राहु के होंगे 01-01-2013 से लेकर 31-12-20014 तक का समय होगा यदि राहु शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो शुभ फल प्रदान करेगा अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा।

राहु की दशा के बाद केतु की दशा आरम्भ होती है जो कि तीन वर्ष की है 01६-01-2015 में लेकर 31-12-2017 तक की होगी केतु शुभ भाव में भ्रमण करेगा तब शुभ फल करेगा। सबसे पतले केतु की दशा में शनि की अन्तर दशा होगी जो कि 01-01-2015 से लेकर 31-12-2015 तक की होगी। अगर शनि केतु शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे।

फिर केतु में राहु के अन्तर दशा आरम्भ होगा जो कि एक वर्ष की होगी 01-01-2016 से लेकर 31-12-2016 तक होगी केतु और राहु शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे। अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा।

केतु दशा में केतु का अन्तर दशा भी एक वर्ष की होगी 01-01-2017 से लेकर 31-12-2017 तक होगी इस समय केतु शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो शुभ फल प्रदान करेगा अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा।

केतु के बाद बृहस्पति की दशा आरम्भ होगी जो कि 6 वर्ष की होगी 01-01-2018 से लेकर 31-12-2023 तक की होगी यदि बृहस्पति कुण्डली के शुभ भाव में बैठा हो और दशा

काल में शुभ भाव में भ्रमण करे तो बहुत ही शुभ फल करेगा। अगर कुण्डली में तो शुभ भाव में है लेकिन भ्रमण खराब भाव में कर रहा है तो मिश्रित फल प्रदान करेगा ऐसे ही अगर बृहस्पति कुण्डली के खराब भाव में भ्रमण कर रहा हो तो बहुत खराब फल करेगा। अगर खराब भाव में बैठा हो और शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो मिश्रित फल प्रदान करेगा।

सबसे पहले बृहस्पति में केतु की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि दो वर्ष की होगी 01-01-218 से लेकर 31-12-2019 तक बृहस्पति और केतु अगर शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे।

केतु के बाद बृहस्पति में बृहस्पति की अन्तर दशा शुरू होगी जो कि वर्ष की होगी 01-01-2020 लेकर 31-12-2021 तक होगी। अगर बृहस्पति शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो शुभ फल प्रदान करेगा अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा।

सबसे बाद में बृहस्पति में सूर्य की अन्तर दशा आरम्भ होगी ये भी दो वर्ष की होगी। 01-01-2022 से लेकर 31-12-2023 तक का समय होगा। बृहस्पति और सूर्य शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे।

बृहस्पति की दशा के बाद सूर्य की दशा आयेगी जो कि दो वर्ष की होगी 01-01-2024 से लेकर 31-12-2025 तक होगी अगर सूर्य कुण्डली में शुभ भाव में बैठा है और भ्रमण भी शुभ भाव में कर रहा है तो बहुत अधिक शुभ फल प्रदान करेगा अगर शुभ भाव में बैठा है लेकिन भ्रमण खराब भाव में कर रहा तो मिश्रित फल प्रदान करेगा। यदि कुण्डली में खराब भाव में बैठा है और खराब भाव में भ्रमण कर रहा है तो अधिक अशुभ फल प्रदान करेगा और कुण्डली में अशुभ भाव में बैठा है और भ्रमण शुभ भाव में कर रहा है तो मिश्रित फल प्रदान करेगा।

सबसे पहले सूर्य की दशा में सूर्य को अन्तर दशा शुरू होगी जो कि 8 माह की होगी 01-01-24 में लेकर 31-08-2025 तक होगी सूर्य शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो शुभ फल प्रदान

करेगा अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा। सूर्य के अन्तर दशा के बाद सूर्य में चन्द्र की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि 8 माह की होगी 01-09-2024 से लेकर 30-4-25 तक होगी यदि सूर्य और चन्द्र शुभ भाव में भ्रमण कर रहे होंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे।

फिर सूर्य की दशा में मंगल की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि 8 माह की होगी 01-5-2025 से लेकर 31-12-2025 तक का समय होगा अगर सूर्य और मंगल शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे। यदि शुभ भाव में हों और भ्रमण अशुभ भाव में हों तो मिश्रित फल प्रदान करेंगें।

सूर्य की दशा के बाद चन्द्र की दशा आरम्भ होगी जो कि एक वर्ष की होगी। 01-01-26 से लेकर 31-12-2026 तक होगी। चन्द्र ग्रह अगर कुण्डली में शुभ भाव में बैठा है और भ्रमण भी शुभ भाव में कर रहा हो तो अधिक शुभ फल प्रदान करेगा। अगर बैठा शुभ भाव में हो और भ्रमण अशुभ भाव में कर रहा हो तो मिश्रित फल प्रदान करेगा। चन्द्र यदि अशुभ भाव में बैठा हो और अशुभ भाव में भ्रमण कर रहा हो तो बहुत अधिक अशुभ फल प्रदान करेगा और चन्द्र ग्रह अगर कुण्डली में अशुभ भाव में बैठा हो और भ्रमण शुभ भाव में करे तो मिश्रित फल प्रदान करेगा।

सबसे पहले चन्द्र ग्रह की दशा में बृहस्पति ग्रह की अन्तर दशा होगी जो कि चार माह की होगी 01-01-2026 से लेकर 30-04-2026 तक होगी। अगर चन्द्र ग्रह और बृहस्पति ग्रह शुभ भाव में हों तो शुभ फल प्रदान करेंगे अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे। यदि शुभ भाव में हों तो और अशुभ भाव में भ्रमण करें तो मिश्रित फल करेंगे। यदि अशुभ भाव में हों और शुभ भाव में भ्रमण करें तो भी मिश्रित फल करेंगें।

फिर चन्द्र ग्रह की दशा में सूर्य ग्रह की अन्तर दशा होगी जो कि चार माह की होगी 01-05-2027 से लेकर 31-08-2026 तक होगी। अगर चन्द्र ग्रह और सूर्य ग्रह शुभ भाव में भ्रमण कर

रहा होगा तो शुभ फल प्रदान करेगा अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा। सबसे बाद में चन्द्र ग्रह की दशा में चन्द्र ग्रह की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि चार माह की होगी 01-9-2026 से लेकर 31-12-2026 तक का होगा। अगर चन्द्र शुभ भाव में भ्रमण कर रहा होगा तो शुभ फल प्रदान करेगा। अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा।

चन्द्र की दशा के बाद शुक्र की दशा आरम्भ होगी जो कि 3 वर्ष की होती है जो कि 01-01-2027 से लेकर 31-12-2029 तक होगी। शुक्र ग्रह अगर कुण्डली में शुभ भाव में होगा और दशा काल में शुभ भाव में भ्रमण कर रहा हो तो अधिक शुभ फल प्रदान करेगा। लेकिन कुण्डली में शुभ भाव में बैठा हो और भ्रमण अशुभ भाव में कर रहा हो तो मिश्रित फल प्रदान करेगा यदि शुक्र ग्रह कुण्डली में अशुभ भाव में बैठा होगा और अशुभ भाव में भ्रमण कर रहा हो तो अधिक अशुभ फल प्रदान करेगा और शुभ भाव में भ्रमण कर रहा होगा तो मिश्रित फल प्रदान करेगा। पहले शुक्र दशा में मगंल ग्रह की अन्तर दशा होगी जो कि एक वर्ष की होगी 01-01-27 से लेकर 31-12-27 तक होगी अगर शुक्र ग्रह और मंगल ग्रह शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे।

फिर शुक्र दशा में शुक्र का ही अन्तर दशा होगी जो कि एक वर्ष की होगी 01-01-28 से लेकर 31-12-21 तक होगी। अगर शुक्र ग्रह शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो शुभ फल प्रदान करेगा। अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेगा।

शुक्र ग्रह की दशा में बुध ग्रह की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि एक वर्ष की होगी। 01-01-29 से लेकर 31-12-29 तक होगी। अगर शुक्र ग्रह शुभ भाव में भ्रमण कर रहा होगा तो शुभ फल प्रदान करेगा नहीं तो अशुभ फल प्रदान करेगा।

शुक्र ग्रह के पश्चात मंगल ग्रह की दशा आरम्भ होगी जो कि 6 वर्ष की होगी। जो 01-01-2032 से लेकर 31-12-2035 तक होगी यदि मंगल ग्रह कुण्डली में शुभ भाव में बैठा होगा और शुभ भाव भ्रमण कर रहा होगा तो बहुत अधिक शुभ फल प्रदान

करेगा। यदि शुभ भाव में बैठा हो और अशुभ भाव में भ्रमण करे तो मिश्रित फल प्रदान करेगा और मंगल ग्रह कुण्डली में अशुभ भाव में बैठा हो अशुभ भाव में भ्रमण करे तो अधिक अशुभ फल प्रदान करेगा अशुभ बैठा हो और शुभ भाव के भ्रमण करेगा तो भी मिश्रित फल प्रदान करेगा।

पहले मंगल ग्रह की दशा में मंगल ग्रह की अन्तर दशा होगी जो कि 2 वर्ष की होगी। 01-01-32 से लेकर 31-12-33 तक होगी मंगल शुभ भाव में भ्रमण करेगा तो शुभ फल प्रदान करेगा नहीं तो अशुभ फल प्रदान करेगा।

अब मंगल ग्रह दशा में शनि ग्रह की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि 2 वर्ष की होगी 01-01-33 से लेकर 31-12-34 तक होगी। अगर मंगल शनि ग्रह शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेंगे। अन्यथा अशुभ फल प्रदान करेंगे। शनि दशा के अन्तर के पश्चात शुक्र ग्रह की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि दो वर्ष की होगी। 31-01-35 से लेकर 31-12-35 तक होगी। अगर मंगल शुक्र ग्रह शुभ भाव में भ्रमण करेंगे। तो शुभ फल प्रदान करेंगे नहीं तो अशुभ फल प्रदान करेंगे।

मंगल ग्रह दशा के पश्चात बुध ग्रह की दशा आरम्भ होगी जो कि दो वर्ष की होगी जो कि 01-01-36 से लेकर 31-12-37 तक होगी यदि बुध ग्रह कुण्डली के शुभ भाव में बैठा हो और शुभ भाव में भ्रमण करे तो अधिक शुभ फल देगा। अगर शुभ भाव में बैठा हो और अशुभ भाव में भ्रमण करे तो मिश्रित फल देगा। ऐसे हो यदि अशुभ भाव में बैठा हो और अशुभ भाव में भ्रमण करे तो अशुभ फल प्रदान करेगा और अशुभ भाव में बैठा हो शुभ भाव में भ्रमण करे तो भी मिश्रित फल प्रदान करेगा।

पहले बुध ग्रह की दशा में चन्द्र ग्रह की अन्तर दशा होगी जो कि 01-01-36 से लेकर 01-09-36 तक होगी। अगर बुध और चन्द्र शुभ भाव में भ्रमण कर रहे हैं तो शुभ फल प्रदान करेंगे नहीं तो अशुभ फल प्रदान करेंगे। उसके पश्चात बुध ग्रह दशा में मंगल ग्रह की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि 8 माह की होगी। 01-09-36 से लेकर 01-05-37 तक होगी। बुध मंगल ग्रह

शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल प्रदान करेगा नहीं तो अशुभ फल प्रदान करेंगे। फिर बुध में गुरु ग्रह की अन्तर दशा आरम्भ होगी जो कि 01-5-37 से लेकर 31-12-37 तक 8 माह का सफर तय करेगी। अगर बुध गुरु ग्रह शुभ भाव में भ्रमण करेंगे तो शुभ फल देंगे अन्यथा अशुभ फल देंगे। यहाँ पर 35 वर्ष का एक चक्र समाप्त हो जायेगा। उसके बाद फिर से दूसरा चक्र शुरु होगा शनि ग्रह से लेकर बुध ग्रह तक।

जो ग्रह किसी भाव में अशुभ है और वर्षफल में जिस भी भाव में भ्रमण करेंगे उस भाव से सम्बन्धित फल करेंगे। भ्रमण वाला भाव अगर उस ग्रह के लिए शुभ होगा तो शुभ फल प्रदान करेंगे और अशुभ होगा तो अशुभ फल प्रदान करेगा जैसे कि कोई ग्रह कुण्डली के बारहवें भाव में अशुभ बैठा है और वर्षफल में दूसरे भाव में भ्रमण करता है। उसके ग्रह के लिए दूसरा भाव शुभ है तो कुछ शुभ फल करेगा। लेकिन उस ग्रह के लिए दूसरा भाव भी अशुभ होगा। तो दूसरे भाव सम्बन्धित अशुभ फल प्रदान करेगा। जैसा कि धन हानि, कुटुम्ब में परेशानी होना। जैसे कि ऊपर ग्रह भ्रमण लिखा गया है। उसका मतलब है लाल किताब के वर्षफल फलचार्ट के अनुसार जिस भाव में बैठ गए हैं। लाल किताब का वर्षफल चार्ट किताब के आखिर में दिया गया है।

ऊँच नीच ग्रह

कोई भी ग्रह जिस राशि में उच्च का होता है वो ही ग्रह उस राशि से सातवीं राशि में नीच का होगा जिस राशि में नीच का होता है उस राशि से सातवीं राशि में उच्च का होगा।

जैसे शनि मेष राशि में नीच का होता है और तुला में ऊंच का होता है। बृहस्पति वृष राशि में नीच का होता है और वृश्चिक राशि में उच्च का होता है सूर्य मिथुन राशि में नीच का होता है परन्तु धनु राशि में उच्च का होता है। मंगल कर्क राशि में नीच का होता है तो मकर राशि में उच्च का होता है। बुध सिंह राशि में नीच का होता है लेकिन कुम्भ राशि में उच्च का होता है। शुक्र कन्या राशि में नीच का होता है। तो मीन राशि में उच्च का होता

है। चंद्र वृष राशि में ऊँच का होता है तो वृश्चिक राशि में नीच का होता है।

ग्रहों की राशियाँ

बृहस्पति ग्रह की राशि धनु और मीन है।
सूर्य ग्रह की राशि सिंह है।
चन्द्रमा ग्रह की राशि कर्क है।
मंगल ग्रह की राशि मेष और वृश्चिक है।
बुध ग्रह की राशि मिथुन और कन्या है।
शुक्र ग्रह की राशि वृष और तुला है।
शनि ग्रह की राशि मकर और कुम्भ है।

राहु केतु ग्रह छाया ग्रह है इनकी अपनी कोई राशि नहीं होती। राहु केतु जिस राशि में भ्रमण कर रहें होते हैं उस राशि के ग्रह स्वामी का फल करते हैं।

नक्षत्र

प्रत्येक ग्रह के तीन-तीन नक्षत्र होते हैं-

1. अश्वनी नक्षत्र का स्वामी केतु ग्रह है।
2. भरनी नक्षत्र का स्वामी शुक्र ग्रह है।
3. कृतिक नक्षत्र का स्वामी सूर्य ग्रह है।
4. रोहिणी नक्षत्र का स्वामी चन्द्र ग्रह है।
5. मृगशिरा नक्षत्र का स्वामी मंगल ग्रह है।
6. आर्द्रा नक्षत्र का स्वामी राहु ग्रह है।
7. पुनर्वसु नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति ग्रह है।
8. पुष्य नक्षत्र का स्वामी शनि ग्रह है।
9. अश्लेष नक्षत्र का स्वामी बुध ग्रह है।
10. मद्या नक्षत्र का स्वामी केतु ग्रह है।
11. पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी शुक्र ग्रह है।
12. उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र का स्वामी सूर्य ग्रह है।
13. हस्त नक्षत्र का स्वामी चन्द्र ग्रह है।
14. चित्रा नक्षत्र का स्वामी मंगल ग्रह है।
15. स्वाति नक्षत्र का स्वामी राहु ग्रह है।

16. विशाखा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति ग्रह है।
17. अनुराधा नक्षत्र का स्वामी शनि ग्रह है।
18. ज्येष्ठा नक्षत्र का स्वामी बुध ग्रह है।
19. मूल नक्षत्र का स्वामी केतु ग्रह है।
20. पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र का स्वामी शुक्र ग्रह है।
21. उत्तराषाढ़ा नक्षत्र का स्वामी सूर्य ग्रह है।
22. श्रवण नक्षत्र का स्वामी चन्द्र ग्रह है।
23. द्यतिष्ठा नक्षत्र का स्वामी मंगल ग्रह है।
24. शर्ताभषा नक्षत्र का स्वामी राहु ग्रह है।
25. पूर्वाभाद्रपदा नक्षत्र का स्वामी बृहस्पति ग्रह है।
26. उत्तराभाद्रपदा नक्षत्र का स्वामी शनि ग्रह है।
27. रेवती नक्षत्र का स्वामी बुध ग्रह है।

ग्रहों के रोग

सूर्य - हड्डी रोग, दिल की बीमारी, ज्वर, पेट, आंखों संबंधी।
चन्द्र - फेफड़े संबंधी, कफ।
मंगल - खून संबंधी, खोपड़ी संबंधी, चोट लगना, अंग का कट जाना, अण्डकोष, बवासीर।
बुध - दिमागी, गले संबंधी, चेचक की बीमारी, चर्म रोग, आंत संबंधी, दांत संबंधी, ।
बृहस्पति- कमर संबंधी, पैर संबंधी, सांस संबंधी, शुगर।
शुक्र - पेशाब संबंधी, मुख संबंधी, गुर्दा (किड्नी), गुप्त-रोग।
शनि - टांगों संबंधी, उदर रोग, खांसी।
राहु - गैस संबंधी अचानक दुर्घटना।
केतु - दर्द संबंधी, जोड़ों का, पांव, टांगों संबंधी, हर्निया।

ग्रहों की वस्तुएं

सूर्य - गेहूं, गुड़, तांबे का पैसा, तेजफल, तेजपत्ता, बंदर, शिलाजीत, भूरी, कीड़ियां, भूरी भैंस, राज-दरबार, माणिक, तांबे जैसा रंग, गुलाबी वस्त्र और रथ।

चन्द्र - दूध, चावल, मां, दादी, नानी, घोड़ा, मोती, रेशमी कपड़े, तह जमीन और चांदी।

मंगल - पताशे, मिठाई, सोना, मूंगा, लाल मसूर की दाल, अखरोट, लाल गुलाब, गुड़ की रेवड़ी, लाल रंग, सैनिक, चीता। और मंगल बद- हिरण, ऊंठ।

बुध - मूंग साबुत की दाल, हरा रंग, हरा चारा, पन्ना, ढोलक, दांत, नाड़ी, तोता, भेड़, बकरी, चमगादड़, मेंढा, फिटकरी, बांस, पीली कोड़ियां, लसुड़े का वृक्ष, मटका और अण्डा।

बृहस्पति- चने की दाल, केसर, प्लेटिनियम, पीले वस्त्र, पीला रंग, पुखराज, हल्दी, केले, बेसन के लड्डु, मुर्गा, वृद्ध पुरोहित, सोना और बब्बर शेर।

शुक्र - चांदी, चावल, कपूर, दही, हीरा, दही रंग, जिमीकन्द, आलू, गाजर, सूती कपड़े, कांस्य का बर्त्तन, कपास, चमड़ी और खेती की भूमि।

शनि - काले माँ साबुत की दाल, तवा, चिमटा, सरसों का तेल, चमड़ा, काली छतरी, शराब, नीलम, काला रंग, बादाम, सूखा नारियल, सांप, मछली, मगरमच्छ, भैंस, तंत्र-मंत्र और कीकर।

राहु - जौं, पूजा वाला नारियल, धनिया साबुत, नीला रंग, सिक्का, कच्चा कोयला, गोमेद, हाथी, बिल्ली और सरसों।

केतु - दो रंग का कम्बल (काला सफेद), प्याज, लहसुन, इमली, काले-सफेद तिल, चारपाई लकड़ी की, लहसुनिया, सलेटी रंग, नींबू, कुत्ता और छिपकली।

ग्रहों संबंधी व्यवसाय

सूर्य - जिस व्यक्ति का सूर्य शुभ हों, वो चेयरमैन, (किसी संस्थान का) राष्ट्रपति, राज्यपाल, निर्देशक, नेता, किसी चीज़ का अविष्कार करने वाला, वैल्डर, कपड़े का व्यापारी, सोने का कारीगर और खोदने वाला।

चन्द्र - समुद्री जहाज का कैप्टन, बन्दरगाह पर काम करना, मछेरा, नर्स, वार्ड ब्वॉय, जनरल मर्चेन्ट, मनोवैज्ञानिक संबंधी, होम साइंटिस्ट, मानसिक रोग चिकित्सक और प्राकृतिक चिकित्सा।

मंगल - पुलिस, सेना, मेकेनिकल, कैमिस्ट, नाई, लौहार, राजमिस्त्री, खिलाड़ी, मशीन चलाने वाला और इंजीनियर।

बुध - पोस्ट-मास्टर, व्यापारी, प्रकाशक, एडीटर, परिवहन, स्पीकर(भाषण देने वाला) और मशीन-मिस्त्री(फिटर)।

बृहस्पति- गुरू, प्राध्यापक, पुजारी, पादरी, जज, वैज्ञानिक, लेखक, ऑयल मर्चेन्ट, चर्बी मर्चेन्ट और शुगर मर्चेन्ट।

शुक्र - कवि, स्टेज एक्टर, गायक, डांसर, निर्देशक, पशुओं का डॉक्टर, ज्योतिष आचार्य, ऑटोमोबोइल इंजीनियर, बस, रेलवे चालक, किसान और लक्जूरिअस वस्तु।

शनि - नेता, भिखारी, वकील, मंत्री, नौकर, पायलेट, अंतरिक्ष वैज्ञानिक और इलैक्ट्रोनिक इंजीनियर।

ग्रहों की दृष्टियां

सूर्य - अपने से सातवें घर को देखता है।
चन्द्र - अपने से सातवें घर को देखता है।
मंगल - अपने से चौथे, सातवें और आठवें घर को देखता है।
बुध - अपने से सातवें घर को देखता है।
बृहस्पति- अपने से पांचवे, सातवें और नौवें घर को देखता है।
शुक्र - अपने से सातवें घर को देखता है।
शनि - तीसरे, सातवें और दसवें घर को देखता है।

भाव संबंधी व्यवसाय, शिक्षा, शारीरिक अंग (वस्तुएं)

पहला भाव - वैसे तो सब भावों का महत्व है परन्तु पहला भाव बहुत महत्वपूर्ण है। सदाचार, शौर्य, साहस, स्वास्थ्य, आयु, सामाजिक स्थिति, चरित्र, आत्मा, खिलाड़ी, खोपड़ी, और शारीरिक रंग-रूप और बनावट।

दूसरा भाव - धन, ज्वैलरी, मुंह, बाईं आंख, नैन-नक्श, प्रेम कला, अभिनय, खजांची, कम्प्युटर साइंस, सभी प्रकार की धातु, बिरादरी लेखाकार और गणित।

तीसरा भाव - लेखक, पेंटर, पराक्रम, छोटी यात्रा, छोटे भाई-बहिन, गला, बाजू, गायक, खूनी, पुलिसमैन, सेना में नौकरी, कलाकार, फैक्टरी, और फिजक्स।

चौथा भाव - 2भावों में से चौथा भाव बहुत महत्वपूर्ण है। मातृभूमि, मातृ भाषा, जयदाद, कार, सुख-शांति, मनोरंजन, पशु-पक्षी, खेती- बाड़ी, दूध, पोल्टरी-फॉर्म, होटल, टिम्बर, बिल्डिंग का सामान, सूचना-प्रसार, छाती फेफड़े, होम साइंस, मनोविज्ञान, सामाजिक विज्ञान, वनस्पति, सिविल एवं ऑटो इंजिनियर, प्राणि विज्ञान, भूगोल विद्या और परिवहन व्यापार।

पांचवां भाव - यह भी बहुत महत्वपूर्ण भाव है। इस भाव से हम अध्ययन करेंगे- शिक्षा, ज्ञान, बच्चे और मस्तिष्क, प्रेम संबंधी, लॉटरी, दूरदर्शी, पेट, प्रिंसिपल, शिक्षा संस्थान में काम करने वाले, जर्नलिस्ट, एडवरटाइज़मेंट, और संचार।

छठा भाव - रोग, झगड़ा, पाचन-शक्ति, कैमिकल, शत्रु, नौकर, शरीर में दर्द, पेट का निचला हिस्सा, लिवर, आंतें, कैमिस्ट्री, बायलोजी, मेडिकल साइंस, वकालत, डॉक्टर, कमपाउंडर, नर्स, वकील, जज, कोर्ट में काम करने वाले, सेनेट्री, चमड़ा, रबड़, प्लास्टिक, तेल, चर्बी, दवाइयां। इस भाव से कर्जा भी देखा जाता है।

सातवां भाव - पति या पत्नी, शादीशुदाजीवन, चरित्र, सम्भोग, निजी व्यापार, मित्र, जीवन-साथी, गुर्दा, गुप्त अंग, शुगर और बिजनेस मैनेजमेन्ट।

आठ्वां भाव - आठवें भाव से अध्ययन करेंगे मृत्यु के कारण, उम्र, मृत्योपरांत यश, इतिहास, प्राचीन विद्या, अण्डकोष, ज्योतिष, पुरातत्व और भू-वर्ग शास्त्र।

नौवां भाव - किस्मत, धर्म में विश्वास, धार्मिक शिक्षा, पादरी, पुजारी, कूल्हा, और कमर।

दसवां भाव - पिता, रुतबा, सरकारी, कामकाज, नेता, शासन करना, तत्व-ज्ञानी, राजनीतिक-शास्त्र और घुटना।

ग्यारहवां भाव - लाभ, आय और बड़े भाई-बहिन, कॉमर्स, टांग (घुटने से नीचे, पैर से ऊपर)।

बारहवां भाव - नुकसान, खर्चे, बुरी, आदतें, दूर की यात्रा, विदेश यात्रा, चोरी, मेहमान, पूंजी विनियोग, पैर, और विदेशी भाषा।

ग्रहों के स्वभाव

क्रूर ग्रह- सूर्य, मंगल, शनि, राहु, केतु।

सौम्य ग्रह- चन्द्र, बुध, शुक्र, बृहस्पति।

लाल किताब दशा

शनि 6 वर्ष	राहू 6 वर्ष	केतू 3 वर्ष
01-01-2003	01-01-2009	01-01-2015
01-01-2009	01-01-2015	01-01-2018
राहू 01-01-2005	मंगल 01-01-2011	शनि 01-01-2016
बुध 01-01-2007	केतू 01-01-2013	राहू 01-01-2017
शनि 01-01-2009	राहू 01-01-2015	केतू 01-01-2018

गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष
01-01-2018	01-01-2024	01-01-2026
01-01-2024	01-01-2026	01-01-2027
केतू 01-01-2020	सूर्य 01-09-2024	गुरू 01-05-2026
गुरू 01-01-2022	चन्द्र 01-05-2025	सूर्य 01-09-2026
सूर्य 01-01-2024	मंगल 01-01-2026	चन्द्र 01-01-2027

शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष
01-01-2027	01-01-2030	01-01-2036
01-01-2030	01-01-2036	01-01-2038
मंगल 01-01-2028	मंगल 01-01-2032	चन्द्र 01-09-2036
शुक्र 01-01-2029	शनि 01-01-2034	मंगल 01-05-2037
बुध 01-01-2030	शुक्र 01-01-2036	गुरू 01-01-2038

शनि 6 वर्ष	राहू 6 वर्ष	केतू 3 वर्ष
01-01-2038	01-01-2044	01-01-2050
01-01-2044	01-01-2050	01-01-2053
राहू 01-01-2044	मंगल 01-01-2046	शनि 01-01-2050
बुध 01-01-2042	केतू 01-01-2048	राहू 01-01-2052
शनि 01-01-2044	राहू 01-01-2050	केतू 01-01-2053

गुरु 6 वर्ष	सूर्य 2 वर्ष	चन्द्र 1 वर्ष
01-01-2053	01-01-2059	01-01-2061
01-01-2059	01-01-2061	01-01-2062
गुरू 01-01-2055	सूर्य 01-09-2059	गुरू 01-05-2061
केतू 01-01-2057	चन्द्र 01-05-2060	सूर्य 01-09-2061
सूर्य 01-01-2059	मंगल 01-01-2061	चन्द्र 01-01-2062

शुक्र 3 वर्ष	मंगल 6 वर्ष	बुध 2 वर्ष
01-012062	01-01-2065	01-01-2071
01-01-2065	01-01-2071	01-01-2073
मंगल 01-01-2063	मंगल 01-01-2067	चन्द्र 01-09-2071
शुक्र 01-01-2064	शनि 01-01-2069	मंगल 01-05-2072
बुध 01-01-2065	शुक्र 01-01-2071	गुरू 01-01-2073

फलादेश करने की विधि

कुण्डली देखने के लिए अत्यन्त आवश्यक है। कुण्डली देखने वाले को इस बात का ज्ञान होना कि कौन सा ग्रह नीच का है या उच्च का है और हर भाव के बारे में कि कौन से भाव से आपके शरीर का अंग या जीवन की जरूरी वस्तुएं आती हैं और ग्रहों और भावों से कौन सा कौन सा रिश्तेदार सम्बन्धित का ज्ञान होना आवश्यक है। अगर ये ज्ञान नहीं होगा तो कुण्डली देखना बेकार साबित होगा। एक अच्छी लाल किताब का ज्ञानी आपकी कुण्डली के बिना भी आपके भूतकाल और भविष्य काल के बारे में बता सकता है। आपके शरीर के अंगों को देख कर और आपके रिश्तेदारों सम्बन्धियों के बारे में पूछ कर। लाल किताब की कुण्डली में लग्न मेष ही होता है। चाहे कोई भी लग्न हो अगर कन्या लग्न हो तो भी 6 न0 को हटा कर 1 न0 का लिख दिया जाता है। ये सिद्धांत वैदिक ज्योतिष के एकदम उल्टा हैं। दूसरे कुण्डली पढ़ने वाले का ध्यान राशि के बजाय भावों पर जायेगा। लाल किताब में राशि की जगह भावों को अधिक महत्व दिया गया है। इसका ये मतलब नहीं है कि राशियों का स्थान नही है। जैसे कि कई ज्योतिष विद्वान आपकी काल पुरूष कुण्डली बना लेते हैं। तभी फलादेश करते हैं। काल पुरुष कुण्डली का मतलब ही है कि भावों को भी ध्यान में रखना है।

इन ज्योतिष विद्वानों को चाहे लाल किताब का ज्ञान हो या न हो तब भी ये काल पुरूष कुण्डली अवश्य बनाते हैं। इसे चाहे आप लाल किताब के कुण्डली कहें या काल पुरुष कुण्डली कहें दोनो ही एक ही है। जब तक आप राशि भावों और ग्रह को एक साथ

नही समझेंगे तब तक आप का फलादेश सटीक नहीं बैठेगा। लाल किताब में भी जिक्र आता है कि फला ग्रह नीच राशि में बैठा है या उच्च राशि में विराजमान है। इसलिए राशि और भावों को समझ कर फलादेश करना चाहिये। जैसे कि लाल किताब में जिक्र है साथी ग्रह का। जैसे कि सूर्य मकर राशि में दसवें घर में बैठा हो और शनि पाँचवें घर में सिंह राशि में हो तो साथी ग्रह कहलायेंगे। दोनो ग्रह एक-दूसरे के घर में और राशि में बैठे हैं। अब ये दोनों ग्रह आपस में दुश्मनी नहीं करेंगे। क्योंकि अब दोनो ग्रह एक-दूसरे के किरायेदार होंगे।

जन्म कुण्डली 07-9-1973
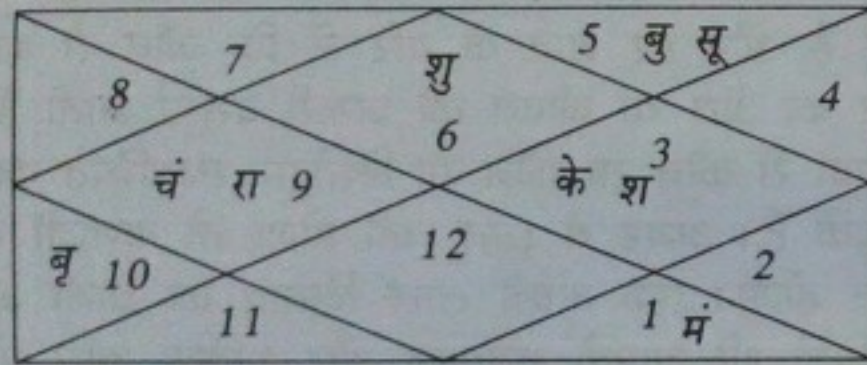
लाल किताब और काल पुरूष कुण्डली
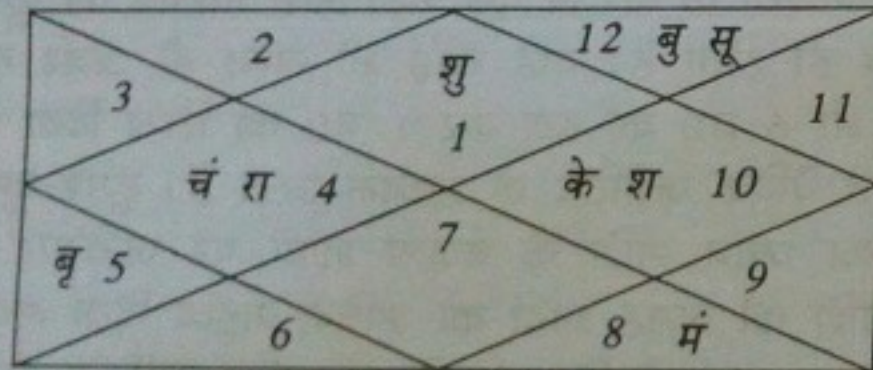
अब कुण्डली को बारीक गहराई से अध्ययन करेंगे। चन्द्र काल पुरूष कुण्डली या लाल किताब कुण्डली के अनुसार अपने घर में और मित्र राशि धनु में उच्च का है। ऐसे ही शनि भी अपने घर में और उच्च राशि मिथुन में स्थित है। लेकिन शनि की सप्तम दृष्टि चन्द्र पर पड़ रही है। जिसके कारण चन्द्र अशुभ हो रहा है। इस कुण्डली वाले जातक को चन्द्र के उच्च के कारण छोटी उम्र में सारे सुख चौथे भाव के मिले पर शनि की दृष्टि के कारण वर्ष 2004 में डेढ करोड़ का नुकसान हो गया। क्योंकि धनु राशि का

स्वामी गुरु भी नीच राशि मकर में स्थित है इसलिए चन्द्र को कोई सहायता नहीं मिल रही है। राहु धनु राशि में चौथे घर में स्थित है। चौथे घर का स्वामी गुरु नीच राशि में है इसलिए राहु भी नीच का हो जायेगा। राहु केतु छाया ग्रह है इसलिए जिस राशि में स्थित होंगे उस राशि का स्वामी नीच होगा तो राहु केतु नीच फल करेंगे। अगर उच्च का होगा तो उच्च का फल करेंगे।

31वें वर्ष की वर्षफल कुण्डली
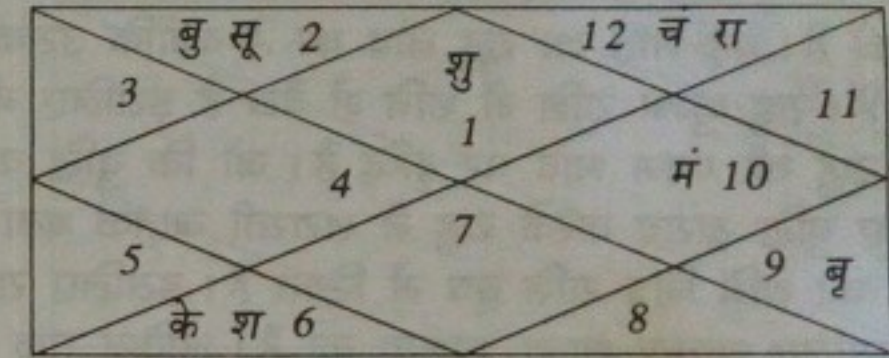
वर्षफल कुण्डली का बारीकी से अध्ययन किया जाये तो उसके सारे भेद खोल देती है। लाल किताब में भाव के साथ-साथ राशियों का भी महत्व है। अगर राशियों का महत्व न होता तो एक ही ग्रह एक ही भाव में शुभ और अशुभ फल कैसे कर सकता है। इसलिए कोई भी कुण्डली का अध्ययन करते वक्त राशियों का भी अध्ययन करना आवश्यक होता है। जातक को वर्ष कुण्डली पर नज़र डालें तो वो भी अच्छी नहीं है। 12वें भाव के ग्रह दूसरे भाव में आकर धन हानि कर रहे हैं। चौथे भाव के ग्रह 12वें भी शुभ नहीं है। अष्टम भाव का मंगल दशम भाव में व्यापार को हानि कर रहा है। 32वें वर्ष और 33वें वर्ष में मंगल में शुक्र की दशा होगी। शुक्र कन्या राशि में नीच का है। इसलिए जातक को 32वें और 33वें वर्ष हानि उठानी पड़ी।

उदाहरण अक्टूबर 1970 कुण्डली -
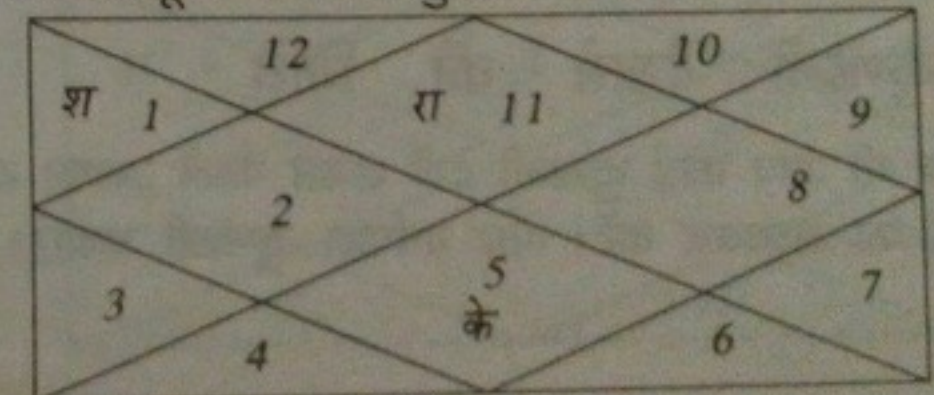
मार्च 1972 कुण्डली -

ऊपर दो कुण्डली दी गई हैं जो कि एक ही परिवार के दो भाईयों की हैं। बड़े भाई का राहु नीच का है क्योंकि उसका शनि नीच का है। राहु कुम्भ राशि में शनि में बैठा है इसलिए नीच का है। नीच राहु की पंचम भाव पर दृष्टि है। जो कि बुद्धि का भाव है इसलिए बुद्धि खराब करके राहु ने शरारती जातक बना दिया। छोटे भाई का शनि मित्र राशि वृष में स्थित है। इसलिए राहु उच्च का है। इसलिए जातक शान्त स्वभाव का है। लेकिन एक चालक व्यापारी है। छोटे भाई में राहु को चालाकी और समझदारी कूट-कूट कर भरी हुई है। बड़े भाई में राहु की अपराधी प्रवृत्ति कूट-कूट कर भरी हुई है।

लाल किताब एक अदभुत् एवं निराली किताब है। लाल किताब को अच्छे से समझना इतना आसान नहीं जितना आम लोग समझते हैं। लाल किताब को समझने के लिए बहुत ही बारीकी से अध्ययन करना पड़ता है। लाल किताब के नियमों से किसी कुण्डली का बारीकी से अध्ययन किया जाए तो उसके सारे भेद खोल देती है। लाल किताब के भाव के साथ-साथ राशियों का भी महत्व है। अगर राशियों का महत्व न होता तो एक ही ग्रह एक ही भाव में शुभ और अशुभ कैसे कर सकता है। इसलिए कोई भी कुण्डली का अध्ययन करते समय राशियों का भी अध्ययन करना आवश्यक होता है।

जन्मकुण्डली देखने की विधि

जब भी आप कोई कुण्डली देखें सबसे पहले उसका ग्रहों और राशियों का अध्ययन करें। फिर वर्षफल कुण्डली बनाएं।

नवम्बर 1978 की कुण्डली

लाल किताब 26वें वर्ष की कुण्डली

इस जातक की जन्मकुण्डली में शनि सप्तम भाव में नीच राशि में बैठा है। जिसके कारण उसकी शादी में परेशानियां आनी चाहिए। क्योंकि सप्तम भाव शादी का घर है। इस जातक की दो या चार जून में शादी तय हुई (26वें साल) और शदी टूट गई। रूपये 6 लाख का नुकसान हुआ। वर्ष कुण्डली के हिसाब से चौथे भाव का चन्द्र आठवें भाव में चला गया जो हानिकारक है और नौवें भाव के शुक्र, सूर्य बारहवें भाव में चले गये जो खर्चे का भाव है। जो शनि नीच का बैठा है। धन भाव में चला गया। तो धन का नुकसान कर रहा है। शुक्र की महादशा चल रही है। शुक्र में शुक्र की दशा थी। जब इनकी शादी टूटी। शुक्र भी जन्म कुण्डली में नौवें भाव में सूर्य के साथ पीड़ित है। इसलिए शुक्र की दशा भी जातक के लिए अच्छी नहीं थी।

जन्म कुण्डली जुलाई 1950

54वें वर्ष की कुण्डली

श 3, 2, 12 रा, 11, 1, 4, बृ 10, सू बु 5, 7 चं, 9 मं के, 6, 8 शु

जातक का दसवें भाव में मीन राशि स्थित है। जिसमें राहु बैठा है और मीन राशि का स्वामी बृहस्पति नौवें भाव में कुम्भ राशि में स्थित है। बृहस्पति के लिए कुम्भ राशि शुभ नहीं होती है। साथ ही नीच शनि बृहस्पति को देख रहा है। मंगल भी दसवें भाव को नीच दृष्टि से देख रहा है। इसलिए दसवें भाव के नुकसान होंगे। दसवें भाव से राज-दरबार, सरकारी, हिसाब-किताब देखा जाता है।

2004 अप्रैल में किसी गबन के कारण जातक को जेल जाना पड़ा। ये जातक का 54वां साल था। काल पुरुष (लाल किताब) कुण्डली से दसवें घर का मालिक शनि सिंह राशि में नीच का बैठा है। दसवां घर बहुत ज़्यादा पीड़ित होने के कारण जातक की जमानत समय पूरा होने पर हुई। 54वें वर्ष में जातक का बृहस्पति दसवें भाव में आया था, जो नीच का है। दसवें भाव का राहु बारहवें भाव में (खर्चे, हानि के घर) चला गया जो ठीक नहीं है, जिसने खूब खर्चा करवाया।

55वें वर्ष की कुण्डली

3, चं 2, 12 शु, श 11, 1, रा 4, 10, 5, 7, 9, बृ 6, बु सू, 8 के मं

जातक की जमानत 55वें वर्ष शुरू होने पर हुई। 55वें वर्ष की कुण्डली देखेंगे तो शनि अपने 11वें भाव में ऊंच का आ गया। चन्द्र दूसरे भाव में ऊंच का है और शुक्र 12वें भाव में ऊंच

का है। राहु भी चौथे भाव में शांत बैठा है, क्योंकि चन्द्र के भाव में कोई भी ग्रह ज्यादा परेशान नही करता है। बृहस्पति भी छठे स्थान में ईश्वरीय सहायता प्रदान कर रहा है। इसलिए जातक की जमानत हो गई। महादशा पर भी ध्यान दिया जाये। गुरू की महादशा थी। गुरू कुंभ राशि में ठीक नहीं बैठा है, शनि से पीड़ित है। गुरू की दशा में जातक को ये सब मुसीबतें झेलनी पड़ी। जैसे ही गुरू में सूर्य की दशा शुरू हुई। सूर्य लग्न में (जन्म कुण्डली में) शुभ बैठा हुआ है।

जनवरी 1956 की कुण्डली

बु शु 10, सू 9, रा श 8, 7 मं, 6, 11, 5 चं बृ, 12, 2 के, 4, 1, 3

ये कुण्डली वाला लेखक के पास 1999 में आया था। इससे पूछा गया कि पूजा पाठ करते हो तो इसने बताया कि बहुत अधिक पूजा पाठ करता है। और घर में मन्दिर बना रखा है लेकिन मन विचलित रहता है। पूजा में ध्यान नहीं लगता। कभी दिल करता है। सब कुछ छोड़ दूँ। और कभी दिल करता है कि पूजा पाठ करता रहूँ। लेखक ने कहा कि घर से मन्दिर हटा दे केवल मन्दिर में ही जाया करे। क्योकि नौवां भाव जो कि घरों का भाव है उसका स्वामी चन्द्र दसवें भाव में शुभ है और राशि भी शुभ ही है। लेकिन शनि महाराज जी दसवीं दृष्टि के कारण चन्द्र अशुभ हो रहा है। इसलिए जातक का कभी दिल करता है कि पूजा पाठ करूँ, कभी नहीं करता। बेमन से पूजा पाठ करना भी तो शोभा नहीं देता।

जातक ने लेखक के कहने पर मन्दिर घर से हटा दिया। और मन्दिर में ही केवल जाता है। तब से जातक बहुत प्रसन्न है और खुशहाल है तीन चार वर्ष में ही जातक ने नया मकान और नई कार ले ली।

जन्म कुण्डली जनवरी 1955

लाल किताब कुण्डली

ऊपर दी गई कुण्डली एक बहुत बड़े व्यापारी की है। जातक की कुण्डली में शुक्र लग्न ऊंच भाव और ऊंच राशि में बैठा है। बृहस्पति नौवें अपने भाव में कर्क की ऊंच राशि में बैठा है। मंगल पांचवें भाव में शुभ बैठा है। लेकिन नीच राशि में है। राहु दूसरे भाव में मंदा है। केतु अष्टम भाव में नीच का है। शनि दूसरे भाव को नीच दृष्टि से खराब कर रहा है और दसवीं दृष्टि से बृहस्पति को भी खराब कर रहा है। कुण्डली वाला जातक लेखक के पास सन् 1999 में आया। लेखक ने कुण्डली का अध्ययन करने के बाद बताया कि आपको पैसे का काफी नुकसान होगा। तब जातक ने लेखक की बात नहीं मानी।

सन् 2004 में इस जातक से दोबारा मुलाकात हुई। तब ये व्यापार में एकदम शून्य हो गया। क्योंकि राहु की महादशा में केतु की महादशा थी। केतु अष्टम भाव में शुभ नहीं है। लाल किताब के अनुसार राहु में राहु की दशा थी, राहु भी शुभ नहीं है। इसलिए जातक को नुकसान उठाना पड़ा। कुण्डली वाला जातक बहुत अधिक धार्मिक है रोजाना मन्दिर जाता है दूसरा भाव खाली होने के कारण मन्दिर में जाना रास नहीं आया।

45वें वर्ष की कुण्डली

46वें वर्ष की कुण्डली

47वें वर्ष की कुण्डली

45, 46, 47वें वर्ष की कुण्डली यदि अध्ययन करें तो ग्रह इतने अच्छे नही बैठे हैं।

जन्म कुण्डली फरवरी 1979

लाल किताब कुण्डली
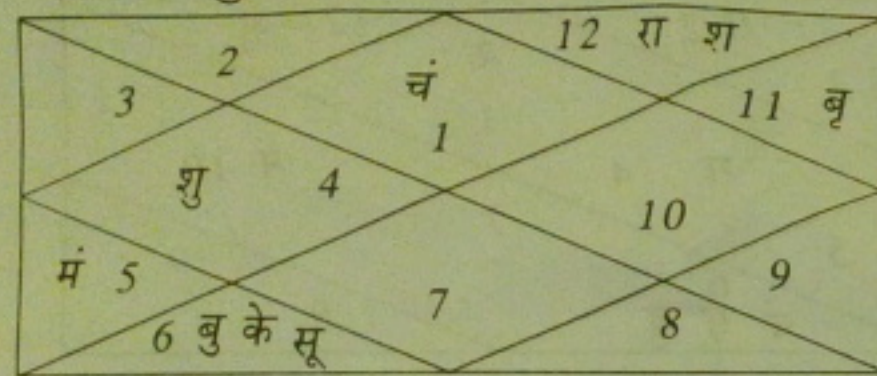
चन्द्र लग्न में शुभ है। शुक्र चौथे भाव में शुभ है। मंगल पंचम भाव में शुभ बैठा है। बुध छठे भाव में शुभ बैठा है। शनि बारहवें भाव में ठीक बैठा है। बृहस्पति भी ग्यारहवें भाव में शुभ राशि में बैठा है और ग्यारहवां भाव बृहस्पति का पक्का भाव है।

कुण्डली का बारीकी से अध्ययन करें तो देखने में आया की सप्तम भाव का स्वामी बृहस्पति शुभ राशि में बैठा है और उसकी अपनी राशि सप्तम भाव पर दृष्टि है और शुक्र भी चौथे घर में ठीक स्थिति में है। लेकिन फिर भी जातक का तलाक हो गया है। केवल तीन माह ही पत्नी के साथ रहा। तलाक का कारण तलाशें तो पायेंगे कि मंगल, बृहस्पति को नीच दृष्टि से देख रहा है और बृहस्पति भी मंगल को नीच दृष्टि से देख रहा है। जिसके कारण जातक का तलाक हो गया।

क्योंकि मंगल का शादी शुदा जिन्दगी में अहम महत्व होता है। इसलिए शादी पर मांगलिक गीत गाये जाते हैं और जातक की कुण्डली में सप्तम भाव का स्वामी भी बृहस्पति है। ये भी एक मुख्य कारण है। दोनो ग्रहो ने एक-दूसरे को नीच दृष्टि से एक-दूसरे को शुभता की अशुभता में बदल दिया है। इसलिए किसी भी कुण्डली का अध्ययन करते समय दृष्टियों को अवश्य समझना चाहिए। जातक की 25वें वर्ष में शादी हुई और 26वां वर्ष लगते ही तलाक हो गया।

26वें वर्ष की कुण्डली

26वें वर्ष की कुण्डली का अध्ययन करेंगे तो देखेंगे शुक्र जो कि शादी का कारक है। वो ग्रह कुण्डली के आठवें भाव में बैठा है जो कि अशुभ है।
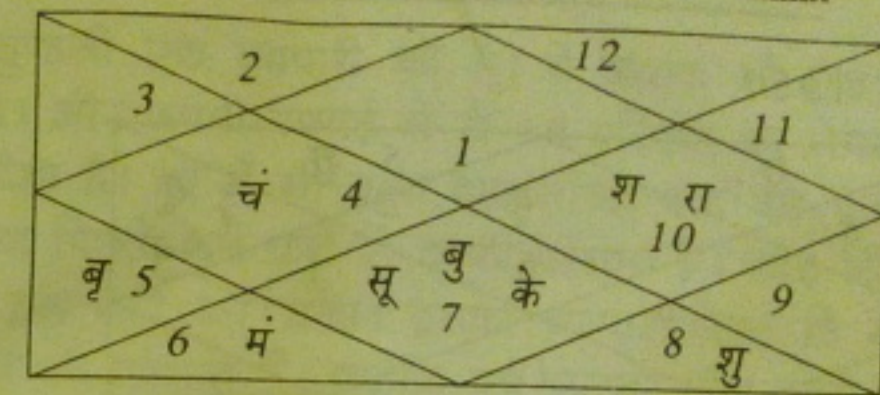
मंगल भी छठे भाव में बैठा है और शनि भी चन्द्र ग्रह को पीड़ित कर रहा है। सूर्य भी सातवें भाव में बैठ कर सातवें भाव को खराब कर रहा है। लेकिन ग्रहो का जन्म कुण्डली में शुभ भावों में बैठे होने के कारण जातक की दुबारा शादी भी हो गई।

जनवरी 1975 जन्म कुण्डली
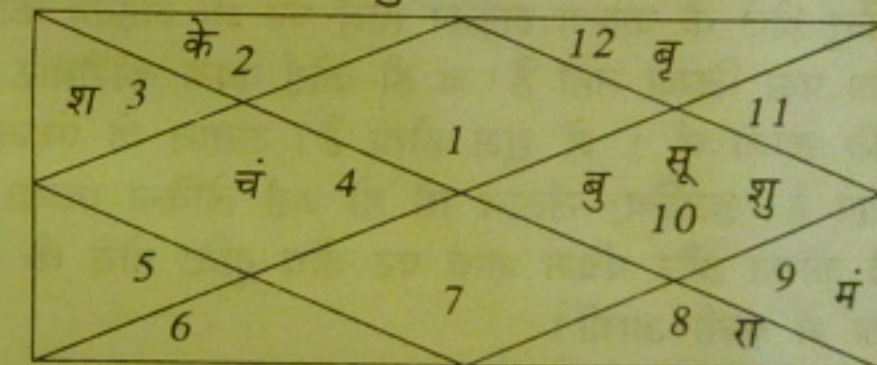
ये कुण्डली मेष लग्न की है। इसलिए लाल किताब की भी ये ही कुण्डली होगी। 31वां वर्ष लग चुका है। लेकिन जातक की अभी तक शादी नही हुई।

शुक्र जो कि सातवें भाव का स्वामी है सूर्य, बुध से पीड़ित है। मंगल जो कि मिलन का ग्रह है वो भी शनि से नीच दृष्टि द्वारा पीड़ित है। मंगल और शुक्र के अशुभ होने के कारण जातक को बल्ड शुगर है और सेहत में भी काफी परेशानी है।

कोई भी कुण्डली में दृष्टियों का अध्ययन अवश्य करें अन्यथा सही फलादेश करना मुश्किल हो जायेगा। दृष्टियों द्वारा ग्रहों की शुभता में बदलाव आ जाता है। दृष्टियों के कारण ही एक ग्रह एक ही भाव में शुभ और अशुभ फल प्रदान करता है। इसलिए दृष्टियों का भी फलादेश में खास महत्व है।

जुलाई 1957

ये कुण्डली एक बहुत अधिक धार्मिक व्यक्ति की है और ज्यादा से ज्यादा मन्दिर में दान करता रहता है। पंडित पुजारी की भी सेवा करने वाला है। घर में भी मन्दिर बनाकर सुबह शाम पूजा करता है। घर में खाना नं 2 खाली होने के कारण और खाना नं 8 में केतू होने के कारण लड़का होने पर भी लड़का का सुख नहीं, लड़का पढ़ा लिखा नहीं है। न ही कोई काम कारोबार करता है। बृहस्पति खाना नं 1 में शुभ होता है। संतान के पंचम भाव को देख रहा है। इसलिए संतान तो हो गई लेकिन कन्या राशि में होने के कारण और पंचम भाव पर नीच दृष्टि होने के कारण संतान सुख में कमी आयी।

बृहस्पति भी कन्या राशि में शुभ नहीं है। जिसके कारण जमीन जायदाद का सुख नहीं है। पैतृक संपत्ति में भी जो हिस्सा मिलना चाहिए था नहीं मिला। बहुत कम मिला। चौथे खाने में बृहस्पति की धनु राशि होने के कारण चौथा खाना भी अशुभ हो गया इसलिए इसके माता की बचपन में ही मृत्यु हो गई। खाना नं 7 में बृहस्पति की मीन राशि होने के कारण शादी-शुदा जिन्दगी भी अच्छी नहीं है। पत्नी बीमार रहती है।

जुलाई 1958

ये कुण्डली एक व्यापारी की है। ये जातक भी एक धार्मिक व्यक्ति है। और अपनी कमाई में से 10 प्रतिशत का शेयर मन्दिर में दान देता है। घर में भी बहुत बड़ा मन्दिर बना कर पूजा करता है। लेकिन पिछले कुछ वर्षो से काफी परेशान है। कोई भी इसकी परेशानी हल नहीं कर सका। इसका व्यापार चौपट हो गया है। और बहने भी परेशान हैं। क्योंकि बुध व्यापार और बहन बेटी का कारक है। जातक ने अब लेखक के कहने पर घर से मन्दिर हटा दिया है केवल कागज की फोटो फ्रेम लगाकर पूजा करता है। इसलिए अब दुबारा से कारोबार कुछ चलने लगा है।

पूजा

लाल किताब के अनुसार किस को पूजा नहीं करनी चाहिए और कैसे करनी चाहिए? जैसे दूसरा भाव खाली होने पर और आठवें भाव में कोई ग्रह होने पर घर में मन्दिर बनाकर पूजा नही करनी चाहिए और किसी धर्म स्थान पर भी अधिक नही जाना चाहिए। जैसे कि आप लोगो ने देखा होगा। अपने आस-पास बहुत से लोग ऐसे होंगे जो खूब पूजा करते हैं बड़ा-सा मंदिर बना कर रखते हैं। वे अकसर परेशान ही पाये होंगे। भले ही उनके पास रूपया-पैसा हो लेकिन बहुत-सी परेशानियां भी होती हैं।

यदि दूसरा भाव खाली हो और आठवें भाव में सूर्य हो तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो उसे बच्चे का सुख नही होगा, और सूर्य ग्रह से जो वस्तुएं प्राप्त होती हैं। उनका नुकसान होगा, लड़के और शिक्षा का। जैसे पिता के सुख में कमी आयेगी, हड्डी के रोग, आँख की रोशनी कम होना, दिल की बीमारी होगी।

यदि दूसरा भाव खाली होगा और आठवें भाव में चन्द्र ग्रह होगा। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो चन्द्र की वस्तुओं का नुकसान होगा। जैसे-माता, दादी, सास, ताई, नानी के सुख में कमी आयेगी। इससे रूपये-पैसे में कमी आयेगी। छाती (फेफड़े) और कफ संबंधी रोग हो सकते हैं।

यदि दूसरा भाव खाली होगा और आठवें भाव में मंगल ग्रह हो। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो मंगल की वस्तुओं का नुकसान होगा। जैसे भाई के सुख में कमी, खून में कमी या कोई खराबी, फोड़े-फुंसी का होना, किसी से भी अच्छे संबंध नही रहते।

यदि दूसरा भाव खाली हो और आठवें भाव में बुध ग्रह हो। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो बुध की वस्तुओं का नुकसान होगा। जैसे- व्यापार का बिल्कुल खत्म हो जाना, बहिन के सुख में कमी, मौसी, बुआ, साली के सुख में

कमी, आंतों की बीमारी।

यदि दूसरा भाव खाली हो और आठवें भाव में बृहस्पति ग्रह हो। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो बृहस्पति की वस्तुओं का नुकसान होगा। जैसे बाबा का सुख कम, शिक्षा का और लड़के का, सामान्य-ज्ञान सांस की बीमारी, कमर में दर्द, शुगर, पैर संबंधी रोग और कूल्हें में रोग आदि।

यदि दूसरा भाव खाली हो और आठवें भाव में शुक्र ग्रह हो। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो शुक्र की वस्तुओं का नुकसान होगा। जैसे- पत्नी सुख में कमी, वीर्य संबंधी बीमारी, गुर्दे का रोग, चमड़ी रोग आदि।

यदि दूसरा भाव खाली हो और आठवें भाव में शनि ग्रह हो। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो शनि की वस्तुओं का नुकसान होता है। ताऊ, चाचे के सुख में कमी, टांग संबंधी रोग, व्यापार में हानि आदि।

यदि दूसरे भाव में राहु हो और आठवें भाव में केतु हो। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो केतु की वस्तुओं का नुकसान होता है। जैसे- लड़के के सुख में कमी, जोड़ों के दर्द, हर्निया का रोग आदि।

यदि भाव में केतु हो और आठवें में राहु ग्रह हो। तब यदि व्यक्ति धर्मस्थान जाकर अधिक पूजा करेगा तो राहु की वस्तुओं का नुकसान होता है। ससुराल के सुख में कमी, नानको के सुख में कमी, ऐसा ज्वर होना जो मुश्किल से उतरे, अचानक वाहन संबंधी दुर्घटना होना, चोट लगना, कोई भी नुकसान अचानक होगा जिसका व्यक्ति को पता नही लगेगा।

यदि दूसरा भाव खाली हो और आठवें भाव में कोई ग्रह हो ऐसे व्यक्ति को एकांत स्थान में पूजा करनी चाहिए।

राहु, केतु यदि दूसरे, आठवें भाव में हो। ऐसा व्यक्ति किसी धर्म स्थान पर जायेगा और कुछ भी दान करेगा रूपया-पैसा या कोई और वस्तु उसका लाभ उस व्यक्ति को नही होगा। क्योंकि

वह जो भी दान करेगा वह राहु-केतु उठाकर ले जायेंगे (चोरी करके ले जायेंगे)। ऐसे व्यक्ति को कोई भी धर्म स्थान पर कोई भी वस्तु दान नही करनी चाहिए।

यदि दूसरे भाव में अगर चन्द्र ग्रह हो तो ऐसे व्यक्ति को घंटी बजाकर पूजा-पाठ नही करनी चाहिए। यदि ऐसा करेगा तो बे-औलाद हो सकता है। औलाद का सुख नही होगा।

लाल-किताब घर में पूजा करने के लिए मना नही करती है। सिर्फ घर में मंदिर बनाने के लिए मना करती है। घर में मंदिर बड़ी-बड़ी और ठोस मूर्तियां लगाकर मंदिर नही बनाना चाहिए। आपने प्राचीन बातें सुनी होंगी कि मंदिर गाँव-शहर की सरहद पर होता था। मंदिर के आजू-बाजू कोई रिहाइशी मकान नही होते थे। किसी औरत को रजोवृत्ति के दिनों में किसी धर्म स्थान पर जाना मना है। जब घर में आप मंदिर बनायेंगे तब रजोवृत्ति के दिनों पत्नी, माँ, बेटी को कहाँ भेजेंगे? मंदिर-घर में पवित्र नहीं रख सकते आप। मन्दिर कभी भी बन्द नहीं होते जब भी आप कभी कहीं 8-10 दिनों के लिए पूरे परिवार सहित कहीं घूमने फिरने जाते हैं तो घर के मंदिर का क्या होगा? या किसी और कारण आप घर के मंदिर का ध्यान न रख पाएं तो आप मन्दिर का अपमान करेंगे और जिन देवी-देवताओं को आपने मन्दिर में स्थापित किया है उनका भी अपमान होगा। इसलिए घर में मंदिर नही बनाना चाहिए।

पूजा घर में कर सकते हैं आप, किसी भी इष्ट-देव की। कागज़ की फोटो लगाकर। कागज़ की फोटो का कोई वहम् नही है। अकसर देखा जाता है लोग कई देवी-देवताओं की एक साथ पूजा करते हैं और सारी जिन्दगी दुःखी रहते हैं। वे ऐसा करके हर देवी-देवता का एक-दूसरे से टकराव करवा देते हैं।

कुण्डली में नौवें भाव या पांचवें भाव में जो ग्रह हो उसी भाव के इष्ट की पूजा-पाठ करनी चाहिए। जैसे सूर्य हो तो विष्णु जी महाराज, चंद्र हो तो शिवजी महाराज, मंगल हो तो हनुमान जी महाराज, बुध हो तो दुर्गा माता, बृहस्पति हो तो ब्रह्मा जी महाराज,

राहु हो तो सरस्वती देवी और केतु हो तो गणेश जी की पूजा करनी चाहिए। इसके अनुसार पूजन का चुनाव करना चाहिए। यदि किसी की कुण्डली का नौवां और पांचवा भाव दोनो ही खाली हों तो उन भाव में जो राशियां हों उनके स्वामी के ग्रह की पूजा करनी चाहिए।

पितृ-ऋण

'करे कोई भरे कोई' को 'पितृ-ऋण' कहते हैं। अपने पूवर्जो के बुरे कर्मो का फल उसके वंशज में किसी एक को भोगना पड़ता है।

1. सूर्य का पितृ-ऋण-

यदि शुक्र, शनि भाव 5 में हों तो सूर्य का पितृ-ऋण होता है। जैसे - पुराने रीति-रिवाजों का अपमान करना, छत में से रोशनी करना, दिल की बीमारी होना।

निशानियाँ- नास्तिक होना। बुजुर्गों के रीति-रिवाज को न मानना।

उपाय - कुल खानदान खून संबंधी हरेक सदस्य के साथ मिलकर सूर्य यज्ञ करना।

2. चन्द्र का पितृ-ऋण-

केतु खाना नं0 4 में हो तो चन्द्र ऋण होता है। माता दुःखी रहना, माता का निरादर करना, किसी गन्दी जगह पर पूजा स्थान बनाना, कुएं का सूख जाना आदि।

निशानियाँ- गन्दी जगह पर पूजा स्थान बनाना। सेहत अच्छी होते हुए भी हिम्मत जबाब दे दे।

उपाय - कुल खानदान, खून संबंधी बराबर-बराबर की चांदी लेकर सोमवार को चलते पानी में डालना।

3. मंगल का पितृ-ऋण-

इसका पितृ यदि 1, 8 में हो तो मंगल का पितृ-ऋण होता है। मित्र के साथ गद्दारी करना, रिश्तेदारों के साथ मिलने में घृणा होना, सब कुछ मिलने के बाद मिट जाना या नुकसान हो जाना आदि।

निशानियाँ- बिरादरी के मिलाप में नफरत करना।

उपाय - कुल खानदान, खून संबंधी से पैसे इकट्ठे करके उन पैसों से दवाइयां ले करके ऐसे हकीम या डॉक्टर को दें

जो मुफ्त में लोगो का इलाज करता हो। ये याद रखें कि आप उस जगह या उस डॉक्टर से अपना इलाज न करवायें।

4. बुध का पितृ-ऋण-

यदि चंद्र भाव 3 और 6 में हो तो बुध का पितृ-ऋण होता है। किसी की लड़की या बहिन की हत्या या धोखा देना।

निशानियां-आय कम, खर्चा ज़्यादा होना। छोटे बच्चों पर जुल्म करना।

उपाय - कुल खानदान, खून संबंधी से पैसे इकट्ठे करके बुधवार के दिन देसी घी का हल्वा-पूरी बना कर नौ साल से छोटी कन्याओं में दक्षिणा देकर बांटें।

5. बृहस्पति का पितृ-ऋण-

शुक्र, बुध और राहु भाव नं0 2,5,9,12 में हों तो बृहस्पति का पितृ-ऋण होता है।

निशानियां-पुरोहित का बदलना, धर्म स्थान बदलना, बृहस्पति पितृ-ऋण की निशानी है।

उपाय - इसका उपाय है कुल खानदान, खून संबंधी सबसे कुछ न कुछ पैसा लेकर धर्म स्थान में एक ही दफा दें।

6. शुक्र का पितृ-ऋण-

यदि सूर्य, राहु, केतु भाव नं0 2 और 7 में हो तो शुक्र-ऋण होता है। पारिवारिक मार-पीट, गर्भवती स्त्री को मारना।

निशानियां-खानदान में नफरत रखना, किसी भी खुशी के साथ गम का आना आदि।

उपाय - कुल खानदान, खून संबंधी से बराबर पैसे लेकर सौ गायों को चारा खिलाना एक ही दिन।

7. शनि का पितृ-ऋण-

यदि सूर्य, चन्द्र 10 और 11 भाव में हों।

निशानियां-किसी भी जीव हत्या करना, किसी अनाथ या विधवा

का मकान धोखे से लेना, साँप को मारना या मरवाना।

उपाय - कुल खानदान, खून संबंधी से बराबर-बराबर के पैसे लेकर एक ही दिन में सौ मजदूरों को खाना खिलाना।

8. राहु का पितृ-ऋण-

यदि सूर्य, शुक्र, मंगल 12वें भाव में हो।

कारण - ससुराल वालों को धोखा देना, नानको को धोखा देना।

निशानियां-घर के साथ कब्रिस्तान होना, बड़भूजे की भट्टी का होना, दहलीज़ के नीचे से गंदे पानी का जाना, अचानक धन-हानि होना।

उपाय - कुल खानदान, खून संबंधी से एक-एक नारियल लेकर एक ही दिन एक ही स्थान पर जल में बहायें (चलते पानी में)।

9. केतु का पितृ-ऋण-

यदि चंद्र, मंगल छठे भाव में हो तब केतु का ऋण होता है।

कारण - कुत्तों को मरवाना, दूसरों की नर-औलाद को नष्ट करना।

निशानियां-पेशाब की बिमारियां, बच्चों की अचानक मृत्यु, कान की बिमारियां आदि।

उपाय - कुल खानदान, खून संबंधी से पैसे इकट्ठे करके सौ कुत्तों को एक ही दिन खाना खिलाना।

ग्रहों के समय व दिन

पक्का ग्रह	*दिन में*	*सप्ताह में*
बृहस्पति	पहला भाग	वीरवार गुरुवार
सूर्य	दूसरा भाग	रविवार इतवार
चन्द्र	चाँदनी रात	सोमवार
शुक्र	काली रात	शुक्रवार
मंगल-नेक, बद	4 बजे शाम	मंगलवार
शनि	सारी रात अँधेरा दिन	शनिवार
राहू	पक्की शाम	वीरवार की शाम
केतु	सुबह सही	इतवार की सुबह

ग्रहों की आपसी मित्रता और शत्रुता

नाम ग्रह	सम ग्रह	दोस्त ग्रह	दुश्मन ग्रह
बृहस्पति	राहू, केतू, शनि	सूर्य मंगल, चन्द्र,	शुक्र, बुध
सूर्य	बुध,	बृहस्पति, मंगल, चन्द्र	शुक्र, शनि, राहू केतू
चन्द्र	शुक्र, शनि, मंगल, बृहस्पति	सूर्य, बुध	राहू, केतू
शुक्र	मंगल, बृहस्पति	शनि, बुध, केतू	सूर्य, चन्द्र, राहू
मंगल	शुक्र, शनि	राहू, सूर्य, चन्द्र बृहस्पति	बुध, केतू
बुध	शनि, मंगल, केतू, बृहस्पति	सूर्य, शुक्र, राहू	चन्द्र
शनि	केतू, बृहस्पति	बुध, शुक्र, राहू	सूर्य, चन्द्र, मंगल
राहू	बृहस्पति, चन्द्र	बुध, शनि, केतू	सूर्य, शुक्र, मंगल
केतू	बृहस्पति, शनि, बुध, सूर्य,	शुक्र, राहू	चन्द्र, मंगल

कुर्बानी

दुश्मनों से मारे हुए कुर्बानी मन्दा असर होने के वक्त ग्रहों की त्याग के बकरे-यानि असली ग्रह की अपनी जगह की बजाए किसी दूसरे ग्रह की हालत खराब हो जाए या वह अपनी जगह दूसरे ग्रह को मरवा जाए ।

शनि-दुश्मन ग्रहों के बचाव के लिए शनि अपनी जान बचाने के लिए अपने पास राहू-केतू ऐसे ग्रह एजेन्ट बनाए हूए है कि वह शनि की जगह किसी दूसरे की कुर्बानी दिला देते है। राहू केतू इकट्ठे बनावटी शुक्र माना है, इसलिए जब शनि को जब सूर्य का टकराव तंग करे, तो वह खुद अपनी जगह शुक्र औरत को मरवा देता है या सूर्य शनि के झगडे में औरत मारी जाएगी या ऐसे कुण्डली वाले की औरत पर इन दोनो ग्रहों की दुश्मनी का असर जा पहुँचेगा। न सूर्य सुख बरबाद होगा न ही शनि क्योंकि वह आपस में बाप बेटा है।

उदाहरण- सूर्य खाना नं-6, शनि खाना नं-12 हो तो औरत पर औरत मरती जाए।

बुध - बुध ने भी अपने बचाव के लिए शुक्र के साथ दोस्ती रखी है। वह भी अपने दोस्त शुक्र को ही बलाएँ डाला करता है।

मंगल - मंगल बद 'भाई' अपनी बला केतू 'लड़का' पर डालता है। शेर से कुत्ते को मरवा देगा। उदाहरर्णाथ सूर्य खाना नं-6 मंगल खाना नं-10 लड़के पर लडका 'केतू' मरता जाए। भाई भतीजे को मरवाए।

शुक्र - शुक्र स्त्री शैतान स्वभाव खुद अपनी बला चन्द्र यानि कुंडली वाले की माता पर जा धकेलेगी। मसलन चन्द्र शुक्र आमने-सामने सो मात अंधी हो जाए।

बृहस्पति- बृहस्पति ने अपने साथी केतू को ही कुर्बानी के लिए रखा है।

सूर्य - अपनी मुसीबत के वक्त केतू पर नजला 'अपना मन्दा

असर डाल देगा'

चन्द्र - अपने दोस्त ग्रहों पर अपनी बला डालेगा। बृहस्पति सूर्य और मंगल की कुर्बानी करेगा।

राहू, केतू- खुद ही अपना पाप निभाएँगे और अपनी संबंधित वस्तुएँ कारोबार या रिश्ता संबंधी राहू या केतू पर मुसीबत का भूचाल पैदा करेंगे। तो गरीब केतू को मरवाते हैं।

धर्म स्थान- धर्म स्थान, पूजा पाठ या इष्ट सिद्धि के लिए पवित्र जगह से आशय होगी, मुसलमान के लिए मस्जिद, सिख के लिए गुरुद्वारा, ईसाइयों के लिए गिरिजाघर और हिन्दुओं के लिए धर्म-मन्दिर या जिस धर्म और जगह में किसी प्राणी का विश्वास हो उसके लिए धर्म वही स्थान होगा। वहाँ रहने वाला कोई भी क्यों न हो या जिसे किसी ऐसे दुनिया की जगह पर विश्वास न हो, उसके लिए चलता हुआ दरिया नदी या शनिश्चर ध र्मस्थान का काम करेगा।

नोट - सूर्य मंगल और बृहस्पति इन्साफ के स्वामी होते हुए दूसरों की तो मदद करेंगे और एक को दूसरे पर गलत ज्यादती करते नही देख सकते, मगर जब खुद ही मुसीबत में हो, जो गरीब केतू को मरवाते है।

स्थित कायम ग्रह-

जो ग्रह हर तरह से ठीक और अपना असर बगैर किसी दुश्मन ग्रह के असर की मिलावट के साफ-साफ और कायम रख रहा हो यानि राशि की मिल्कियत 'स्वामित्व' ऊँच-नीच या पक्के घर या दृष्टि वगैरा किसी तरह से भी दुश्मन का असर न मिल रहा हो, और न हीं वह किसी दुश्मन ग्रह का साथी बन रहा हो, तो वह कायम ग्रह कहलाएगा।

सोया ग्रह कब स्वयं जाग पड़े

ग्रह	कब जाग पड़े	उम्र के बाद	कब मन्दा असर देगा
बृहस्पति	आम कारोबार होने पर	16 साल	छठें या 22वें साल
सूर्य	सरकारी नौकरी या ताल्लुक	22 साल	दूसरे या 24वेंसाल
चन्द्र	विद्या	24 साल	1ले या 25वें साल
शुक्र	शादी करने	25 साल	तीसरे या 28वें साल
मंगल	औरत संबंध	28 साल	छठें या 34वें साल
बुध	व्यापार, बहिन या लड़की की शादी	34 साल	दूसरे या 36वें साल
शनि	मकान ताल्लुक	36वें साल	छठें या 42वें साल
राहु	ससुराल ताल्लुक	42 साल	दूसरे या 48वें साल
केतु	जन्म संतान	48 साल	तीसरे या 51वें साल

लाल किताब द्वारा वर्जित

चन्द्र पहले खाने में हो तो दूध का दान नहीं करना चाहिए। चन्द्र खाना नं 2 में हो तो ऐसा व्यक्ति अगर घन्टियां बजाकर पूजा करेगा तो उसकी संतान पर बहुत अशुभ प्रभाव होगा।

चन्द्र खाना नं 3 में हो तो पानी का दान नहीं करना चाहिए यानि आम लोगो के लिए मुफ्त में तालाब कुआं, बावड़ी, प्याऊ बनवाएगा तो वह संतानहीन होगा। और उसके परिवार में आसामयिक मृत्यु होती रहेगी। चन्द्र अगर चौथे खाने में और दूध बेचने का कार्य करे तो ऐसा व्यक्ति निर्धन हो जाएगा।

चन्द्र अगर दसवें खाने में हो तो ऐसे व्यक्ति को रात में

दूध नहीं पीना चाहिए और डाक्टरी या वैद्य का काम नहीं करना चाहिए।

चन्द्र खाना नं 11 वाले को प्रभात समय न दान लेना चाहिए और न ही करना चाहिए दान लेने का मतलब है ऐसे व्यक्ति को अपनी शादी के फेरे प्रभात के समय नही लेना चाहिए और न ही अपने संतान के चाहे लड़के की शादी हो या लड़की की।

यदि चन्द्र 12 में हो तो ऐसे व्यक्ति को साधुओं को भोजन नहीं कराना चाहिए और अपने माता-पिता से कोई सम्पत्ति नहीं लेनी चाहिए। यदि ऐसा व्यक्ति अपने माता-पिता से सम्पत्ति लेता है या उसे मिल जाती है तो वह सारी उजड़ जाएगी। मन्दिर, गुरुद्वारे, मस्जिद, और चर्च या किसी भी ऐसे धर्म स्थान पर जो कि निर्माणधीन हो उसमें दान नहीं करना चाहिए और न ही कोई धर्म स्थान बनवाना चाहिए। किसी को भी निशुल्क शिक्षा नहीं देनी चाहिए।

बृहस्पति 2,4,5 खाने में हो तो घर में मन्दिर नहीं बनाना चाहिए और पूजा भी नहीं करनी चाहिए, ठोस मूर्तियाँ नहीं रखनी चाहिए कागज की फोटो का वहम नहीं है।

बृहस्पति सातवें घर में हो तो कपड़े दान नहीं करने चाहिए घर में मन्दिर बनाकर पूजा नहीं करनी चाहिए साधु सन्तों से दूर रहना चाहिए। और किसी को मुफ्त में शिक्षा भी नहीं देनी चाहिए।

बृहस्पति पांचवे घर में हो तो लंगर, प्रसाद नहीं खाना चाहिए। घर में मन्दिर बनाकर घंटी बजाकर पूजा भी नहीं करनी चाहिए। साधू संतो से दूर रहना चाहिए।

बृहस्पति दसवें खाने में हो तो किसी की भला नहीं करना चाहिए। धर्मस्थान भी नहीं बनवाना चाहिए।

सूर्य यदि सातवें खाने मे हो तो प्रातः काल और सांय काल में दान नहीं करना चाहिए।

शनि आठवें खाने में हो तो धर्मशाला सराय आदि नहीं बनवाने

बृहस्पति (ब्रह्माजी)

बृहस्पति 4, 8, 12 (कर्क, वृश्चिक, मीन) राशि में शुभ और 2, 6, 10 (वृष, कन्या, मकर) राशि में अशुभ होता है।
बृहस्पति से संबन्धित वस्तुएं - बब्बर शेर, मेढ़क, मुर्गा

बृहस्पति खाना नं 1

लाल किताब के अनुसार एक ही खाने में कोई भी ग्रह शुभ और अशुभ भी होता है। इसको पहचानने के लिए शुभ है या अशुभ है अनुभव की आवश्कता होती है जो इसमें लेखक द्वारा बहुत ही आसान तरीक से बताया जा रहा है।

बृहस्पति खाना नं 1 में हो और शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति शिक्षा में उत्तम होगा, औलाद का सुख सम्पूर्ण होगा। हर क्षेत्र का ज्ञान होगा, जद्दी जायदाद (पैतृक सम्पत्ति) का सुख होगा। उसके पिता के नाम एक से ज्यादा घर (सम्पत्ति) होंगे। पिता के पास वाहन सुख भी होगा। यदि कर्क राशि में होगा तो अधिक भाग्यवान होगा। धार्मिक होगा यदि वृश्चिक राशि में होगा तो अधिक धनवान होगा। पहली संतान लड़का होगी। बड़े मामा का सुख होगा। गणित कम्प्यूटर और अर्थशास्त्र का ज्ञाता होगा। प्रेम होगा प्रेमविवाह होगा यदि शुक्र शुभ होगा तो यदि मीन राशि में होगा तो राजदरबार से लाभ प्राप्त होगा पिता का सुख होगा सरकारी नौकरी पर कार्यरत होगा। राजनीति का ज्ञाता होगा और राजनीति में जा सकता है।

यदि बृहस्पति 1 खाने में अशुभ होगा तो कम शिक्षा होगी। औलाद का सुख सम्पूर्ण नहीं होगा। टेवे वाला बुद्धिमान भी कम होगा। शादी का सुख भी हल्का होगा। खेल-कूद का शौक नहीं होगा। खोपड़ी में चोट लगने की संभावना होगी। बड़े भाई-बहन की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। (यदि बृहस्पति वृष, कन्या, मकर राशि में हो) यदि बृहस्पति खाना नं 1 वृष राशि का होगा तो बड़े भाई बहन का सुख कम होगा। आय भी कम होगी। छोटे भाई बहन की शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी। यदि

कन्या राशि में होगा तो माता वाहन जमीन जायदाद का सुख कम होगा। यदि मकर राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख नहीं होगा खर्चा अधिक होगा।

उपायः- 1. शराब न पीना। 2. पीले फूल वीरवार को वीराने में दबाएं। 3. पीले वस्त्र न पहनना। 4. बूंदी के लड्डू बांटे।

बृहस्पति खाना नं 2

बृहस्पति खाना नं 2 में शुभ होगा तो दौलत का भण्डार होगा। शिक्षा के क्षेत्र में गणित, कम्प्यूटर, अर्थ-शास्त्र का ज्ञाता होगा। चेहरा सुन्दर होगा। शत्रु का नाश करने वाला होगा। पिता (बाबा) का सुख सम्पूर्ण होगा। बढ़ता परिवार (बिरादरी) होगा। मिलनसार होगा। यदि कर्क राशि में बृहस्पति होगा तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी होगी पत्नी सुशील आज्ञाकारी होगी। राजदरबार से लाभ होगा। पिता सुख होगा व्यापार में लाभ होगा। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। यदि मीन राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख होगा। अच्छी आय होगी। बचत भी होती रहेगी।

यदि बृहस्पति खाना नं 2 में अशुभ होगा तो धन का अभाव रहेगा। शत्रु से नुकसान होगा। बाबा और पिता के सुख सम्पूर्ण नहीं होगा। चाचा और छोटी बुआ की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी।(यदि बृहस्पति वृष, मकर, कन्या राशि में हो)। यदि वृष राशि में हो तो धनहानि होगी। भाग्य मन्दा होगा। यदि कन्या राशि में होगा। संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। यदि मकर राशि में होगा तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। माता, वाहन और जमीन, जायदाद का सुख कम होगा।

उपायः- 1. घर के सामने गढ्ढे हो तो उसे भरना। 2. मकान का एक हिस्सा कच्चा रखना। 3. गाय के घी का दीपक जलाना धर्म स्थान पर। 4. दाल चना, ढ़ाई मीटर पीले कपड़े में बांधकर पुजारी को देना। 5. केसर या हल्दी का तिलक करना। 6. गाय का घी धर्मस्थान में दें।

7. जिस राशि में बैठा हो उस ग्रह का उपाय करें।

बृहस्पति खाना नं 3

बृहस्पति खाना नं 3 में शुभ होगा तो टेवे वाला गरजते शेर की तरह दिलेर होगा। पड़ोसी मददगार होंगे। अच्छी कालोनी में निवास होगा। छोटे भाई-बहन का सम्पूर्ण सुख होगा। शादी सुख में मददगार होगा। आय शुभ होगी। धर्म को मानने वाला होगा। पेन्टिंग और फिजिक्स में रूचि होगी। यदि कर्क राशि में बृहस्पति होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख होगा। अच्छी आय होगी। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो माता वाहन और जमीन जायदाद का सुख होगा। शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी होगी। मित्र भी अच्छे होंगे। यदि मीन राशि मे हो तो माता छोटे भाई-बहन का सुख होगा। देश-विदेश की यात्रा करेगा और लाभ होगा।

यदि बृहस्पति खाना नं 3 में अशुभ होगा तो टेवे वाला कायर होगा। दूसरे के माल पर अपनी नजर रखने वाला होगा। ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को गले की कोई बीमारी होगी। बाजू में भी तकलीफ होगी। शादी के सुख में कमी होगी। कभी नास्तिक कभी आस्तिक होगा। आय में भी उतार-चढ़ाव आता रहेगा। (यदि बृहस्पति वृष, कन्या, मकर राशि में हो)। यदि वृष राशि में बृहस्पति हो तो राजदरबार से हानि होगी। पिता सुख कम होगा। अपनी सेहत भी अच्छी नहीं होगी। यदि कन्या राशि में हो तो भाग्य कुछ मन्दा होगा। हर काम कुछ रूकावट के साथ होंगे। यदि मकर राशि में हो तो संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। धन हानि होगी।

उपायः- 1. कन्या की पूजा करना। 2. चने की दाल हल्दी पीपल के पत्ते मुलठ्ठी पीला फूल पीले वस्त्र में बांधकर चलते पानी में बहाएं। 3. पीला कच्चा धागा लेकर पीपल के वृक्ष पर बांधना।

बृहस्पति खाना नं 4

यदि बृहस्पति खाना नं 4 में शुभ होगा तो टेवे वाला व्यक्ति

ब्रम्हज्ञानी होगा। भविष्य के प्रति दूरदर्शी होगा। मातृ सुख होगा। वाहन और घर-मकान का सम्पूर्ण सुख होगा। दूर की यात्राएं या विदेश की यात्राओं का सुख होगा। बहुत सी विद्याओं का जानकार होगा। शान्त स्वभाव का होगा। यदि कर्क राशि में बृहस्पति होगा तो विदेश यात्रा करेगा या विदेश में ही व्यापार करेगा। अच्छे भाग्य वाला होगा। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो अच्छी शिक्षा होगी। संतान सुख होगा। यदि मीन राशि में होगा तो सेहत अच्छी होगी। माता वाहन और जमीन जायदाद का सुख होगा।

यदि बृहस्पति खाना नं 4 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति गुस्से वाला होगा। दिमाग से अशान्त रहने वाला होगा। मातृ सुख भी हल्का होगा। हवाई घोड़े चलाने वाला होगा। माँ-बाप के आपस के संबंध अच्छे नहीं होंगे। (यदि बृहस्पति कन्या राशि में हो) यात्रा और विदेश यात्रा फलदायक नहीं होगी। यदि बृहस्पति वृष राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय कम होगी। धन-हानि होगी। यदि कन्या राशि में होगा तो राजदरबार से लाभ नहीं होगा। शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी। यदि मकर राशि का होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। पड़ोसी भी अच्छे नहीं होंगे।

उपायः- 1. घोड़े को चने की दाल खिलाना। 2. बनियान पर लाल रंग का निशान लगाना। 3. किसी के सामने नंगा न नहाना। 4. छः तन्द वाला पीला कच्चा धागा पीपल के वृक्ष में बांधे।

बृहस्पति खाना नं 5

बृहस्पति खाना नं 5 में शुभ हो तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति ब्रम्ह ज्ञानी होगा। शिक्षा, औलाद का सम्पूर्ण सुख होगा। धर्म के प्रति रूचि होगी। अध्यापक या गुरू होगा। आय की कोई शर्त नहीं। खेल-कूद में रूचि होगी। यदि बृहस्पति कर्क राशि में होगा तो राजदरबार से लाभ होगा। पिता का सुख होगा। अपनी सेहत अच्छी होगी। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो धार्मिक होगा। अच्छे भाग्य वाला होगा। यदि मीन राशि में होगा तो संतान सुख होगा।

अच्छी शिक्षा होगी। बड़े मामा मासी का सुख होगा। धनवान होगा। गणित अर्थशास्त्र का ज्ञाता होगा। कम्प्यूटर साइंस की शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

यदि बृहस्पति खाना नं 5 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को औलाद और शिक्षा का सम्पूर्ण सुख नहीं होगा। सांस की बीमारी होगी। छोटे भाई-बहन की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। ऐसे टेवे वाले व्यक्ति की भी शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी।(यदि बृहस्पति वृष, कन्या, और मकर राशि में हो)। यदि बृहस्पति वृष राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। गले में कोई रोग होगा या बाजुओं में कोई रोग होगा नहीं तो सरवाईकल दर्द होगा। यदि कन्या राशि में होगा तो आय कम होगी। शिक्षा में रूकावट होगी। संतान सुख कम होगा। यदि मकर राशि में होगा तो माता वाहन और जमीन जायदाद का सुख कम होगा। शादी-शुदा जिन्दगी भी अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1. किसी से दान नहीं लेना। 2. सिर पर चोटी बांधना। 3. लंगर या प्रसाद नहीं लेना। 4. चार दर्जन केले धर्मस्थान पर देना। 5. गरीबों में बेसन के लड्डू बांटना। 6. गुड़ और कनक के लड्डू बांटे।

बृहस्पति खाना नं 6

यदि बृहस्पति खाना नं 6 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को ईश्वरीय मदद हर वक्त मिलती रहेगी। यानि अंतिम वक्त पर हर काम पूरा हो जाएगा। द्रोपदी का भी छठे खाने में बृहस्पति था इसलिए जब उस का चीर हरण होने लगा था तब द्रोपदी को ईश्वरीय सहायता प्राप्त हुई थी कृष्ण द्वारा। शत्रुओं और बीमारी से हर वक्त बचाव होता रहेगा। यदि बृहस्पति खाना नं 6 में कर्क राशि में हो तो खाना नं 2 और खाना नं 11 के मिश्रित फल होंगे। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो दो शादी भी हो सकती है। और खाना नं 7 और 10 के मिश्रित फल होंगे। यदि मीन राशि में होगा तो खाना नं 3 और 6 के मिश्रित फल होंगे।

यदि बृहस्पति खाना नं 6 में अशुभ हो तो ऐसे टेवे वाले

व्यक्ति पर कर्जा रहता है, बीमारी गले पड़ी रहती है। रोज-रोज नए-नए शत्रु बनते रहते हैं। ऐसे टेवे वाले की ताऊ की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती।(यदि बृहस्पति वृष, कन्या, मकर राशि में हो)।

उपायः- 1. पीपल में पानी डालें। 2. दाल, चना धर्म स्थान पर दें। 3. पीले मुर्गे की सेवा करें। 4. पुजारी को पीले वस्त्र दान करें। 5. कन्या को हलवा खिलाएं।

बृहस्पति खाना नं 7

यदि बृहस्पति खाना नं 7 में शुभ हो तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति पिछले जन्म का साधु होता है। ऐसे व्यक्ति को बहुत गुस्सा आता है। यदि शुक्र, पांचवा खाने और पांचवे खाने में जो राशि हो उस राशि का स्वामी ग्रह भी अशुभ हो (जब तीनों अशुभ हों) ऐसे व्यक्ति को शादी नहीं करनी चाहिए। धर्म काम में हर वक्त आगे रहने वाला व्यक्ति होगा। यदि बृहस्पति कर्क राशि में हो तो किसी दूसरी जाति में विवाह हो सकता है। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख होगा। आय अच्छी होगी। यदि मीन राशि का होगा तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी होगी। माता, वाहन और जमीन-जायदाद का सुख होगा।

यदि बृहस्पति खाना नं 7 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति को औलाद का सुख सम्पूर्ण नहीं होगा। ऐसे टेवे वाला व्यक्ति की साला-साली की शादी के सुख में कमी आएगी। तलाक भी हो सकता है।(यदि बृहस्पति वृष, कन्या, और मकर राशि में हो)। यदि बृहस्पति वृष राशि में होगा तो धनहानि होगी। शिक्षा में रूकावट आएगी। संतान सुख कम होगा। यदि कन्या राशि में होगा तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी। राजदरबार की हानि होगी। पिता का सुख कम होगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव आते रहेंगे।

उपायः- 1. घर में मन्दिर ठोस मूर्तियों का न बनाएं। 2. सोना पीले कपड़े में बांधकर रखें। 3. तराजू और

बांट छोटे-छोटे घर में न रखें। 4. रमते साधु से दूर रहें। 5. कपड़े दान न करना।

बृहस्पति खाना नं 8

यदि बृहस्पति खाना नं 8 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को गड़ा हुआ खजाना मिलता है या किसी की मौत के बाद उसकी जायदाद का मालिकाना हक मिलता है या किसी गुप्त ज्ञान द्वारा आय का साधन बनाता है। या लोगों का बीमा करके आय कमाता है। लम्बी और विदेश यात्रा होगी। ज्योतिष विद्या का ज्ञाता होगा।

बृहस्पति खाना नं 8 में अशुभ होगा तो मामा-मौसी की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी (यदि बृहस्पति वृष, कन्या, मकर राशि में हो) खर्चा अधिक होता रहेगा। मकान, वाहन का सुख कम होगा।

उपायः- 1. 800 ग्राम हल्दी धर्मस्थान पर दें यदि दूसरे खाने में कोई ग्रह हो और यदि न हो तो किसी गरीब को दें। 2. कच्चे सूत को हल्दी से पीला करके पीपल में बांधे। 3. गुरू को या पुजारी को वीरवार को बेसन के लड्डू भेंट करें।

बृहस्पति खाना नं 9

यदि बृहस्पति खाना नं 9 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति धार्मिक भाषा का ज्ञाता होगा। औलाद का सुख सम्पूर्ण होगा। बृहस्पति खाना नं 9 में टेवे वाले व्यक्ति को योगी भी बना देता है। यदि बृहस्पति कर्क राशि में हो तो धनवान होगा। व्यापारी होगा। संतान सुख होगा। बुद्धिमान होगा। अच्छी शिक्षा होगी। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो राजदरबार से लाभ होगा। पिता का सुख होगा। सेहत अच्छी होगी। यदि मीन राशि में होगा तो भाग्यवान होगा।

यदि बृहस्पति खाना नं 9 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति नास्तिक होगा। औलाद का सुख कम होगा। बड़े भाई-बहनों

की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी।(यदि बृहस्पति वृष, कन्या, मकर राशि में हो) पैर में कोई बीमारी जैसे पैरों में दर्द होना, हड्डी टूटना, या पैर की त्वचा खराब होना। यदि बृहस्पति वृष राशि में होगा तो माता, वाहन और जमीन जायदाद का सुख कम होगा। शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी। यदि कन्या राशि में होगा तो मिश्रित फल करेगा। यदि मकर राशि का होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय भी कम होगी।

उपायः- 1. झूठ न बोलें। धर्म का पालन करें। 2. गंगा स्नान करें। 3. चने की दाल पिंगलवाड़ा में दें। 4. धर्मस्थान में गाय के घी का दीपक जलाएं। 5. चने की दाल, हल्दी, पीपल के पत्ते मुलट्ठी पीला फूल, केसर पीले रंग के वस्त्र में बांधकर जल प्रवाह करें।

बृहस्पति खाना नं 10

यदि बृहस्पति खाना नं 10 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति धनी होगा। किसी से कर्जा नहीं लेगा। शत्रु नहीं होंगे। ऐसा व्यक्ति किसी ऊँचे सरकारी पद पर आसीन होगा, नेता भी बन सकता है। यदि बृहस्पति कर्क राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। पड़ोसी अच्छे होंगे। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख होगा। ६ नवान होगा। आय अच्छी होगी। यदि मीन राशि में होगा तो पिता का सुख होगा। राजदरबार से लाभ होगा। राजनीति में जाएगा। शादी-शुदा जिन्दगी अच्छीं होगी।

नोटः- बृहस्पति (10) खाने वाले व्यक्ति को बृहस्पति तभी शुभ फल देगा जब वह चालाक चतुर (शनि) की तबीयत का होगा।

यदि बृहस्पति खाना नं 10 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को धन हानि होती रहेगी। बिना बात के शत्रु बनते रहेंगे। चाचा और ताऊ की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। (यदि बृहस्पति वृष, कन्या, मकर राशि में हो)। यदि बृहस्पति वृष राशि मे होगा तो शिक्षा में रुकावट आएगी। संतान सुख कम होगा।

यदि कन्या राशि में होगा तो सेहत अच्छी नहीं होगी। यदि मकर राशि में होगा तो पेट में चोट लगेगी। धार्मिक नहीं होगा। भाग्य मन्दा होगा। छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1. एक सीधा डंडा जल प्रवाह करें। डंडे को पीला रंग कर लें। 2. घोड़े को चने की दाल खिलाएं। 3. तांबे का पैसा चलते पानी में बहाएं। 4. कोई काम शुरू करने से पहले नाक साफ रखें। 5. गंधक जल प्रवाह करें। 6. किसी के साथ नेकी न करें।

बृहस्पति खाना नं 11

यदि बृहस्पति खाना नं 11 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को छोटे भाई-बहनों को सम्पूर्ण सुख होगा। अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। मकान वाहन का सुख सम्पूर्ण होगा। नौकर सेवा से युक्त होगा। यदि बृहस्पति कर्क राशि में होगा तो माता, वाहन और जमीन-जायदाद का सुख होगा। यदि वृश्चिक राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। यदि मीन राशि का होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख होगा। आय अच्छी होगी लेकिन नुकसान भी होता रहेगा।

यदि बृहस्पति खाना नं 11 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को मकान भी नसीब न होगा कभी-कभी ऐसा भी होता है अपने घर का कफन भी नसीब नहीं होता है (इसलिए ऐसे व्यक्ति को किसी लावारिस लाश को कफन दान देते रहना चाहिए) पिता का धन टेवे वाले व्यक्ति को काम नहीं आएगा। पूजा का स्थान बदलता रहेगा या गन्दी जगह पर बनाया जाएगा। अपनी शादी-शुदा जिंदगी भी खराब होगी। तलाक तक हो सकता है।(यदि बृहस्पति वृष, कन्या, मकर राशि में हो)। यदि बृहस्पति वृष राशि में होगा तो मन्दे भाग्य की निशानी होगी। कर्जदार होगा। यदि कन्या राशि में होगा तो धनहानि होती रहेगी। यदि मकर राशि में होगा तो पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से कोई लाभ प्राप्त नहीं होगा। अपनी सेहत भी अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1. पिता के बाद पिता के सामान चारपाई, वस्त्र, सोना, घड़ी, पेन, आदि का इस्तेमाल करें। 2. किसी लावारिस लाश को कफन दान दें। 3. शमशान घर में पैसा गिराते रहें। 4. पीले फूल बाहर वीराने में दबाएं।

बृहस्पति खाना नं 12

यदि बृहस्पति खाना नं 12 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता। परोपकारी और दानी होता है। ऐसे व्यक्ति को दुख देने वाले खुद-ब-खुद बरबाद हो जाते है।

यदि बृहस्पति खाना नं 12 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति दूसरे के आगे हाथ फैलाता रहेगा। धर्म से दूर भागने वाला होगा। सांस का रोग, जिगर का रोगी होता है। बृहस्पति 4, 8, 12 और 2, 6, 10 के अतिरिक्त किसी और राशि में हो जिंदगी में हर काम कभी शुभ कभी अशुभ होता रहेगा।

उपायः- 1. पीपल की सेवा करें। 2. नाक साफ कर के काम करा करें। 3. केसर का तिलक लगाएं। 4. सोने की चेन गले में पहनें। 5. टोपी या पगड़ी पहनें। 6. गले में गोल मनको की माला न डालें।

सूर्य (विष्णु जी)

सूर्य 1, 5, 9 राशि (मेष, सिंह, धनु) शुभ और 3, 7, 11 राशि (मिथुन, तुला, कुंभ) में अशुभ होता है
सूर्य संबन्धित वस्तुएं - बंदर, रथ

सूर्य खाना नं 1

सूर्य खाना नं 1 में शुभ हो तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति परोपकारी होगा। सरकारी उच्च आसन पर आसीन, स्वतंत्र विचारों वाला, पिता के लिए अच्छा होगा। उच्च शिक्षा व औलाद का सुख सम्पूर्ण होगा। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो संतान सुख होगा अच्छी शिक्षा होगी। यदि सिंह राशि में होगा तो अच्छी सेहत होगी। हर एक काम समय से होंगे। यदि धनु राशि में होगा तो भाग्यवान, परिवार का पोषण करने वाला, धार्मिक विचारों वाला होगा।

सूर्य खाना नं 1 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति गुस्से वाला, गन्दे वचन बोलने वाला, पिता के लिए अशुभ, सरकारी उलझनें, शिक्षा में रुकावट, रक्तचाप व आंख का रोगी होगा। औलाद सुख में कमी होगी। साला साली की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी।(यदि सूर्य मिथुन, और तुला राशि में हो)। यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। पड़ोसी अच्छे नहीं होंगे। गले का रोग, बाजुओं में दर्द या सरवाईकल का दर्द होगा। यदि तुला राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय भी कम होगी। यदि कुंभ राशि में होगा तो अपनी शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी या सगाई टूटेगी।

उपायः- 1. गेहूँ और गुड़ का दान करें। 2. चाल चलन ठीक रखें। 3. परोपकारी बनें। 4. सफेद चंदन से स्नान करें।

सूर्य खाना नं 2

यदि सूर्य खाना नं 2 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति व्यापारी होता है और दान करने वाला होता है। शत्रु दबकर रहते हैं। राजदरबार से लाभ होता है। बिरादरी में इज्जत मान बना रहता है। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो शत्रु दबकर रहेंगे। उन पर विजय होगी। यदि सिंह राशि में होगा तो धनवान होगा। छोटी उम्र में ही व्यापार करेगा। यदि धनु राशि में होगा तो पिता का सुख होगा। व्यापारी होगा या राजनीति में जाएगा या सरकारी ऊँचे पद पर आसीन होगा।

यदि सूर्य खाना नं 2 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को धन हानि होती रहेगी। दूसरों के माल पर नजर रखने वाला होगा, अपनी पत्नी और बिरादरी वालों से झगड़ने वाला होगा। मकान वाहन का सुख कम होगा। माता-पिता की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। (यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा)। यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा तो माता, वाहन और जमीन-जायदाद का सुख कम होगा। यदि तुला राशि में होगा तो खर्चा अधिक होगा। धनहानि होगी। यदि कुंभ राशि में होगा तो भी धन हानि होगी। चेहरे पर चोट लगेगी या कोई रोग होगा।

उपायः- 1. मुफ्त का माल न लें। 2. नारियल धर्मस्थान में दें। 3. गेहूँ और गुड़ पिंगलवाड़ा में दान दें। 4. अंधो को भोजन खिलाएं।

सूर्य खाना नं 3

यदि सूर्य खाना नं 3 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति पराक्रमी होगा, अपने-आप कमाकर खाने वाला होगा। पक्का निश्चय वाला होगा। भाई-बन्धु से लाभ होगा। पड़ोसी अच्छे होंगे। आय बढ़ती रहेगी। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी होगी। यदि सिंह राशि में होगा तो पराक्रमी होगा। निडर होगा। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। यदि धनु राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख होगा। आय अच्छी होगी। फैक्टरी का मालिक होगा।

यदि सूर्य खाना नं 3 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति का धन उसके सामने ही चोरी हो जाएगा। पड़ोसी अच्छे नहीं होंगे। भाई-बन्धु होंगे नहीं या मददगार नहीं होंगे। औलाद का सुख सम्पूर्ण नहीं होगा। अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। बड़े-भाई बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। (यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा)। यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा तो शिक्षा में रूकावट आएगी। संतान सुख कम होगा। बड़े भाई-बहन की शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी। पेट के रोग होंगे। दिल के भी रोग होंगे। यदि तुला राशि में होगा तो सेहत अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1. बड़े बर्तन खाली न रखें चांदी का सिक्का डालकर रखें। 2. शराब न पिएं। 3. मूली रात को सिरहाने रखकर सुबह धर्मस्थान में दें। 4. बुध का उपाय करें। 5. जिस राशि में बैठा हो वह ग्रह खराब हो तो उसका भी उपाय करें।

सूर्य खाना नं 4

यदि सूर्य खाना नं 4 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को जमीन जायदाद का और वाहन का सुख सम्पूर्ण होगा। उसकी स्त्री सरकारी नौकरी करती होगी। परिवहन के व्यापार में लाभ होगा। विदेश यात्राओं से लाभ होगा। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो वाहन सुख होगा यदि सिंह राशि में होगा तो वाहन सुख होगा माता और जमीन जायदाद का सुख होगा। उसक पत्नी या पति सरकारी नौकरी पर ऊँचें पद पर आसीन होगा या राजनीति में जाएगा। यदि धनु राशि में होगा तो विदेश यात्रा करेगा और आयात-निर्यात का कारोबार करेगा या विदेश में निवास बनाएगा।

यदि सूर्य खाना नं 4 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति आंख, रक्तचाप का रोगी होगा। हड्डियों में भी रोग हो सकता है। दूसरों के काम से जलने वाला या दूसरों के बने-बनाए काम को बिगाड़ने वाली आदत का होगा। जमीन, जायदाद और वाहन के सुख में कमी होगी। ताऊ और बड़ी बुआ की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। (अगर सूर्य तुला राशि में होगा)। यदि सूर्य

मिथुन राशि में होगा तो माता का सुख कम होगा। यदि तुला राशि में होगा तो पैतृक सम्पत्ति नहीं मिलेगी। अगर मिल गई तो उसका सुख नहीं भोगेगा। धन हानि होगी।

उपायः- 1. अंधो को खाना खिलाए। 2. बंदर को गुड़ और कनक के लड्डू बनाकर खिलाएं। 3. रविवार के दिन सूर्य हवन कराएं। 4. ससुराल से सूर्य की अशियां न लें।

सूर्य खाना नं 5

यदि सूर्य खाना नं 5 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को शिक्षा और औलाद सुख सम्पूर्ण होगा। औलाद होने के बाद तरक्की पाने वाला होगा। परोपकारी और साफ दिल होगा। अच्छी किस्मत वाला होगा। अच्छी किस्मत, अच्छी सेहत का मालिक होगा। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो धार्मिक होगा। शिक्षा अच्छी होगी। भाग्यवान होगा। यदि सिंह राशि में होगा तो संतान सुख होगा। पति या पत्नी के बड़े भाई-बहन का सुख होगा। यदि धनु राशि में होगा तो अच्छी सेहत होगी। पिता को वाहन और जमीन जायदाद का सुख होगा।

यदि सूर्य खाना नं 5 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को शिक्षा, औलाद सुख में कमी होगी। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी (यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा)। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। छोटे साला-साली की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। (यदि सूर्य तुला राशि में हो)। यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी। यदि तुला राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। कुंभ राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा।

उपायः- 1. बन्दर को गुड़ कनक के लड्डू बनाकर खिलाना। 2. बुजुर्गों के रस्मों-रिवाज पर चलना। 3. किसी से ईर्ष्या न करना।

सूर्य खाना नं 6

यदि सूर्य खाना नं 6 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति

राजदरबार से लाभ पाने वाला होगा। जल्द गुस्सा आएगा। पक्का निश्चय वाला होगा। बहनों की सेवा करने वाला होगा।

यदि सूर्य खाना नं 6 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति आंख और रक्तचाप का रोगी होगा। राजदरबार से नुकसान होगा। हर समय कर्जा चढ़ा रहेगा। शत्रु हावी होंगे। मामू खानदान पर बुरा असर होगा।

उपायः- 1. बन्दर को गुड़ कनक के लड्डू बनाकर खिलाना। 2. कन्याओं की सेवा करना। 3. भूरी चीटियों को घी आटा चीनी मिलाकर डालना। 4. दरिया का पानी कायम रखना।

सूर्य खाना नं 7

यदि सूर्य खाना नं 7 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति अभिमानी होता है। ऐसे व्यक्ति को स्त्री लाजवन्ती मिलती है। हर किसी से समझौता करने वाला होता है। आय अच्छी होती है। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख होगा। अच्छी आय होगी। यदि सिंह राशि में होगा तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी होती है। यदि धनु राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा।

यदि सूर्य खाना नं 7 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति का विवाह देरी से होता है। स्त्री से बनती नहीं है। स्त्री बीमार रहती है। शरीर पर सफेद दाग के निशान होते है। यदि सूर्य तुला राशि में होगा बड़े भाई-बहन की शादी-शुदा अच्छी नहीं होगी और शिक्षा में रूकावट आएगी।(यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती है। यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा तो मन्दे भाग्य की निशानी होगी। हर काम देर से बनते हैं।

उपायः- 1. तांबे के चौरस टुकड़े केसर लगाकर गुलाबी वस्त्र में लपेटकर रविवार को वीराने स्थान में दबाना। 2. गाय की सेवा करना। 3. रात को रोटी आदि पकाने के बाद आग दूध से बुझाएं।(गैस, चूल्हा, स्टोव, अंगीठी)

4. मीठा खाकर पानी पीकर काम पर जाना।

सूर्य खाना नं 8

यदि सूर्य खाना नं 8 में शुभ हो तो टेवे वाला व्यक्ति गुप्त विद्या में रूचि रखने वाला होगा। गरीबो की मदद करने वाला होगा। उम्र लम्बी होगी। यदि मिथुन राशि में होगा तो राजदरबार से लाभ होगा। कुंभ राशि में होगा तो धनी होगा।

यदि सूर्य खाना नं 8 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को धन हानि होगी। दूसरों की स्त्रियों के साथ संबंध रखने वाला होगा। आंख का रोगी होगा।

उपायः- 1. दक्षिण दिशा वाले मकान में नही रहना। 2. चाल-चलन ठीक रखना। 3. ससुराल से सूर्य की अशियां नहीं लेना। 4. एक नारियल सात बादाम रविवार को धर्मस्थान में दें। 5. गुड़ जल प्रवाह करना। 6. जलती चिता में तांबे का पैसा डालना।

सूर्य खाना नं 9

यदि सूर्य खाना नं 9 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति बड़ी बिरादरी वाला होगा। धार्मिक होगा। अपने परिवार का मददगार होगा। अपने खानदान की निष्काम सेवा करने वाला होगा। शिक्षा और औलाद का सम्पूर्ण सुख होगा। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो अपनी सेहत अच्छी होगी। पिता सुखी होंगे। यदि सिंह राशि में होगा तो धार्मिक होगा। परिवार का पोषक होगा। अच्छे भाग्य वाला होगा। यदि धनु राशि में होगा तो संतान सुख होगा। अच्छी शिक्षा होगी। धार्मिक शिक्षा का जानकार होगा।

यदि सूर्य खाना नं 9 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति मुफ्त का माल रखने वाला होगा। पिता और ससुराल के लिए अशुभ होगा। विदेश यात्राओं में हानि होगी। यदि तुला राशि का होगा तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी खराब होगी। मिथुन राशि का होगा तो आय में कमी होगी और बड़े भाई के सुख में कमी

होगी। बड़े साला-साली के शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1.चाँदी का दान करना। 2. पीतल के बर्तनों का प्रयोग करना। 3. गुस्सा अधिक न करें और न ही अधिक धीरज रखें। 4.गुरू को या पुजारी को रविवार को गुलाबी रंग के वस्त्र या पगड़ी भेंट करें। 5.चांदी का दान या तोहफा किसी से न लें।

सूर्य खाना नं 10

यदि सूर्य खाना नं 10 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति नेता या मंत्री का सुख पाने वाला होगा। पिता के लिए शुभ होगा। व्यापार में लाभ होगा। मेष राशि में हो तो धन-धान्य से संपन्न होगा। अच्छी सेहत का मालिक होगा मगर एक वहमी व्यक्ति होगा। यदि सूर्य मेष राशि में होगा तो धनवान व्यापारी होगा। यदि सिंह राशि में होगा तो पिता का सुख होगा। राजदबार से लाभ होगा। किसी भी ऊँचे सरकारी पद पर आसीन होगा। राजनीति में जाएगा या एक कुशल व्यापारी होगा। यदि धनु राशि में होगा तो शत्रु पर विजय प्राप्त करेगा।

यदि सूर्य खाना नं 10 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को पिता का सुख कम होगा। आंख का रोगी होगा। हर काम में नाकामयाबी होगी। जिंदगी में कई बार उतार-चढ़ाव आएंगे। यदि सूर्य मिथुन राशि में होगा तो विदेश यात्रा से हानि होगी। खर्चा अधिक होगा। यदि तुला राशि में होगा व्यापार में हानि होगी। यदि कुंभ राशि में होगा तो माता का सुख कम होगा।

उपायः- 1. सफेद रंग की पगड़ी या टोपी पहनें। 2. काले, नीले कपड़े मत पहनें। 3. तांबे का पैसा जल प्रवाह करें। 4. भूरी भैंस की सेवा करें। 5. अंधों को भोजन कराएं।

सूर्य खाना नं 11

सूर्य खाना नं 11 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति सम्पूर्ण धर्मी होगा मगर अपनी ही ऐश-पसंद का होगा। तीन बेटों का बाप होगा। उम्र लम्बी होगी। ईमानदार, आज्ञाकारी, शाकाहारी

होगा। सूर्य मेष राशि का होगा तो छोटे भाई-बहन का सम्पूर्ण सुख होगा। सूर्य धनु राशि का होगा तो शादी का सुख सम्पूर्ण होगा। सिंह राशि का होगा तो बड़े भाई का सम्पूर्ण सुख होगा।

यदि सूर्य खाना नं 11 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति शराबी, कबाबी, झूठा होगा। सपनों में सांपों को देखेगा। यादि तुला राशि में होगा छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी यदि मिथुन राशि में होगा अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1. नारियल और बादाम जल प्रवाह करें। 2. शराब न पिएं। 3. सूर्य को पानी दें। 4. गेहूँ, बाजरा, गुड़ मिलाकर गाय को खिलाएं। 5. तांबे का लोटा या बर्तन दान करें।

सूर्य खाना नं 12

यदि सूर्य खाना नं 12 शुभ हो तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति आजाद जिंदगी का मालिक होगा। साफ दिल ब्रम्हज्ञानी और जिंदादिल होगा। धार्मिक होगा। घर में खुला आँगन होगा। मिथुन राशि में होगा तो व्यापारी होगा। तुला राशि में होगा तो पिता का सम्पूर्ण सुख होगा। मेष राशि में होगा विदेश यात्रा होगी।

यदि सूर्य खाना नं 12 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को विदेश यात्रा और व्यापार में धन हानि होगी। आँख का रोगी होगा। दूसरों का माल हड़पने वाला होगा। नीच स्त्रियों से संबंध रखने वाला होगा। पैतृक संपत्ति का नाश करने वाला होगा। रात की नींद बरबाद होगी। शत्रुओं द्वारा पीड़ित होगा। बिना आँगन का मकान होगा। दिमागी बीमारी होगी। वाहन चोरी होगा या दुर्घटना होगी।

उपायः- 1. बंदरों को गुड़ और कनक के लड्डू खिलाएं। 2. भूरी चीटियों को आटा, घी, चीनी, मिलाकर डालें। 3. मकान में आँगन जरूर रखें। 4. सरकारी कर्मचारियों की सेवा करें।

चंद्र (शिवजी भोले भण्डारी)

चन्द्र 2, 6, 10 वृष, कन्या, मकर राशि में शुभ और 4, 8, 12 कर्क, वृश्चिक और मीन राशि में अशुभ होता है। चन्द्र संबन्धित वस्तुएं - घोड़ा, माता,

चन्द्र खाना नं 1

चन्द्र खाना नं 1 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान परोपकारी और समुद्री यात्रा का लाभ पाने वाला होता है। माँ के लिए शुभ माँ का आज्ञाकारी नेक चरित्र वाला होता है। लम्बी उम्रवाला होगा। अगर वृष राशि में होगा तो छोटे भाई बहन का सम्पूर्ण सुख होगा। अगर कन्या राशि में होगा तो बड़े भाई बहन का सुख होगा।

चन्द्र खाना नं 1 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति को पानी में डूबने का भय लगा रहता है। मानसिक रोगी होता है बहुत बहनो वाला होता है। सम्भोग करने की शक्ति कमजोर होती है। संतान के प्रति चिन्ता युक्त रहता है। शुक्र चाहे जितना भी शुभ नजर आ रहा हो मगर शुभ नहीं रहेगा। ऐसे व्यक्ति के पैदा होने से पहले उसका कोई भाई या बहन गुजर (मर) चुका होगा। यदि वृश्चिक राशि में चन्द्र होगा तो छोटे भाई-बहन की शादी शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी यदि मीन राशि में चन्द्र होगा तो बड़े भाई बहन की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। यदि चन्द्र कर्क राशि में हो तो ऐसा व्यक्ति को कोई भी व्यक्ति अच्छा नहीं लगता (वहमी होता है)।

उपायः- 1. दूध का व्यापार न करें। 2. शहद मिट्टी के कुल्हड़ में भरकर वीराने में दबाएं। 3. नौकरानी रखें। 4. माता से चांदी की डिब्बी चावलों से भरी हुई लेकर अपने पास रखें। 5. चांदी के गिलास में दूध और पानी पिएं। 6. बुजुर्ग औरतों का आर्शीवाद लें।

चन्द्र खाना नं 2

यदि चन्द्र खाना नं 2 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति खुशदिल होता है। रोते हुए को हँसाने वाला होता है। पैतृक संपत्ति पाने वाला होता होता है। ऐसे व्यक्ति को सब इज्जत मान देते है। यदि चन्द्र वृष राशि में हो तो जायदाद सुख, वाहन सुख, माता का सुख सम्पूर्ण होगा। यदि कन्या राशि में होगा तो विदेश यात्रा करता है।

यदि चन्द्र खाना नं 2 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति धन की फिजूलखर्ची करने वाला, शराब पीने का आदी होगा। घर में या मन्दिर में घण्टियाँ, शंख या और किसी म्यूजिक को बजाकर पूजा करने वाला होता है। यादि चन्द्र वृश्चिक राशि में होगा तो पिता के सुख में कमी आएगी। यदि कर्क राशि में होगा तो धनहानि होगी। यदि मीन राशि में होगा तो शत्रु बनते रहते हैं।

उपायः- 1. घंटी घड़ियाल, शंख बजाकर पूजा न करें। 2. मकान की नींव में चांदी की ईट दबाएं। 3. शंख या सीपी में चावल भरकर सफेद कपड़े में लपेट कर चलते पानी में बहाएं। 4. गाय की सेवा करें।

चन्द्र खाना नं 3

यदि चन्द्र खाना नं 3 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति के घर में चोरी नहीं होती। भोले भण्डारी की तरह भोला लगता है। यात्राओं में रुचि रखने वाला, लम्बी आयु वाला, अपने भाई-बहनों की सेवा करने वाला और ऐसे व्यक्ति से मौत भी दूर भागती है। चन्द्र वृष राशि में होगा तो संतान सुख संपूर्ण होगा। चन्द्र कन्या राशि में होगा तो अच्छी सेहत का मालिक होगा। यदि मकर राशि में होगा तो अच्छे भाग्य वाला होगा।

यदि चन्द्र खाना नं 3 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति धन हानि करने वाला, यात्रा में हानि उठाने वाला, अनाथालाय में काम करने वाला होगा। चन्द्र वृश्चिक राशि में होगा तो बड़े-भाई बहन का सुख नहीं होता। यदि चन्द्र मीन राशि में हो टेवे वाले व्यक्ति

की अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। कर्क राशि में हो तो छोटे भाई-बहन के सुख में कमी होती है।

उपायः- 1. दूध चावल का दान करें। 2. सोमवार को कन्याओं को खीर खिलाएं।

चन्द्र खाना नं 4

यदि चन्द्र खाना नं 4 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति पैतृक कारोबार से लाभ उठाने वाला, जमीन जायदाद का सुख, वाहन का सुख होता है। जितना खर्च करता है उतना ही धन बढ़ता है। यदि चन्द्र कन्या राशि में हो धन कई गुना बढ़ता है और बड़े मामा-मौसी का सुख होता है। यदि चन्द्र मकर राशि में हो तो राजदरबार से लाभ होता है।

यदि चन्द्र खाना नं 4 में अशुभ होगा तो माता को दुखी करने वाला और उसका विरोध करने वाला होता है। अपने-आप अपनी धन और संपत्ति का नुकसान करता है। किसी के अच्छाई को न मानने वाला होता है। यदि चन्द्र वृश्चिक राशि में हो तो जन्म स्थान छोड़ने वाला होता है।

उपायः- 1. दूध का व्यापार न करें। 2. कपड़े का काम न करें। 3. किसी शुभ काम पर जाते समय दूध का या पानी का कुंभ सामने रखें। 4. घोड़े को चने की दाल खिलाएं। 5. शिवलिंग पर दूध चढ़ाएं।

चन्द्र खाना नं 5

यदि चन्द्र खाना नं 5 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति न्याय करने वाला, सरकारी कामकाज में विजय प्राप्त करने वाला, लम्बी आयु, सुखी संतान वाला, दया करने वाला, दूसरों को सलाह देने वाला, ऐसा व्यक्ति किसी के आगे झुकता नहीं है। (मर सकता है) अच्छी विद्या वाला होता है। यदि चन्द्र वृष राशि में हो तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि कन्या राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। यदि मकर राशि में होगा तो बड़े भाई बहन का सुख होता है। अच्छी आय होगी।

यदि चन्द्र खाना नं 5 में अशुभ होता है तो विद्या में रुकावट आती है। संतान द्वारा चिंतित रहता है। यदि चन्द्र वृश्चिक राशि में हो तो अपनी सेहत खराब हो जाती है और उसके पिता के जमीन जायदाद व वाहन का नुकसान होता है। अगर चन्द्र मीन राशि में हो तो मन्दा भाग्य की निशानी होती है और छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती।

उपायः- 1. सफेद कपड़े में चावल बांधकर जल प्रवाह करें। 2. छोटे बच्चों को खीर खिलाएं। 3. चांदी या मोती का दान करें।

चन्द्र खाना नं 6

यदि चन्द्र खाना नं 6 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति यात्रा अधिक करता है और दूसरों का हमदर्द होता है।

यदि चन्द्र खाना नं 6 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति को माता का सुख कम होता है। मानसिक रोगी होता है। यदि कर्क राशि का हो तो पेट में खराबी रहती है और जिगर रोगी होता है। शत्रुओं का भय लगा रहता है।

उपायः- 1. पानी दूध का दान न करें। 2. खरगोश की पालना करें। 3. अपना भेद किसी को न बताएं। 4. नानी की सेवा करें। 5. गुड़, सौंफ और चने की दाल ढ़ाई मीटर सफेद कपड़े में बांधकर दान करें।

चन्द्र खाना नं 7

यदि चन्द्र खाना नं 7 में शुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति के पास धन-दौलत खूब होता है। किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता। पत्नी सुंदर मिलती है। चन्द्र वृष राशि में अच्छे भाग्य की निशानी होती है। चन्द्र कन्या राशि में हो अच्छी शिक्षा ग्रहण करता है। और संतान सुख होता है।

यदि चन्द्र खाना नं 7 में अशुभ हो तो धन-दौलत की कमी होती है। दूसरी स्त्रियों पर नजर रखने वाला होगा। अपनी पत्नी

और माता का आपस में क्लेश रहता है। शराब का सेवन करने वाला होता है। चरित्र का अच्छा नहीं होता है। कर्क राशि में हो तो स्त्री से संबंध-विच्छेद भी हो सकता है। चन्द्र वृश्चिक राशि में हो छोटे भाई-बहनो के सुख में कमी आती है। मीन राशि में हो तो बड़े भाई-बहन के सुख में कमी आती है और पिता को धन हानि होती है।

उपायः- 1. 24वें या 25वें वर्ष में विवाह न करें। 2. शंख और सीपी में चावल भरकर सफेद कपड़े में लपेटकर जल प्रवाह करे। 3. चाल चलन ठीक रखें।

चन्द्र खाना नं 8

यदि चन्द्र खाना नं 8 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति माता का आज्ञाकारी, माता-पिता की सेवा करने वाला होता है। पैतृक संपत्ति का सुख पाने वाला होता है। शादी के बाद कारोबार में तरक्की पाने वाला होता है। तीर्थ स्थान की यात्रा करने वाला होता है।

यदि चन्द्र खाना नं 8 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति बुजदिल होता है दूसरों को धोखा देने वाला, जुआं खेलने वाला, पैतृक संपत्ति को नष्ट करने वाला, माता को कष्ट देने वाला, किसी ऊँची जगह से गिरता है। पानी में डूबने से डरने वाला, खांसी जुकाम का रोगी होता है।

उपायः- 1. माता से चांदी चावल लेकर सफेद कपड़े में बांधकर घर में रखें। 2. श्मशान से पानी लाकर उसमें चांदी डालकर घर में रखें। 3. बुजुर्गों की श्राद्ध करते रहें। 4. जुआ न खेलें। 5. सौंफ गुड़ चने की दाल सफेद डेढ़ मीटर कपड़े में लपेट कर नं 2 में यदि कोई ग्रह है तो धर्मस्थान में दें नहीं तो किसी गरीब को दान दें।

चन्द्र खाना नं 9

यदि चन्द्र खाना नं 9 में शुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य घड़े में भरे मोतियों जैसा होता है। जन्म चाहे किसी गरीब के घर हुआ हो ज्यों उम्र बढ़ती जाएगी धन आता जाएगा। समाज में

सम्मानित व्यक्ति, धर्म के काम में रुचि रखने वाला होता है। मनोवैज्ञानिक डाक्टर बन सकता है। तीर्थ-यात्रा करने वाला होता है। चन्द्र वृष राशि में हो तो बड़े भाई बहन का सुख और अच्छी सेहत वाला होता है। चन्द्र कन्या राशि में हो तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। स्त्री सुंदर होती है।

यदि चन्द्र खाना नं 9 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अपने बेवकूफी से दूसरों से धोखा खाता है। बेफिजूल इधर-उधर घूमता रहता है। धार्मिक स्थान के नाम से पैसे लेकर खाने वाला। यदि चन्द्र वृश्चिक राशि में हो तो विद्या में रुकावट, संतान सुख में कमी होती है। यदि चन्द्र मीन राशि में हो तो अपनी सेहत खराब रहती है और पिता को संपत्ति और वाहन का नुकसान होता है।

उपायः- 1. झूठ मत बोलें। 2. किसी का जूठा मत खाएं। 3. तीर्थ-यात्रा करते रहें। 4. अपने ईष्ट देव की चांदी की मूर्ति बनाकर धर्मस्थान में दें।

चन्द्र खाना नं 10

यदि चन्द्र खाना नं 10 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अपने बड़े-बुजुर्गों की इज्जत मान करने वाला होता है। अपने खानदान की मदद करने वाला होता है। व्यापार में लाभ प्राप्त करने वाला राजदरबार से लाभ पाने वाला होता है। हर किसी के बुरे वक्त में काम आने वाला होता है। जमीन जायदाद और वाहन का सुख होता है।

यदि चन्द्र खाना नं 10 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति दूसरों को धोखा देने वाला होता है। जमीन जायदाद और वाहन का सुख कम होता है। शराब पीने वाला होता है। राजदरबार से हानि पाने वाला होता है। कर्क राशि में हो तो पिता का सुख कम होता है। मीन राशि में हो तो धन हानि होती है। ऐसे व्यक्ति से कोई भी उधार लेकर वापिस नहीं करता।

उपायः- 1. रात को दूध न पिएं। 2. एक ही दिन पूरा परिवार जहां तक खून का संबंध हो सब इकट्ठे होकर 100

मजदूर (गरीबों) को खाना खिलाएं ये उपाय अवश्य करें। 3. चांदी जल प्रवाह करें। 4. दूध फाड़कर उसका पानी पीना शुभ होगा। 5. 400 ग्राम चावल में थोड़ा हल्दी डालकर और दूध से धोकर जल प्रवाह करें। 6. जुआ न खेलें। 7. श्मशान का पानी लेकर घर में रखें। 8. बुजुर्गों के श्राद्ध पर दान दें। 9. भैरों के मन्दिर में दूध दें।

चन्द्र खाना नं 11

यदि चन्द्र खाना नं 11 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति अच्छी बुद्धि वाला होता है। माता और संतान का सुख होता है। अच्छी शिक्षा होती है। यदि चन्द्र वृष राशि में हो अच्छी सेहत रहती है। पिता को जमीन जायदाद और वाहन का सुख होता है। यदि चन्द्र कन्या राशि में हो अच्छे भाग्य वाला होता है। ऐसे टेवे वाले व्यक्ति को प्रायः स्त्रियों से सहायता मिलती रहती है।

यदि चन्द्र खाना नं 11 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति प्रभात के समय कन्या दान लेने वाला या देने वाला होता है। किसी धर्म स्थान पर भी प्रभात के समय दान करने वाला होता है। पक्की शाम को गुरू से उपदेश सुनना या किसी को उपदेश देना नुकसानदायक होगा।

उपायः- 1. शुक्रवार को शादी न करें। 2. शनिवार को मकान बनाना शुरू मत करें। 3. प्रभात समय न दान लें और न दान दें। कन्या दान एक सबसे बड़ा दान होता है। इसलिए प्रभात समय अपने या अपने बच्चों के फेरे न लें। 4. पक्की सांय के समय गुरू से उपदेश लेना हानिकारक होगा और किसी को उपदेश देना भी हानिकारक होगा। 5. खोए के पेड़े 11-11 21 आदमियों में बांटें या चलते पानी में प्रवाह करें। 6. बुधवार को नया व्यापार, नौकरी शुरू न करें।

चन्द्र खाना नं 12

यदि चन्द्र खाना नं 12 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति कम पढ़ा-लिखा होने पर भी पढ़े-लिखों का बाप होगा। गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होगा। शत्रुओं पर विजय पाने वाला होगा। दयालु होगा। विदेश से लाभ पाने वाला होगा। कांटो पर भी सोने वाला होगा।

यदि चन्द्र खाना नं 12 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति की बातें मन की मन में ही रह जाती है। रात को नींद नहीं आती। दूसरों की चापलूसी करता रहता है। दरिद्र, आलसी होता है। भूतकाल को याद करके रोने वाला होता है। पैतृक संपत्ति को बरबाद करने वाला होगा। ऐसे व्यक्ति को पैतृक संपत्ति नहीं लेनी चाहिए। सास से बनती नहीं है या सास कष्ट में ही रहती है।

उपायः- 1. 12 ग्राम की चांदी की ठोस गोली रविवार रात को पानी में सारी रात उबलती रहे सुबह पानी कों फेंककर गोली अपने पास रखें। 2. वर्षा के पानी में चांदी का चौरस टुकड़ा डालकर घर की छत पर रखें। 3. शिवलिंग पर दूध चढ़ाए वर्ष में एक बार। 4. किसी, साधु फकीर को रोटी मत खिलाएं। 5. माता से चांदी की ईट लेकर घर में रखें। 6. रूपये पैसे का मन्दिर में दान न करें।

मंगल (हनुमानजी)

मंगल 2,6,10 राशि वृष, कन्या, मकर राशि में शुभ और 4,8,12 के राशि कर्क, वृश्चिक, मीन राशि में अशुभ होता है। मंगल बद संबन्धित वस्तुएं- हिरण, ऊँट
मंगल नेक संबन्धित वस्तुएं - सैनिक, चीता

मंगल खाना नं 1

मंगल खाना नं 1 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को मंगल की सभी अशियाँ का सुख मिलता है। मकान जायदाद का सुख पक्का इरादे वाला होता है। वादा पूरा करने वाला होता है। मकेनिक मशीन का काम करने वाला होता है। वीर पुरूष और किसी से न डरने वाला होता है। यदि मंगल कन्या राशि में हो तो व्यक्ति पराक्रमी और छोटे भाई-बहन का सम्पूर्ण सुख प्राप्त करने वाला होता है। यदि मकर राशि में हो और व्यक्ति श्याम रंग का हो तो जिन्दगी में काफी ऊँचाई तक तरक्की करता जाता है और बड़े भाई-बहन का भी सुख होता है।

यदि मंगल खाना नं 1 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अधिक गुस्सा करने वाला निर्दयी, सुस्त व्यक्ति होता है। यदि मेष राशि में मंगल हो तो तो माता के लिए हानिकारक होता है। यदि कर्क राशि का मंगल होता है तो शिक्षा में रूकावट आती है। और पिता के लिए हानिकारक होता है। राजदरबार से भी नुकसान होता है। बड़े भाई-बहन की शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होती है। संतान सुख में भी कमी होती है।

उपायः- 1. सौंफ किसी सरकारी प्रगाण में दबाएं। 2. 4 किलो ग्राम गुड़ चलते पानी में बहाएं। 3. पताशे 43 दिन लगातार या 43 हफ्ते लगातार या 43 महीने लगातार मंगलवार के दिन मन्दिर में रखें या गरीबों में बाँटें। 4. किसी से मुफ्त का सामान न लें। 5. हाथी दांत या उसका समान घर में न रखें।

मंगल खाना नं 2

यदि मंगल खाना नं 2 में शुभ हो तो उसके घर मेहमानों का ताँता लगा रहता है यानि हर दिन लंगर लगा रहता है। विवाह गृहस्थ-संतान का सुख होता है। यदि मंगल वृष राशि में हो तो अच्छी सेहत का मालिक होता है। उसके पिता के पास अच्छी जायदाद और वाहन होते है। यदि मंगल कन्या राशि में हो तो वाहन जायदाद का सम्पूर्ण सुख होता है। माता का भी सुख होता है। अच्छी किस्मत वाला होता है। धार्मिक होता है। यदि मंगल मकर राशि में हो तो संतान सुख होता है। अच्छी शिक्षा पाने वाला होता है।

यदि मंगल अशुभ होता है तो ऐसा व्यक्ति दूसरे के माल पर नजर रखने वाला होता है। धन-हानि होती रहती है। दूसरों को धोखा देने वाला होता है। यदि मंगल कर्क राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख नहीं होता। यदि मंगल वृश्चिक राशि में हो तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती है। यदि मंगल मीन राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख नहीं होता और पिता के सुख में भी कमी आती है। राजदरबार से भी हानि होती है।

उपायः- 1. 43 मंगलवार लगातार बूंदी के लड्डू बच्चों में बांटे। 2. पताशे मन्दिर के बाहर बच्चों में बांटे 43 मंगलवार लगातार। 3. मृगशाला पर रात को सोए।

मंगल खाना नं 3

मंगल खाना नं 3 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति को छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। पड़ोसी अच्छे मिलते हैं। मित्रों और जनता का सेवक होता है। युद्ध में जीतने वाला होता है। आर्मी सेना में या किसी फोर्स में काम करने वाला होता है। ससुराल वालों के लिए शुभ होता है। यदि मंगल वृष राशि में हो तो व्यक्ति बहुत धन एकत्रित करता है। बड़े मामा मौसी का सुख होता है। यदि कन्या राशि का मंगल हो तो संतान और शिक्षा का सम्पूर्ण सुख होता है। राजदरबार से लाभ पाने वाला होता है। व्यापार में भी लाभ होता है। यदि मंगल मकर

राशि का हो तो सेहत अच्छी रहती है। उसके पिता को भी जायदाद का सुख होता है।

यदि मंगल खाना नं 3 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति क्रोधी, धोखेबाज होता है। अपने आप अपना नुकसान करने वाला होता है। खुद के भाई मित्र ही उसका माल खा जाते है। यदि मीन राशि का मंगल हो तो जायदाद और वाहन सुख में कमी ही रहती है। माता का सुख भी कम होता है। बड़े भाई-बहन का सुख भी कम होता है। यदि मंगल कर्क राशि में हो तो ऐसे व्यक्ति की अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। तलाक तक हो जाता है।

उपायः- 1. हाथी दान्त अपने पास रखें। 2. चांदी का छल्ला डालें। 3. मिठाई गरीब बच्चों में प्रायः बांटते रहें। 4. बीमारी में जो दूध में धोकर चलते पानी में बहायें। 5. हाथी दान्त का काम करना भी शुभ होगा।

मंगल खाना नं 4

यदि मंगल खाना नं 4 में शुभ हो तो टेवे वाला व्यक्ति दूसरों का हित चाहने वाला होता है। जायदाद, वाहन से युक्त होता है। अच्छे दिल वाला होता है। यदि मंगल मेष, सिंह, धनु राशि में हो तो सगाई टूटने के आसार होते हैं। यदि वृष राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है। यदि कन्या राशि में मंगल हो तो बड़े भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है। यदि मंगल मकर राशि में हो तो धन-सम्पत्ति से भरपूर होता है। और शादी शुदा जिंदगी अच्छी से कटती है।

यदि मंगल खाना नं 4 में अशुभ हो तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति कठोर स्वभाव वाला होता है। यदि मंगल कर्क राशि में हो तो व्यक्ति की अपनी सेहत अच्छी नहीं रहती। और पिता को जमीन जायदाद और वाहन का नुकसान होता है। यदि मंगल वृश्चिक राशि में हो तो मन्द भाग्य की निशानी होती है और छोटे भाई-बहनों की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। मंगल वृश्चिक राशि में होने के कारण जीवनसाथी को छोटे भाई-बहन का सुख नहीं होता यदि मंगल मीन राशि में हो तो संतान सुख की कमी

होती है। और शिक्षा में भी रुकावट आती है।

उपायः- 1. 4 किलो ग्राम गुड़ की रेवड़ियाँ बहते पानी में डाले। 2. बंदर की सेवा करें। 3. माता की सेवा करें। 4. हाथी दाँत या हाथी दाँत का सामान घर या पास रखें। 5. जब भी कोई वस्तु खाएं या पिएं तो दाँतों को पानी से साफ करें यानि के दाँत हरदम साफ होने चाहिए। (ये उपाय कारगर है) 6. बीमारी के वक्त बड़ के पेड़ को दूध मीठा डालकर गीली हुई मिट्टी से तिलक करें। 7. शहद से मिट्टी का बर्तन भरकर श्मशान में दबाएं। 8.पक्षियों को कोई भी मीठा डालें।

मंगल खाना नं 5

यदि मंगल खाना नं 5 में शुभ होता है तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति की संतान सुखी रहती है। शान्त स्वभाव का होता है। ऐसे व्यक्ति के पूर्वजों में कोई डाक्टर या दवाइयों का काम करने वाला होता है। यदि वृष राशि का मंगल हो तो जातक को मकान का सम्पूर्ण सुख होता है। यदि मंगल कन्या राशि में हो तो जातक की स्त्री सुंदर व सुशील और शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि मंगल मकर राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है और व्यक्ति निडर पराक्रमी होता है।

यदि मंगल खाना नं 5 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति की संतान कष्ट में रहती है। क्रोधी होता है। धन का नाश करने वाला होता है। चाल-चलन का कच्चा होगा। यदि मंगल कर्क राशि में हो तो ऐसे व्यक्ति के छोटे भाई-बहन की शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। बड़े मामा मौसी का सुख नही होगा और धन हानि होती रहेगी। यदि मंगल वृश्चिक राशि में हो तो पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से हानि होगी। यदि मंगल मीन राशि में होगा तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी पिता को मकान-वाहन में हानि होगी।

उपायः- 1. रात को पानी सिरहाने रख कर सोएं और सुबह किसी गमले या पेड़ आदि में डाल दें। 2. चाल चलन

ठीक रखें। 3. छोटे-छोटे बच्चों को मिठाई बाँटें (स्कूली बच्चों को)।

मंगल खाना नं 6

यदि मंगल खाना नं 6 में शुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति की समाज में इज्जत सम्मान होता है। संतान का सुख होता है। दुश्मनों पर विजय पाने वाला होता है। धर्मवीर होता है। मंगल 6 वाले की कलम में तलवार से ज्यादा ताकत होती है। जैसे-जैसे मंगल 6 वाला तरक्की करेगा उसके भाई भी तरक्की करेंगे।

यदि मंगल खाना नं 6 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति की कोई भी इज्जत नहीं करेगा। संतान का सुख कम होगा। दुश्मन बनते रहते हैं। भाइयों की भी स्थिति अच्छी नहीं होती। कई बीमारियों से घिरा रहता है।

उपायः- 1. कच्ची कोठरी बनाकर उसमें कनक रखें। 2. छोटी कन्याओं को दूध और मिश्री दें। 3. अपनी बहन के पति की सेवा करें। 4. अखरोट कन्याओं में बाँटें मंगलवार को।

मंगल खाना नं 7

यदि मंगल खाना नं 7 शुभ में हो तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति साफ दिल होता है और बिरादरी का पालन करने वाला होता है। न्यायप्रिय होता है। स्त्री सुशील सुन्दर होती है। यदि मंगल कन्या राशि में हो तो वो अधिक धनवान होता है और किस्मत का सितारा जल्दी बुलंद होता है। बड़े मामा मौसी का सुख मिलता है। छोटे साले का भी सुख होता है। छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि मंगल मकर राशि में हो तो सन्तान का सुख होता है और पिता का भी सुख होता है। राजदरबार से भी लाभ होता है।

यदि मंगल खाना नं 7 में अशुभ होता है तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति बुरे विचारों वाला होता है। मित्र जातक का माल खा जाते हैं। शादी-शुदा जिंदगी का भी सुख कम होता है। यदि मंगल कर्क

राशि में हो तो मकान, वाहन के सुख में कमी होगी। बड़े भाई-बहन का सुख भी कम होगा। यदि मीन राशि में मंगल हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। जातक के गले में या बाजू में रोगा होता है। यदि मंगल सिंह राशि मे हो तो जातक को जीवनसाथी का दूसरे गाँव या शहर का जन्म होता है।

उपायः- 1. बहन को मीठा देते रहें। 2. ढ़ोलक तबला नहीं बजाना चाहिए। 3. चाँदी की इंटें घर में रखना। 4. छोटी सी दीवार बनाकर फिर गिरा देना शुभ होगा। 5. ताँबें का लोटा लेकर उसे बाहर से लाल रंग कर के फिर उसमें साबूत चावल भर कर गर्दन तक फिर लाल गुलाब के फूलों से ढ़क कर और जातक की पत्नी और आप दोनों लाल रंग के कपड़े पहन कर मंगलवार के दिन मन्दिर में हनुमान जी की मूर्ति के सामने रखें।

मंगल खाना नं 8

यदि मंगल खाना नं 8 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति स्त्री को संतुष्ट करने वाला होता है। शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। मुसीबतों में हँसने वाला होता है। शादी में अच्छी संपत्ति मिलती है।

यदि मंगल खाना नं 8 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति धोखेबाज होता है। भाई से नहीं बनती है। स्त्री से क्लेश रहता है। आग लगने का भय रहता है। धन हानि होती रहती है।

उपायः- 1. मीठी रोटी गुड़ वाली जो कि तन्दूर में बनी हो कुत्ते को खिलाएं। 2. मंगल खाना नं 7 का लोटे वाला उपाय करें। 3. गुड़ की रेवड़ियां जल प्रवाह करें।

मंगल खाना नं 9

यदि मंगल खाना नं 9 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अपने पैरों पर आप खड़ा होने वाला होता है। लड़ाई झगड़े में विजय पाने वाला होता है। यदि मंगल कन्या राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख होता है। उसके पिता एक अच्छे व्यापारी होते है। यदि

मंगल मकर राशि में हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है।

यदि मंगल खाना नं 9 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी किस्मत खुद खराब करता है। लड़ाई-झगड़े में हारने वाला होता है। नास्तिक होता है। यदि मंगल कर्क राशि का हो तो अपनी सेहत अच्छी नहीं रहती पिता को जायदाद और वाहन का नुकसान होता है।(सुख कम होता है।) यदि मंगल वृश्चिक राशि में हो तो धन हानि होती है और बड़े मामा-मौसी का सुख कम होता है। यदि मंगल मीन राशि में हो तो पिता को कष्ट होता है। पिता का सुख कम होता है। संतान का सुख भी कम होता है। शिक्षा में रूकावट आती है।

उपायः- 1. भाभी की सेवा करें। 2. मसूर की दाल को मन्दिर में दान करें। 3.200 ग्राम सौंफ मन्दिर में देना शुभ होगा।

मंगल खाना नं 10

यदि मंगल खाना नं 10 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति राजदरबार में उच्च पद पाने वाला होता है। समाज सेवक होता है। उसके जन्म से घर में बरकत होने लग जाती है। यदि मंगल वृष राशि में हो तो जमीन जायदाद वाहन का सुख होता है। धार्मिक होता है। छोटे भाई-बहन का शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि कन्या राशि में मंगल हो तो अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। संतान का सुख होता है। अच्छी बुद्धि वाला होता है।

यदि मंगल खाना नं 10 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति को राजदरबार से हानि होती है। अशुभ कर्म करने वाला होता है। यदि मंगल कर्क राशि मे हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। तलाक तक हो जाता है। पिता के सुख में कमी आ जाती है। यदि मंगल वृश्चिक राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। गले का रोग होता है। सरवाइकल दर्द होता है। यदि मंगल मीन राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होता है। उसके किसी एक बच्चे की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती।

उपायः- 1.कभी भी दूध उबालते वक्त गिरना नहीं चाहिए। 2. चाचा ताऊ को मीठा खिलाएं। 3. हनुमान जी को सिन्दूर चढ़ाएं। 4. मीठे पान मित्रो को खिलाएं गुलकन्द वाला।

मंगल खाना नं 11

यदि मंगल खाना नं 11 में शुभ हो तो ऐसे टेवे वाले व्यक्ति के मित्र धनवान होते है। अपने पैरों पर आप खड़े होने वाला होता है। बड़ों की इज्जत करने वाला होता है। शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता हैं। यदि मंगल वृष राशि में हो तो पिता का सुख होता है। राजदरबार से लाभ प्राप्त होता है लेकिन संतान सुख कम होता है। यदि कन्या राशि में हो अपनी सेहत अच्छी होती है। पिता को जायदाद और वाहन का सुख होता है। यदि मकर राशि में हो तो अच्छी किस्मत वाला होता है। धन एकत्रित करने वाला होता है। बड़े मामा-मौसी का सुख होता है।

यदि मंगल खाना नं 11 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति को धन नुकसान होता रहता है। और कर्जदार हो जाता है। यदि मंगल कर्क राशि में हो तो छोटे भाई बहन का सुख कम होता है। यदि मंगल वृश्चिक राशि में हो तो माता का सुख कम होता है। जायदाद और वाहन का भी नुकसान होता है। यदि मंगल मीन राशि में हो तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। पत्नी रोगी रहती है।

उपायः- 1. मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर दबाना। 2. भाई को मिठाई खिलाएं। 3. खाना नं 7 का लोटे वाला उपाय करें।

मंगल खाना नं 12

यदि मंगल खाना नं 12 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति मेहमान नवाजी करने वाला होता है। मिलनसार होता है। बुजुर्गों की सेवा करने वाला होता है। यदि वृश्चिक राशि का मंगल हो तो विदेश में शिक्षा प्राप्त करता है।

यदि मंगल खाना नं 12 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति के बने बनाए काम बिगड़ जाते है और अहसान फरामोश होता है। ऐसे व्यक्ति के घर में जंग लगे हथियार या औजार पड़े होते है। यदि मंगल सिंह राशि में हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती या सगाई टूट जाती है। मेष, धनु राशि में मंगल हो तो शादी शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती या सगाई टूट जाती है। सिंह राशि का मंगल होने से छोटे भाई-बहन के सुख में कमी आती है।

उपायः- 1. घर में या घर के छत पर जंग लगा हथियार मत रखें। 2. छोटे-छोटे बच्चों को दूध वाला देशी घी का हलवा ड्राई फ्रूट डालकर खिलाएं। 3. खाना नं 7 का लोटे वाला उपाय करें। 4. 1200 ग्राम पताशे मन्दिर में मंगलवार को देना शुभ होगा। 5. पानी में नीम के पत्ते मिलाकर सूर्य को देना। 6.हनुमानजी का श्रंगार केसर चाँदी के वर्क चमेली या आँवले के तेल से करना, लंगोट देना।

बुध (दुर्गा माता)

बुध 3, 7, 11 मिथुन, तुला, कुम्भ राशि में शुभ और 1, 5, 9 मेष, सिंह, धनु राशि में अशुभ होता है।
बुध संबन्धित वस्तुएं- तोता, बकरी, चमगादड, कन्या, ढ़ोलक, तबला और सितार

बुध खाना नं 1

बुध खाना नं 1 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति सलाहकार होता है। गुप्त विद्याओं का ज्ञाता होता है। अपनी तबीयत का मालिक होगा। राजदरबार से लाभ प्राप्त करेगा। धन-दौलत वाला चालाक होगा। कभी क्रोधी कभी नरम होगा। यदि बुध मिथुन राशि में हो तो जायदाद वाहन का सुख सम्पूर्ण होता है। माता का भी सुख होता है। अपनी सेहत अच्छी रहती है। यदि तुला राशि का बुध होगा बहुत ही अच्छी किस्मत वाला होगा यदि कुम्भ राशि का होगा तो अच्छी शिक्षा से युक्त होगा। संतान का सुख होगा। बुध की सभी आशियों का सुख होगा।

यदि बुध खाना नं 1 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति के दाँत कम होते हैं। मानहानि का भय होगा। शरारती चालाक होगा। ससुराल, संतान का सुख कम होगा। यदि बुध मेष राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। खुद रोगी होगा। यदि बुध सिंह राशि में हो तो धन का नुकसान, आय कम होगी। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। अपने बच्चे की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। जितना बड़ा व्यापारी हो जिंदगी में एक बार जीरो ही जाएगा। यदि धनु राशि मे बुध हो तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती या शादी बहुत देर से होती है। पिता का सुख कम व्यापार में तबदीली होती है। राजदरबार से नुकसान होता है। मंगल की अशियों पर बुरा असर डालेगा।

उपायः- 1. तबला न बजाएं 2. अण्डा न खाएं 3. साली का साथ न करें। 4. हरे रंग से परहेज करें। 5. अण्डा उबाल कर बिना काटे कौओं को खिलाएं।

बुध खाना नं 2

यदि बुध खाना नं 2 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति हाजिर जवाब वाला होता है। अपने आप पर विश्वास रखने वाला होता है। अधर्मी से नफरत करने वाला होता है। दुश्मनों पर विजय पाने वाला होता है। ससुराल के लिए अच्छा होता है। यदि बुध मिथुन राशि में हो तो धनवान होगा और बड़े मामा-मौसी का सुख होगा और संतान सुख भी होगा। अच्छी शिक्षा का ज्ञाता होगा। कम्प्यूटर अर्थशास्त्र और गणित का ज्ञाता होगा। छोटी उम्र में व्यापार करेगा या और किसी ढंग से धन कमाएगा। यदि बुध तुला राशि में होगा अच्छी सेहत होगी। पिता का सुख होगा पिता के पास जमीन जायदाद वाहन होगा। राजदरबार से लाभ प्राप्त होगा। यदि बुध कुंभ राशि में होगा तो अच्छी किस्मत वाला होगा। धार्मिक होगा।

यदि बुध खाना नं 2 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति मतलब-परस्त, खुदगर्ज होगा। जुआ खेलने का आदी होगा। लड़की बहन, मौसी, बुआ, साली इनमें से कोई न कोई परेशानी भरी जिंदगी बिता रही होगी। शुक्र की अशियों पर बुरा असर डालेगा। यदि बुध मेष राशि में हो तो माता के सुख में कमी होगी। अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। यदि सिंह राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। यदि धनु राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय भी कम होगी।

उपायः- 1. चाँदी का दान करें धर्म स्थान पर। 2. चावल का दान करें धर्म स्थान पर। 3. दूध का दान करें धर्म स्थान पर। 4. नाक छेदन कराएं। 96 दिन तक उसमें चाँदी की तार या सफेद धागा डालकर रखें। 5. घर में निवार के गोले मत रखें।

बुध खाना नं 3

यदि बुध खाना नं 3 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति छोटे भाई-बहन से युक्त होता है। यात्रा करने वाला, शेर जैसे दाँत होंगे। धन का अभाव नहीं होता। दमा के मरीजों का डाक्टर होगा। यदि बुध तुला राशि में हो अधिक धनवान होता है। बड़े मामा

मौसी का सुख होता है। एक अच्छा व्यापारी होता है, या कलाकार होता है। बड़े भाई-बहन का सुख होता है। उसके पिता भी एक व्यापारी होते हैं। यदि कुंभ राशि में हो तो पिता का सम्पूर्ण सुख होता है। राजदरबार से लाभ. प्राप्त होता है। अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। स्त्री लम्बी, ऊँची और सुंदर होती है।

यदि बुध खाना नं 3 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरों के लिए भी अशुभ होता है। जबान में थुथलापन होगा। जगह-जगह भटकने वाला होगा। यदि बुध मेष राशि में होगा। संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट होगी। वेवकूफ कम अक्ल का होगा। यदि बुध सिंह राशि में हो तो जायदाद वाहन का सुख कम होगा। माता का सुख कम होगा। दुर्घटना का भय होगा। अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1. हर रोज फिटकरी से दाँत साफ करें। 2. रात के वक्त मूँग साबुत को पानी में भिगोकर सुबह जानवरों को डालें। 43 दिन लगातार डालें। 3. ढ़ाक के चौड़े पत्ते दूध में धोकर एक गढ़्ढे में डालकर उसके ऊपर पत्थर रखें। पत्थर का रंग खाना नं 9 और 11 के ग्रह के रंग विपरीत न हो। जिससे गढ़्ढा खोदें और दूध का बर्तन वहीं पर छोड़ दें। घर वापस न लाएं। 4. पीले रंग की कोड़िया जलाकर उसकी राख दरिया में डालें। 5. बकरी का दान करें। 6. परिन्दों का दाना डालें।

बुध खाना नं 4

यदि बुध खाना नं 4 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरों की मुसीबत अपने ऊपर लेने वाला होता है। राजदरबार से लाभ प्राप्त होता है। जायदाद, वाहन से युक्त होता है। लम्बी आयु वाला होता है। यदि बुध तुला राशि में हो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। विदेश यात्रा करने वाला होता है। मिथुन राशि में बुध हो तो वाहन जायदाद का सुख होता है और शादी-शुदा जिंदगी भी अच्छी होती है यदि बुध कुंभ राशि का हो तो बड़े भाई-बहन का सुख होता है आय भी अच्छी होती है। परिवहन

संबंधी व्यापार करता है।

यदि बुध खाना नं 4 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की माता का सुख कम होता है। दूसरों को सलाह देने से अपना हाल मन्दा हो जाता है। बुजदिल होता है।किसी विधवा औरत का साथ होता है। यदि मेष राशि में होगा तो मन्दे भाग्य की निशानी होगी। सिंह राशि में बुध होगा तो संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। मन्द बुद्धि होगा। व्यापार में नुकसान होता रहेगा। चन्द्र की अशियाओं को नुकसान करेगा।

उपायः- 1. घर में तोता बकरी न रखें। 2. 101 ढ़ाक के पत्ते दूध में धोकर जल-प्रवाह करें। 3. 400 ग्राम गुड़ रविवार को बहते पानी में डालें। 4. कन्याओं को दूध पिलाएं।

बुध खाना नं 5

यदि बुध खाना नं 5 में शुभ हो तो ऐसा टेवा वाले व्यक्ति के मुँह से निकला हुआ (अचानक) वाक्य ब्रम्ह वाक्य होगा। अच्छे चरित्र वाला होगा। ज्योतिष में रूचि रखने वाला होगा। यदि बुध मिथुन राशि में होगा बुद्धिमान होगा, उच्च शिक्षा पाने वाला होगा। सोच-समझ कर काम करने वाला होगा। यदि बुध तुला राशि में होगा जायदाद, वाहन, या मकान का सुख होगा। अपनी सेहत अच्छी होगी। यदि बुध कुंभ राशि में होगा तो किस्मत जल्दी चमकेगी। छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी।

यदि बुध खाना नं 5 में अशुभ होगा तो ऐसे टेवे वाला व्यक्ति कम शिक्षा प्राप्त करने वाला होगा। संतान का सुख कम होगा। कम बुद्धिवाला होगा। यदि बुध मेष राशि का हो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से हानि होगी। कारागार तक जा सकता है। यदि बुध सिंह राशि का हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा, डरपोक होगा। यदि बुध धनु राशि में हो तो बड़े मामा-मौसी का सुख कम होगा व्यापार में हानि होगी। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा।

उपायः- 1. चाँदी का छल्ला बिना जोड़ का पहनें। 2. बाँस का वृक्ष नहीं लगाएं। 3. गले में तांबे का पैसा डालें।

बुध खाना नं 6

यदि बुध खाना नं 6 में शुभ होगा तो टेवे वाला व्यक्ति छापेखाना, कागज वगैरह का काम करता है। लेकिन दिमागी कारोबार (दलाल) का काम शुभ होगा। दुश्मनों पर विजय पाने वाला होगा। जबान का बोला हुआ शब्द अच्छा या बुरा जरूर पूरा होगा।

यदि बुध खाना नं 6 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति नमक हराम होगा। अपने पैर पर खुद कुल्हाड़ी मारता है। चमड़ी का रोगी होगा। छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा।

उपायः- 1. मिट्टी के बर्तन में दूध भर कर वीराने में दबाएं। 2. गंगाजल बोतल में भरकर खेती-बाड़ी जमीन पर दबाएं। 3. चाँदी का छल्ला बिना जोड़ का पहनें।

बुध खाना नं 7

यदि बुध खाना नं 7 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति दूसरो के लिए पारस होता है। कलम में तलवार की ताकत होती है। बुढ़ापा अच्छा गुजरता है। यदि बुध मिथुन राशि में हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। औरत वफादार होती है। पिता का सुख होता है। राजदरबार से लाभ होता है। तुला राशि में बुध हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। कुंभ राशि में बुध हो तो बड़े भाई बहन का सुख होता है। अच्छी आय होती है। अच्छा व्यापारी होता है। बड़े मामा-मौसी का सुख होता है। पैसा एकत्रित करने वाला होता है।

यदि बुध खाना नं 7 में अशुभ होगा तो किस्मत रेत की पहाड़ की तरह होती है। गृहस्थ जीवन अच्छा नहीं होता। उसकी बहन बुआ साली सब बरबाद या दुखी होगी। यदि बुध मेष राशि में हो छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। यदि बुध सिंह राशि में हो तो बड़े भाई-बहन की शादी-शुदा

जिंदगी अच्छी नहीं होती। संतान का सुख कम होता है। शिक्षा में रूकावट आती है। यदि बुध धनु राशि में हो तो माता का सुख कम होता है। अपनी शादी-शादी जिंदगी अच्छी नहीं होती। वाहन और मकान का सुख कम होता है।

उपायः- 1. छोटी कन्याओं की सेवा करना। 2. काले रंग की गाय की सेवा करना। 3. ब्याज पर पैसे नहीं देना चाहिए।

बुध खाना नं 8

यदि बुध खाना नं 8 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति विद्वान होता है। ज्योतिष विद्या में रूचि रखने वाला होता है। संतान सुख होगा। माता की उम्र लम्बी होगी। राजदरबार से लाभ होता है। समाज में इज्जत होती है।

बुध खाना नं 8 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति को सांझेदारी के काम में नुकसान उठाना पड़ता है। ससुराल मन्दा होता है। मानहानि होने का भय होता है। व्यापार चलते-चलते अचानक आधा हो जाता है। बुध मीन राशि में हो तो बहुत ज्यादा ही अशुभ होता है। बुध की जानदार अशियाँ बरबाद होती है। माता का सुख कम होगा। बहुत अच्छा व्यापारी हो तब भी शून्य हो जाता है।

उपायः- 1. मिट्टी के कुल्हड़ में चीनी भरकर वीराने में दबाएं। 2. धर्मस्थान (पूजा) न बदलें। 3. खोए के पेड़े (बिना मीठे के) कुत्ते को खिलाएं या चलते पानी में बहाएं 4. तांबे के लोटे में मूंग साबूत भरकर चलते पानी में बहाएं। 5. लड़की की नाक में चांदी का छल्ला डालें। 6. आटे में गुड़ डालकर भैंस को या मछलियों को खिलाएं। 7. मशरूम मिट्टी के बर्तन में भरकर धर्मस्थान पर रखें।

बुध खाना नं 9

यदि बुध खाना नं 9 में शुभ होगा तो खानदान की सेवा करने वाला होता है। धार्मिक होता है। यदि बुध मिथुन राशि में हो तो अपनी सेहत अच्छी होती है। भाग्य छोटी उम्र में चमकता

है। बुध तुला राशि का हो संतान सुख होता है। अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। कुंभ राशि का हो जमीन जायदाद वाहन का सुख होता है। माता का सुख होता है।

यदि बुध खाना नं 9 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति दूसरों की गुलामी करने वाला होता हैं। जुबान में थुथलापन होता है। वादे का कच्चा होगा। यदि मेष राशि का होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। धन और आय में नुकसान होगा। सिंह राशि में होगा अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से हानि होगी। धनु राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। डरपोक होगा।

उपायः- 1. हरे रंग से परहेज करें। 2. लोहे की गोली को लाल रंग करके अपने पास रखें। 3. दरिया में कपड़े धोकर पहनें। 4. मिट्टी के बर्तन में मशरूम भरकर धर्म स्थान पर रखें। 5.घर के तह में चाँदी दबाएं। 6. नाक छेदन कराएं। 7. फकीर से या किसी साधु से ताबीज नहीं लेना चाहिए।

बुध खाना नं 10

यदि बुध खाना नं 10 में शुभ हाता हो तो ऐसा व्यक्ति चालाक, चतुर समुन्द्र की यात्रा करने वाला होता है। मीठी-मीठी बातें करने वाला होता है। नीति-शास्त्र का ज्ञाता, यदि बुध मिथुन राशि में हो तो पिता का सुख अच्छा होता है। राजदरबार से लाभ होता है। ठेकेदारी का काम करता है। अपनी सेहत अच्छी होती है। कन्या राशि में बुध हो तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। पिता का सुख होता है। यदि बुध तुला राशि में हो तो छोटे साले का साथ होता है। अपनी किस्मत खुद बनाता है। यदि बुध कुंभ राशि में हो तो व्यक्ति धनवान होता है। रूपए पैसे की बचत करने वाला, बड़े मामा-मौसी का सुख होता है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है। संतान सुख होता है। बुद्धिमान होता है।

यदि बुध खाना नं 10 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति जुबान का चस्कोरा होता है। शराबी मांसाहारी होता है। यदि बुध मेष

राशि का हो छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। राजदरबार से हानि उठानी पड़ती है। डरपोक होता है। सिंह राशि में हो बड़े भाई-बहन का सुख कम होता है। आय कम होती है। धनु राशि में यदि बुध हो तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नही होती। माता का सुख कम होता है। जमीन जायदाद और वाहन का सुख भी कम होता है।

उपायः- 1. गाय को हरा चारा खिलाएं। 2. शराब मांस का सेवन न करें।

बुध खाना नं 11

यदि बुध खाना नं 11 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति के उंगलियों के नाखून गोल होते हैं। हाथ का हुनरमंद होता है। और शर्मीला होता है। संतान पढ़ी लिखी होती है यदि मिथुन राशि का बुध हो तो बड़े भाई-बहन का सुख होता है। अच्छा व्यापारी होता है। धनवान होता है। बड़े मामा-मौसी का सुख होता है। यदि बुध तुला राशि का हो तो राजदरबार से लाभ होता है। पिता का सुख होता है। अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि बुध कुंभ राशि का हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है।

यदि बुध खाना नं 11 मे अशुभ हो तो भाई-बहन से विरोध होता है। अपने पैरो पर खुद ही कुल्हाड़ी मारता है। यदि किसी साधु से धागा या ताबीज ले ले तो बुध और अशुभ हो जोता है। जातक को जीरो कर देता है। यदि बुध मेष राशि में हो अपनी सेहत अच्छी नहीं रहती। जमीन जायदाद वाहन का सुख कम होता है। माता का भी सुख कम होता है। माँ-बाप में हमेशा क्लेश होता रहता है। यदि बुध सिंह राशि में हो तो बदकिस्मत होता है। बुध की जानदार अशियों का विरोध पाता है। धनु राशि में बुध हो तो शिक्षा में रूकावट आती है। संतान सुख में थोड़ी कमी आती है।

उपायः- 1. नाक छेदन करवाना। 2. गले में तांबे का पैसा डालना शुभ होगा। 3. किसी फकीर या साधु से ताबीज या धागा न लें। 4. लोहे की लाल रंग की गोली अपने पास रखें। 5. फिटकरी से दांत साफ करें।

बुध खाना नं 12

यदि बुध खाना नं 12 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति सोच-समझकर काम करने वाला होता है। ज्योतिष विद्या में रूचि रखने वाला होता है। यहाँ पर शुभ बुध अमृत का भरा हुआ तालाब होता है। जो मुर्दो को भी जीवित कर दे। इज्जत तथा सांसारिक यश होता है।

यदि बुध खाना नं 12 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति बुद्धिमान नहीं होता। शेखचिल्ली की तरह होता है। रात की नींद उजड़ जाती है। मतलबी और चिड़चिड़ा होता है।

उपायः- 1. कोरा घड़ा पानी में बहाए बिना ढक्कन का। 2. स्टील या लोहे के दो छल्ले लेकर किसी दरिया या नदी के किनारे जाकर एक छल्ला जल में डाल दें एक खुद पहन लें। (छल्ला बेजोड़ होना चाहिए) 3. नाक छेदन कराएं।

शुक्र (लक्ष्मी माता)

शुक्र 4, 8, 12 कर्क, वृश्चिक, मीन राशि में शुभ और 2, 6, 10 वृष, कन्या, मकर राशि में अशुभ होता है।
शुक्र संबन्धित वस्तुएं स्त्री, गाय

शुक्र खाना नं 1

यदि शुक्र खाना नं 1 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति किसी पर कुर्बान होगा तो उस पर अपना सब कुछ कुर्बान कर देता है। यदि किसी के खिलाफ हो जाए तो उसकी मिट्टी भी खराब कर देता है। हँसमुख होता है। यदि शुक्र कर्क राशि में हो तो आय अच्छी होती है। जमीन जायदाद वाहन का सुख होता है। माता का भी सुख होता है। बड़े भाई-बहन का सुख होता है। यदि मीन राशि का हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है।

यदि शुक्र खाना नं 1 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरी औरतों से इश्कबाजी करके अपनी सेहत खराब करता है। स्त्री का स्वास्थ्य कमजोर होता है। विवाह में देरी होती है। यदि शुक्र वृष राशि में हो तो व्यक्ति रोगी होता है। यदि शुक्र कन्या राशि में हो तो व्यक्ति धन हानि करता है। मन्दे भाग्य की निशानी होती है। यदि शुक्र मकर राशि में हो तो पिता का सुख कम होता है। राजदरबार से हानि होती है। शिक्षा में रुकावट आती है। संतान का सुख कम होता है।

उपायः- 1. पराई स्त्री से सम्पर्क न रखें। 2. गौ मूत्र की खुराक मददगार होगी। 3. सत्नाजा का दान करना शुभ होगा।(जिसमें चरी का होना आवश्यक है) 4. 25वें वर्ष में विवाह मत करना।

शुक्र खाना नं 2

यदि शुक्र खाना नं 2 शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति मेहनतकश उत्साही होगा। धनवान होगा। कलाकार होगा। सुन्दर-सुन्दर पोशाक और इत्र का शौकीन होगा। अच्छा व्यापारी होगा। यदि

शुक्र कर्क राशि में होगा उच्च शिक्षा प्राप्त होगी। संतान सुख होगा। यदि शुक्र वृश्चिक राशि में हो तो अच्छा स्वास्थ्य होगा। पिता सुखी होगा। यदि शुक्र मीन राशि में हो तो छोटे साले से युक्त होगा। अच्छी किस्मत होगी। माता का सुख होगा। जमीन जायदाद का सुख होगा। वाहन का सुख होगा।

यदि शुक्र खाना नं 2 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति आलसी होगा। संतान सुख कम होगा। स्त्री दुखी होगी। यदि शुक्र वृष राशि में होगा तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। दो शादी भी हो जाती है। यदि कन्या राशि में हो छोटे भाई बहन का सुख कम होता है। पिता के सुख में कमी आती है। राजदरबार से हानि होती है। यदि शुक्र मकर राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होता है। आय भी कम होती है।

उपायः- 1. 2 किलो आलू उबाल कर हल्दी से पीला करके गाय को खिलाएं। 2. 2 किलो गाय का घी धर्मस्थान पर दें। 3. कपूर धर्मस्थान पर दें या कपूर का हवन करें।

शुक्र खाना नं 3

यदि शुक्र खाना नं 3 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की स्त्री भाग्यवान होती है और उसके घर चोरी नहीं होती। स्त्री हर वक्त साथ निभाने वाली होती है। तीर्थ यात्रा करने वाला होता है। यदि शुक्र कर्क राशि में होगा अपना स्वास्थ्य अच्छा होगा। यदि शुक्र वृश्चिक राशि में होगा धनवान और धन संचय करने वाला होता है। यदि शुक्र मीन राशि का होगा पिता का सुख होगा। राजदरबार से लाभ होगा। अच्छा व्यापारी होगा।

यदि शुक्र खाना नं 3 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की स्त्री से बनती नहीं है। क्लेश रहता है। पूरे परिवार का स्वास्थ्य खराब रहता है। ढोल, तबले बजाता होगा। लखपति होते हुए भी रोटी मेहनत से नसीब होगी। यदि शुक्र वृष राशि में होगा छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। शुक्र कन्या राशि में होगा माता का सुख कम होगा। जमीन जायदाद का सुख कम होगा। वाहन का सुख कम होगा। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय

कम होगी। मकर राशि का होगा। अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी।

उपायः- 1. तबले ढ़ोल न बजाए। 2. बीमारी के वक्त लाल दवाई या दही से गुप्तांग धोएं। 3.गाय की सेवा करें।

शुक्र खाना नं 4

यदि शुक्र खाना नं 4 में हो तो ऐसा व्यक्ति खेती बाग बगीचे का शौकीन होगा। वाहन से युक्त होगा। माता की सेवा करने वाला होगा। यदि शुक्र कर्क राशि में होगा, धनवान होगा। बड़े मामा-मौसी का सुख होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। पत्नी साथ निभाने वाली होगी। यदि शुक्र वृश्चिक राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। पिता का सुख होगा। राजदरबार से लाभ प्राप्त होगा। यदि शुक्र मीन राशि हो तो आय अच्छी रहेगी। बड़े भाई-बहन का सुख होगा।

यदि शुक्र खाना नं 4 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति का एक ही समय दो औरतों के साथ संबंध होगा। नशे का आदी होगा। सास बहू की आपस में नहीं बनेगी। मतलबपरस्त होगा। यदि वृष राशि में हो तो किस्मत मन्दी होगी। दुर्घटना का भय होगा। यदि शुक्र कन्या राशि में हो विदेश यात्रा करेगा। शिक्षा में विघ्न होगा। संतान सुख कम होगा। यदि शुक्र मीन राशि में होगा। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय मन्दी होगी।

उपायः- 1. आड़ू की गटक में सूरमा भरकर दबाना शुभ होगा। 2. अपनी स्त्री से दो बार विवाह करना शुभ होगा। 3. गाय का दान करना। 4. मकान की दहलीज ठीक ठाक रखना।

शुक्र खाना नं 5

यदि शुक्र खाना नं 5 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अधिक काम वासना वाला होता है। संगीत प्रेमी, और सफल प्रेमी होता है। जब तक पत्नी जिंदा होगी आय कभी मन्दी नहीं होगी। अच्छा चाल-चलन वाला होगा तो अच्छी किस्मत होगी। यदि शुक्र कर्क

राशि में हो तो पराक्रमी होगा। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। यदि शुक्र वृश्चिक राशि में होगा जमीन, जायदाद, वाहन का सुख होगा। माता का सुख होगा। यदि शुक्र मीन राशि में हो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी।

यदि शुक्र खाना नं 5 में अशुभ हेगा तो ऐसा व्यक्ति जुंआ खेलने वाला होगा। ससुराल से दुखी, धोखेबाज, किस्मत पेड़ में फँसे पतंग की तरह होगी। यदि शुक्र वृष राशि में हो तो संतान का सुख कम होगा। पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से नुकसान होगा। यदि शुक्र कन्या राशि में हो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। रोगी होगा। यदि शुक्र मकर राशि में हो तो धन हानि होगी। किस्मत मन्दी होगी।

उपायः- 1. बीमारी के समय गुप्तांग दही से धोएं। 2. प्रेम विवाह न करें।

शुक्र खाना नं 6

यदि शुक्र खाना नं 6 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओं पर विजय पाने वाला होगा। बहन और मामा के लिए शुभ, औरतों की तारीफ करने वाला होता है। राजदरबार से लाभ होता है। ससुराल से अच्छे संबंध होते हैं।

यदि शुक्र खाना नं 6 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति गरीबों की बदुआ लेने वाला होगा। दूसरी औरतों पर पैसे खर्च करने वाला होता है। चमड़ी रोग होता है। राजदरबार से हानि उठाने वाला होगा। ससुराल से संबंध ठीक नहीं होंगे।

उपायः- 1. औरत को शान से रखें। 2. औरत के बालों में सोने के क्लिप लगाएं। 3. चाँदी की ईंटें घर में रखें। 4. कन्याओं को दूध पिलाएं। 5. औलाद सुख के लिए गुप्तांग लाल दवाई से धोएं। 6. स्त्री नंगे पैर न चले।

शुक्र खाना नं 7

यदि शुक्र खाना नं 7 शुभ हो तो व्यक्ति का गृहस्थ जीवन

सुखी होता है। विवाह 25वें वर्ष में शुभ होता है। यदि शुक्र कर्क राशि में हो तो राजदरबार से लाभ, व्यापार में लाभ, पिता का सुख, संतान का सुख, अच्छी शिक्षा होती है। यदि शुक्र वृश्चिक राशि में हो तो व्यक्ति की अपनी सेहत अच्छी रहती है। मीन राशि में शुक्र हो तो धनवान, पैसे एकत्रित करने वाला होता है। बड़े मामा-मौसी का सुख होता है। किस्मत का धनी होता है।

यदि शुक्र खाना नं 7 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की स्त्री रोगी होती है। इश्कबाजी में धन का नुकसान करता है। धन चोरी का भय होता है। खुदगर्ज होता है। यदि शुक्र वृष राशि में हो तो पत्नी रोगी होती है। इधर-उधर भटकता रहता है। कन्या राशि मे शुक्र हो तो डरपोक होता है। छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। आय कम होती है। यदि शुक्र मकर राशि में हो बड़े भाई-बहन का सुख कम होता है। आय कम होती है। वाहन दुर्घटना का भय होता है। जमीन जायदाद का सुख कम होता है। माता का सुख कम होता है।

उपायः- 1. गाय की सेवा करना। 2. कांसे का बर्तन ससुराल से लेना विवाह के समय। 3. पत्नी की बीमारी के वक्त वजन बराबर ज्वार मंदिर में देना। 4. सात रोटी सब्जी के साथ किसी साधु को दें। शुक्रवार के दिन शुभ होगा।

शुक्र खाना नं 8

यदि शुक्र खाना नं 8 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की औरत की जुबान का लब्ज पत्थर की लकीर होती है। जो बुरा कहेगी फौरन सच साबित होगा। नेक बात की कोई शर्त नहीं। धनवान होगा। रहन-सहन अच्छा होगा। ऐशो आराम की जिंदगी होगी।

यदि शुक्र खाना नं 8 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की कोई भी बात नहीं सुनता। खुद ही बोलकर थककर बैठ जाता है। औरत शक्की स्वभाव की होती है। शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होती।

उपायः- 1. गन्दे नाले में तांबे का पैसा डालना शुभ होगा। 2. गन्दे नाले में फूल डालना शुभ होगा। 3. मन्दिर में बाहर से ही सिर झुकाना शुभ होगा। 4. औरत की हर बात मानना। 5. सफेद चरी (ज्वार) बाहर वीराने में दबाना। 6. किसी से मुफ्त का माल न लेना। 7. गऊ की सेवा करना।

शुक्र खाना नं 9

यदि शुक्र खाना नं 9 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति का धन-दौलत बढ़ता है। अक्लमंद होता है। तीर्थयात्रा करने वाला होता है। समाज सेवक (धार्मिक) होता है। यदि शुक्र कर्क राशि मे हो सुंदर सुशील पत्नी मिलती है। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि वृश्चिक राशि में हो तो पराक्रमी होता है। छोटे भाई-बहन का सुख होता है। यदि शुक्र मीन राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख होता है। अच्छी आय होती है। जमीन, जायदाद, वाहन का सुख होता है। माता का सुख भी होता है।

यदि शुक्र खाना नं 9 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति आलसी होता है। गृहस्थ जीवन अच्छा नहीं होता। छोटी उम्र में नशा करने लगता है। भाई-बहन के लिए अशुभ होता है। यदि शुक्र वृष राशि में हो तो धन हानि होती रहती है। यदि शुक्र कन्या राशि में हो पिता का सुख कम होता है। राजदरबार से हानि उठानी पड़ती है। संतान सुख कम होता है। शिक्षा में रूकावट आती है। यदि शुक्र मकर राशि में हो दुश्मनों से दुखी रहता है। अपनी सेहत अच्छी नहीं होती।

उपायः- 1. नीम की पेड़ मे सुराख करके चांदी के चौकोर टुकड़े दबाना शुभ होगा। 2. मकान की नींव में चांदी के बर्तन में शहद भरकर दबाना शुभ होगा। 3. स्त्री को चांदी की चूड़ी ऊपर से लाल रंग करके पहनाएं।

शुक्र खाना नं 10

यदि शुक्र खाना नं 10 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति चालाक, होशियार होता है। संगीत प्रेमी होता है। बाग-बगीचों में रूचि

रखने वाला होता है। हुनरमंद होता है। यदि शुक्र कर्क राशि में हो अपनी सेहत अच्छी रहती है। यदि शुक्र वृश्चिक राशि में हो तो अच्छी किस्मत वाला होता है। जमीन-जायदाद वाहन का सुख होता है। यदि मीन राशि में हो तो अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है। राजनीति का ज्ञाता होता है। संतान सुख होता है।

यदि शुक्र खाना नं 10 में शुभ हो तो पराई औरत से संबंध रखता है। संतान सुख कम होता है। अपने पैर पर कुल्हाड़ी मारने वाला, जुंआ खेलने वाला होता है। यदि शुक्र वृष राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। डरपोक होता है। पिता का सुख कम होता है। यदि शुक्र कन्या राशि में हो बड़े भाई-बहन का सुख कम होता है। आय कम होती है। पिता का स्वास्थ्य अच्छा, नहीं होता। यदि शुक्र मकर राशि में हो तो धन हानि होती रहती है। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती है।

उपायः- 1. मिट्टी की गोलियाँ बनाकर धर्मस्थान में डालें। 2. कपास धर्मस्थान में दे। 3. दही धर्मस्थान में दें या किसी गरीब को दें।

शुक्र खाना नं 11

यदि शुक्र खाना नं 11 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति हर काम को गुप्त रखकर करने वाला होता है। धनवान होता है। संगीत, फोटोग्राफी में रूचि रखने वाला होता है। पत्नी बहुत सुंदर होती है। यदि शुक्र कर्क राशि में हो तो व्यक्ति धनवान होता है। पैसे एकत्रित करने वाला होता है। बड़े मामा मौसी का सुख होता है। अच्छी किस्मत वाला होता है। छोटे साले से युक्त होता है। यदि शुक्र वृश्चिक राशि में हो व्यापार से लाभ ही लाभ होता है। पिता का सुख होता है। राजदरबार से लाभ होता है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है। संतान का सुख होता है। मीन राशि में शुक्र हो तो अपनी सेहत अच्छी होती है। पिता सुखी होते हैं।

यदि शुक्र खाना नं 11 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति हर दम बात बदलने वाला होता है। औरत घर की मुखिया होती है। वीर्य संबंधी बीमारी होती है। भाई-बन्धुओं से झगड़ा होता रहता है। वृष

राशि का शुक्र हो तो दुर्घटना का भय, जमीन जायदाद का सुख कम होता है। कन्या राशि में शुक्र होगा तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। चर्म एलर्जी होती है। पत्नी का झुकाव अपने माएके की तरफ कुछ ज्यादा ही होता है।

उपायः- 1. सरसों का तेल दान करें। 2. वीर्य संबंधी रोग में सोने की सलाख को 11 बार गर्म कर के दूध में भिगोकर दूध पिएं। वैद्य की सलाह लेकर। 3. दही का दान करें। 4. कपूर का हवन करें।

शुक्र खाना नं 12

यदि शुक्र खाना नं 12 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की स्त्री भवसागर से भी पार करने वाली होती है। स्त्री सतवन्ती होती है। दूसरों की सहायता करने के लिए हर वक्त तैयार रहता है। संगीत प्रेमी होता है। शादी के बाद किस्मत अच्छी होती जाएगी। ऐसा व्यक्ति प्रेम विवाह करता है। स्त्रियों की मदद से जो भी काम करेगा ठीक ठाक होगा।

यदि शुक्र खाना नं 12 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति की स्त्री रोगी होगी। पराई स्त्री से संबंध होंगे। जुंआ खेलने वाला, जुआं में धन बरबाद करने वाला, नास्तिक हो जाता है।

उपायः- 1. औरत के हाथ से सायं काल में नीला फूल दबाएं। 2. औरत के हाथ से कुछ न कुछ दान कराते रहें। 3. स्त्री बीमार हो तो उसके वजन बराबर ज्वार मंदिर में दें।

शनि (भैरो बाबा)

शनि 3, 7, 11 मिथुन, तुला, कुंभ राशि में शुभ और 1, 5, 9 मेष, सिंह, धनु राशि में अशुभ होता है। शनि 2, 6, 10 वृष, कन्या, मकर राशि में अच्छे फल करता है। शनि संबन्धित वस्तुएं भैंस, मछली, मगरमच्छ, सांप

शनि खाना नं 1

यदि शनि खाना नं 1 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति राजा की तरह दौलतमंद होता है। राजदरबार से लाभ होता है। पिता का सुख होता है। अच्छी कालोनी में निवास होता है। बड़े भाई-बहन का सुख होता है। मेहनतकश इंसान होगा। जितनी मेहनत करेगा उतना बढ़ता जाएगा। यदि अगर शनि मिथुन राशि में होगा तो ऊँच भाग्य की निशानी होगी यदि शनि तुला राशि में होगा जमीन, जायदाद, वाहन का सम्पूर्ण सुख होगा। माता का सुख होगा। औलाद का सुख होगा। यदि कुंभ राशि में शनि हो तो अपनी सेहत अच्छी होगी।

यदि शनि खाना नं 1 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की शिक्षा अधूरी रह जाती है। रोगी होता है। जिस्म पर ज्यादा बाल होंगे। नीलामी तक हो जाती है। शराबखोर होगा। राजदरबार से हानि होगी। फरेबी, धोखेबाज होगा। यदि शनि मेष राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख नहीं होता। आय भी कम होती है। यदि सिंह राशि में होगा तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। और रोगी होगा। यदि धनु राशि में हो तो धन हानि होती रहेगी।

उपायः- 1. बीमारी के समय बड़ के पेंड़ की जड़ में दूध डालकर उसकी गीली मिट्टी का तिलक लगाएं। 2. धन हानि के लिए बंदर की सेवा करें। 3. व्यापार के लिए काला सूरमा पत्थर वाला जमीन में दबाएं।

शनि खाना नं 2

शनि खाना नं 2 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति धार्मिक होगा। पैतृक संपत्ति का लाभ होता है। यदि शनि मिथुन राशि में हो तो राजयोग होता है। राजनीति में जाता है। पिता का सुख होता है। यदि शनि तुला राशि का हो तो अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है। संतान का सुख होता है। यदि शनि कुंभ राशि में हो तो अपना स्वास्थ्य अच्छा होता है। धन की बचत करने वाला होता है।

यदि शनि खाना नं 2 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को पैतृक संपत्ति का सुख नहीं होता। ससुराल के लिए मंदा होगा शरीर पर हर रोएं में से तीन-तीन बाल निकलते होंगे। शराब का आदी होगा। नास्तिक होगा। जिस कदर शनि की अशियाँ कायम करता जाएगा। ससुराल में शनि की आशियाँ बरबाद होती जाएंगी। यदि मेष राशि में शनि होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख नहीं होगा। मेहनत करने पर भी आय कम होगी। यदि शनि सिंह राशि में होगा तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। तलाक भी हो सकता है। यदि शनि धनु राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। माता का सुख कम होगा। जमीन, जायदाद, वाहन के खोने का भय होगा।

उपायः- 1. माथे पर तेल न लगाएं। 2. माथे पर दही का तिलक लगाएं। 3. नंगे पैर 43 दिन मंदिर जाएं। 4. सांप को दूध पिलाएं।

शनि खाना नं 3

यदि शनि खाना नं 3 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति विद्वान होता है। भाई-बन्धु मददगार होते हैं। लम्बी आयु वाला, तेज नजर वाला होता है। दौलत बढ़ती रहती है। यदि शनि मिथुन राशि में हो बड़े भाई-बहन का सुख, राजदरबार से लाभ होता है। पिता का सुख होता है। यदि शनि तुला राशि में हो तो पत्नी सुदंर और सुशील होती है। यदि शुक्र का साथ हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि शनि कुंभ राशि में हो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। धनवान, कुशल व्यापारी होता है। बड़े मामा व

मौसी का सुख होता है।

यदि शनि खाना नं 3 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति भाई-बन्धु से लड़ने वाला होता है। ताए, चाचे के लिए भी मन्दा होता है। शराबी, कबाबी होगा। शनि मेष राशि में हो अपना स्वास्थ्य अच्छा नहीं होता यदि शनि सिंह राशि में हो छोटे भाई-बहन का सुख नहीं होता। धनु राशि में हो जमीन, जायदाद, वाहन का सुख कम होता है। माता का भी सुख कम होता है। माता-पिता का आपस में क्लेश होता रहता है। घर के सामने कोई पत्थर गड़ा हुआ या खम्भा होता है।

उपायः- 1. आँखों की दवाई धर्मार्थ अस्पताल में दें। और अपना इलाज कभी उस अस्पताल में न कराएं। 2. मकान के अंतिम में अँधेरी कोठरी बनाएं। 3. कुत्ते की सेवा करें। 4. छत पर ईंधन या खाली चौखट न रखें। 5. घर की दहलीज को कीलों से कील दें।

शनि खाना नं 4

यदि शनि खाना नं 4में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को जमीन जायदाद का सुखा मिलता है। विदेश यात्रा करता है। परिवार मे कोई न कोई डाक्टर बनता है। यदि शनि मिथुन राशि में हो बड़े भाई-बहन का सुख होता है। आय बढ़्ती रहती है। जमीन, जायदाद का व्यापार करता है। तुला राशि में शनि हो तो पत्नी सुशील और सुंदर मिलती है। यदि शुक्र का साथ हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। यदि शनि कुंभ राशि में हो तो छोटे-भाई-बहन का सुख होता है। जमीन, जायदाद का सुख होता है। माता का सुख होता है। पराक्रमी होता है।

यदि शनि खाना नं 4 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति विधवा स्त्री से इश्कबाजी करता है। शराब पीने वाला होता है। माता के लिए अशुभ होता है। मुफ्त का माल लेने वाला होता है। इसके घर में काले कीड़े निकलते हैं। यदि मेष राशि में शनि हो तो ध
न हानि होती है। अपना स्वास्थ्य खराब रहता है। यदि शनि सिंह राशि में हो तो मन्दे भाग्य की निशानी होती है। धनु राशि में शनि

हो तो शिक्षा में रुकावट आती है। संतान सुख कम होता है। दिमागी बीमारी होती है।

उपायः- 1. कौओं या भैंस को खीर खिलाएं। 2. कुएं में दूध और चावल गिराएं। 3. तेल और उड़द चिमटा, साबुन (कपड़े धोने वाला) काले कपड़े में बाँधकर दान करें। कपड़ा कम से कम ढ़ाई मीटर का होना चाहिए। 4. चार पाव शराब बहते पानी में बहाएं।

शनि खाना नं 5

यदि शनि खाना नं 5 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति खुददार होगा। संतान सुख होगा। न्यायप्रिय होगा। प्रेम-विवाह करने वाला होता है। यदि शनि मिथुन राशि में होगा तो स्वास्थ्य अच्छा, संतान सुख होगा। यदि तुला राशि में शनि होगा तो अच्छी किस्मत वाला होगा। यदि शनि कुंभ राशि में हो तो जमीन जायदाद वाहन का सुख, अच्छी शिक्षा, संतान सुख होता है। यदि शनि वृष राशि का हो तो धनवान होता है। यदि शनि कन्या राशि का हो तो राजदरबार से लाभ, पिता का सुख होता है।

यदि शनि खाना नं 5 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की संतान का सुख कम होता है। गर्भपात भी हो जाता है। जुआ खेल कर धन नष्ट करता है। राजदरबार से हानि होती है। यदि मेष राशि का शनि हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। डरपोक होता है। यदि शनि सिंह राशि का हो तो गर्भपात करवाता है। पिता का सुख कम होता है। राजदरबार से हानि होती है। व्यापार में भी परेशानी होती है। यदि शनि धनु राशि का हो तो आय में कमी आती है। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। संतान बहुत खर्चीली होती है।

उपायः- 1. अपने वजन के 10वां हिस्से के बराबर बादाम जल प्रवाह करें। 2. 41 वर्ष से पहले अपनी कमाई से मकान न बनाएं। 3. संतान के जन्म पर मीठा न बाँटें। (न ही जन्मदिन पर) 4. काला सूरमा चलते पानी में बहाएं। 5. अपने घर में तांबे, चावल या चाँदी, सोना

या केसर एक ही जगह कायम करें। 6. यदि राहु खाना नं 10 में हो तो सौंफ चीनी को अपने घर में जलायें। 7. कुत्ता पालना अच्छा फल देगा।

शनि खाना नं 6

यदि शनि खाना नं 6 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अकलमन्द होगा। हुनरमंद होता है। जिस्म के एक रूहे में से दो बाल पैदा होते हैं। संतान का सुख होता है। कानून का जानकार होता है। वकील या जज होता है। ज्योतिष के काम में रूचि रखता है। कबाड़ी का काम शुभ होता है। विवाह 29 वर्ष में शुभ होता है। यदि शनि मेष राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। एक प्रसिद्ध खिलाड़ी होता है। काली रात में शुरू किया हुआ काम में सफल होता है।

यदि शनि खाना नं 6 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति शराबी होता है। रोगी होता है। शत्रु से डरने वाला होता है। मुकदमों में हार होती है। कर्क, वृश्चिक, मीन राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख नहीं होता। बन्द गली में रहता है। धन-हानि होती है। मानहानि होती है।

उपायः- 1. चमड़ा, लोहे का नया समान न खरीदें। 2. सरसों चलते पानी में बाहएं। 3. सरसों के तेल से भरा हुआ मिट्टी का बर्तन लोटे जैसा खड़े गन्दे पानी दबाएं। 4. जूते गुम या चोरी होने से बचाएं। 5. साँप को दूध पिलाएं। 6. कोई नया काम अमावस्या की रात को शुरू करें। 7. बन्द गली के मकान में आवास न करें।

शनि खाना नं 7

यदि शनि खाना नं 7 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति चालाक, चतुर, हठी होता है। अत्यधिक धनी होता है। राजदरबार से लाभ होता है। आँखों से बाते करने वाला होता है। होशियारी से धन कमाने वाला होता है। पैतृक सम्पत्ति मिले न मिले तब भी करोड़पति होता है। यदि वृष राशि में हो तो जमीन-जायदाद वाहन

माता का सुख होता है। छोटे भाई-बहन का सुख होता है। यदि शनि कन्या राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख होता है। अच्छी आय होती है। यदि शनि मिथुन राशि का हो तो धन की बचत करने वाला होता है। छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। यदि शनि तुला राशि का हो तो अच्छी आय होती है। राजदरबार से लाभ होता है। पिता का सुख होता है। बड़े भाई-बहन का सुख होता है। न्याय प्रिय होता है।

यदि शनि खाना नं 7 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति धोखेबाज होता है। चालबाज होता है। शराब का आदी होता है। यदि शनि मेष राशि में हो तो संतान का सुख कम होता है। शिक्षा में रूकावट आती है। दुर्घटना का भय होता है। यदि शनि सिंह राशि में हो तो दूसरी बिरादरी या जाति में शादी करता है। यदि शनि कर्क, वृश्चिक, या मीन राशि में हो तो जमीन जायदाद वाहन का नुकसान होता है। दुर्घटना का भय होता है। माता का सुख कम होता है।

उपायः- 1. काली बांसुरी चीनी भरकर सुनसान जगह पर दबाएं। 2. शहद मिट्टी के बर्तन में भरकर घर में रखें। 3. सफेद सुरमें का प्रयोग करें।

शनि खाना नं 8

शनि खाना नं 8 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अविष्कारक होता है। ज्योतिष विद्या में रूचि रखता है। यदि शनि धनु राशि में हो तो राजदरबार से लाभ प्राप्त करता है। पिता का सुख होता है। यदि शनि मेष राशि में हो तो संतान सुख होता है। अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है। यदि शनि कर्क, सिंह, राशि में हो तो धनी होगा।

यदि शनि खाना नं 8 में अशुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति दास होता है। जितने भी काम करके थक ले पर रात को नींद हाराम होगी। नजर कमजोर, लम्बी बीमारी के बाद मौत होती है। बन्द गली के मकान में रहने वाला होता है। घर में काले कीड़े निकलते हैं। आठवें घर में शनि शक्की हाल का होता है। कभी शुभ करेगा कभी अशुभ करेगा।

उपायः- 1. चाँदी का चौरस टुकड़ा गले में डालें। 2. नहाते वक्त पत्थर या पटरे पर बैठ कर स्नान करें और दूध डालकर स्नान करें यानि नहाते वक्त पैर जमीन पर नहीं लगने चाहिए। 3. उड़द चलते पानी में डालें। 4. शराब न पिएं। मांसाहारी न बने।

शनि खाना नं 9

यदि शनि खाना नं 9 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति परोपकारी होता है। शरीर पर बाल कम होते हैं। खासकर पैरों और माथे पर बाल नहीं होते। मरने से पहले तीन मकान होंगें। दूसरों का हमदर्द होता है। दादे पोते का सुख होता है। धार्मिक होता है। राजदरबार से लाभ होता है। दूरदर्शी होता है। यदि शनि वृष राशि में हो अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। संतान सुख होता है। मरते समय कर्जा नहीं होता। शत्रु दबकर रहते हैं। यदि शनि मिथुन राशि में हो तो भी संतान सुख होता है। शिक्षा अच्छी होती है। माता का सुख होता है। जमीन-जायदाद वाहन का सुख होता है। यदि शनि कन्या राशि में हो तो स्वास्थ्य अच्छा होता है। बड़े मामा मौसी का सुख होता है। धन की बचत होती है। अच्छा व्यापारी होता है। यदि तुला राशि में शनि हो तो भी स्वास्थ्य अच्छा होता है। शिक्षा संतान का सुख होता है। यदि मकर राशि में हो पिता का सुख होता है। राजदरबार से लाभ होता है। राजयोग होता है। पांच पीढ़ी का सुख होता है।

यदि शनि खाना नं 9 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति नास्तिक होता है। किसी पर दया नहीं करता है। जुआं खेलने वाला होता है। माथे और पैर पर बाल होंगे। शराबी मांसाहारी होता है। ऐसे व्यक्ति की मानहानि होती रहती है। घर की छत पर चौखट बिना दरवाजे की और ईंधन वाली लकड़ी अशुभ भाग्य की निशानी होगी। दूसरों के माल पर नजर रखता है। यदि शनि मेष राशि में हो तो शादी-शुदा जिदंगी अच्छी नहीं होती। और उधार चढ़ा रहता है। यदि शनि सिंह राशि में हो तो जमीन-जायदाद का सुख कम होता है। धन-हानि होती रहती है। नजर कमजोर होती है। यदि शनि धनु राशि में हो तो पिता का सुख कम होता है। राजदरबार

से हानि होती है। माता-पिता में आपस में क्लेश रहता है।

उपायः- 1. घर की छत पर कोई सामान न रखें।(खास तौर पर लकड़ी) 2. घर का फर्श सफेद या कलेजी रंग का अच्छा फल देगा। 3. चांदी की ईंट अपने पास रखें। (40 ग्राम या 60 ग्राम की)

शनि खाना नं 10

यदि शनि खाना नं 10 शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति इज्जत मान-सम्मान वाला होता है। राजदरबार से लाभ होता है। राजनीति का जानकार होता है या राजनीति में जाता है। यदि शनि वृष राशि में हो तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी होती है। यदि शुक्र का साथ हो तो। यदि शनि मिथुन राशि में हो तो संतान सुख होता है। शिक्षा अच्छी होती है। नीतिशास्त्र का ज्ञाता होता है। यदि शनि कर्क राशि का हो तो इलेक्ट्रोनिक्स इंजीनियर होता है। यदि शनि कन्या राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। धनवान होता है। यदि तुला राशि में शनि हो तो धनवान होता है। सेहत अच्छी होती है। यदि शनि कुंभ राशि में हो तो राजयोग होता है। पिता का सुख होता है।

यदि शनि खाना नं 10 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति के दाढ़ी मूँछ के बाल कम होंगे या क्लीन शेव होगा। मूंछ भी काटता होगा। शराबी मांसाहारी होगा। ऐसे व्यक्ति की कोई इज्जत सम्मान नहीं करता। राजदरबार से हानि होती है। पिता का सुख कम होता है। यदि शनि मेष राशि में हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। यदि शनि सिंह राशि मे हो तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। डरपोक होता है। दुर्घटना का भय होता है। यदि शनि धनु राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होता है। आय कम होती है। टांगो में दर्द होता है।

उपायः- 1. दाढ़ी मूंछ के बाल न काटें। 2. उड़द चलते पानी में डालें।

शनि खाना नं 11

यदि शनि खाना नं 11 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति न्यायप्रिय होता है। धार्मिक होता है। यदि शनि वृष राशि में हो तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी होती है। शुक्र का साथ होना आवश्यक है, क्योंकि शनि शुक्र का प्रेमी है। लम्बी आयु होती है। यदि शनि मिथुन राशि का हो तो भी शादी-शुदा अच्छी होती है।(शुक्र का साथ होना आवश्यक है) यदि शनि कन्या राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। माता का सुख होता है। जमीन-जायदाद वाहन का सुख होता है। यदि तुला राशि में शनि हो तो धनवान होता है। बड़े मामा-मौसी का सुख होता है। छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। यदि शनि मकर राशि में हो आयात-निर्यात का काम करता है। बड़े भाई-बहन का सुख होता है। यदि कुंभ राशि में हो तो राजदरबार से लाभ होता है। पिता का सुख होता है। व्यापार में लाभ होता है। राजनीति में जाता है। राज अधिकारी होता है।

यदि शनि खाना नं 11 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति चालबाज, धोखेबाज होता है। सबसे विरोध पाने वाला होता है। यदि शनि मेष राशि में हो मन्दे भाग्य की निशानी होती है। बड़े भाई-बहन का सुख कम होता है। यदि शनि सिंह राशि में हो तो जमीन-जायदाद वाहन का सुख कम होगा। दुर्घटना का भय होता है। माता का सुख कम होता है। माता-पिता में आपस में क्लेश रहता है।

उपायः- 1. सरसों का तेल, शराब या स्प्रिट सुबह सूर्य निकलते समय कच्ची जमीन पर कुछ बूंदे गिराना शुभ होगा। 2. दक्षिण दिशा वाले मकान में न रहें। 3. चांदी की ईंट रखें। (कम से कम 40 ग्राम की)

शनि खाना नं 12

यदि शनि खाना नं 12 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति परोपकारी राजा हरीशचन्द्र की तरह सच बोलने वाला होता है। माया की परवाह न करने वाला होता है। अब राहू भी अच्छा होगा। यदि कुंभ

राशि में हो तो आयात-निर्यात का काम करने वाला होता है। रबर, प्लास्टिक, चमड़ा का कारोबार करता है। यदि कन्या राशि में हो तो विदेश में शिक्षा प्राप्त करता है।

यदि शनि खाना नं 12 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति जूठ बोलने वाला होता है। नजर का रोगी होता है। क्रोधी होता है। दूसरों के धन पर नजर रखता है। यदि वृश्चिक राशि में शनि हो तो आंख के रोग होते हैं। यदि धनु राशि में हो तो स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता यदि मीन या मेष राशि में हो तो राजदरबार से हानि होती है।

उपायः- 1. 12 बादाम काले कपड़े में बांध कर एक टीन के डब्बे में डाल कर दक्षिण पूर्व के कोने में अन्धेरे में रखें उसे कभी नहीं खाएं। 2. मकान की दक्षिण दिशा में दरवाजा या खिड़की मत रखें 3. किसी का जूठन न खाएं। 4. झूठ न बोलें। 5. मछलियों को आटे की गोली में बादाम रखकर खिलाएं। 6.शराब मांस का प्रयोग मत करें।

राहू (सरस्वती माता)

राहू छाया ग्रह है इसलिए अपने आप में राहू शुभ या अशुभ नहीं होता। जिस राशि में राहू बैठा हो उस ग्रह की तासीर के अनुसार शुभ अशुभ होगा।

राहू संबन्धित वस्तुएं हाथी, बिल्ली

राहू खाना नं 1

राहू यदि खाना नं 1 शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति राजा के समान स्वभाव वाला होता है। राहू एक वाले के ससुराल वाले अच्छे खानदान के होते हैं। नाना और मामू खानदान बहुत तरक्की करता है। कबीलदारी खर्चा अधिक होगा। लेकिन नेक कामों पर शानों शोकत वाला होता है। एक आला मालदार व्यक्ति होता है। राहु शुभ वाले के माथे पर काले रंग का तिल होता है।

यदि राहू खाना नं 1 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति दूसरों के काम में टांग अड़ाने वाला होता है। जन्म के वक्त मौसम में एक दम तबदीली हो जाती है। जन्म के वक्त ननिहाल में से कोई न कोई पास होता हैं। माथे पर या सिर पर चोट लगती है। राहू एक वाले के घर के सामने वाले के घर का हाल मन्दा होता है। धन दौलत लड़के पोते सब ही कायम होंगें। फिर भी सब का सुख न होगा। खराब समय के वक्त कोई भी मददगार न होगा। शादी के बाद ससुराल से बिजली का सामान हानि का निशानी होगी। नौकरी व्यापार में हानि या तबदीली होती रहती है। तरक्की की कोई शर्त नहीं।

उपायः- 1. सिक्का बहते पानी में बहाएं। 4 किलो का एक ही टुकड़ा। 2. कनक गुड़ तांबे के लोटे में भरकर बहते पानी में बहाएं। 3. बिल्ली के जेर अपने पास रखें। चमड़े के पर्स में नहीं। 4. चांदी का चौरस टुकड़ा गले में डालें। 5. बीमारी के समय, चार किलो जौ दूध में धोकर बहाएं। 6. नारियल बहते पानी में बहाएं वीरवार को। 7. घर के आंगन में आग और धुंआ न करें। 8.

विवाह के बाद, ससुराल से बिजली लोहे का सामान न लें।

राहू खाना नं 2

राहू खाना नं 2 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति धनवान होता है। ससुराल से लाभ प्राप्त करने वाला होता है। ननिहाल का प्रिय होता है। चेहर पर ठोढ़ी के पास काला तिल होता है। धार्मिक होता है। धन की बचत करने वाला होता है। आयु लम्बी होगी। सेहत उम्दा होगी। राजदरबार से लाभ प्राप्त होगा।

राहू यदि खाना नं 2 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति के चेहरे पर चोट का निशान होता है। निर्धन होता है। राहू 2 वाला मन्दिर मे भी चोरी करने से बाज नहीं आता। पित्त का रोगी होगा। चर्म रोगी होगा। जुआरी होगा। ससुराल वालों के लिए अशुभ राजदरबार से हानि होती है। यदि उत्तर पश्चिम में रसोई होगी तो राहू खानदान का धुंआ निकाल देगा। किसी को समय देकर भी इंतजार न करने वाला होता है। जेल भी जाना पड़ सकता है। हर समय मानसिक तनाव रहेगा।

उपायः- 1. चांदी की ठोस गोली गले में डालें। 2. सोना पहनना। 3. केसर का तिलक करना। 4. सरसों का दान करें या जल प्रवाह करें। 5. भंगी को रुपये पैसे देते रहें। 6. हाथी के पांव की मिट्टी कुएं में गिराएं। 7. हाथी की लीद अपने पास रखें।

राहू खाना नं 3

यदि राहू खाना नं 3 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को छोटे भाई-बहन का सुख होता है। व्यापार बढ़ता रहता है। नौकरी करता है। तरक्की भी बार-बार होती है। तबदीली कम होती है। खानदान का रक्षक होता है। पराक्रमी निडर होता है। एकदम किसी की मदद करने को बेधड़क तैयार रहता है। संतान का सुख होता है। दुश्मन अनेक हों तो भी सब पर अकेला भारी पड़ता है। इसकी कलम में तलवार की ताकत होती है। सच्चे सपने देखने

वाला होता है। बाजुओं या हाथों पर काले रंग का तिल होता है।

यदि राहू खाना नं 3 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। पड़ोसी अच्छे नहीं होते। छोटे साला-साली की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। ससुराल वालों से कम बनती है। बाजू या हाथ पर चोट लगती है। काम में तबदीली करने वाला होता है। भाई-मित्रों पर पैसा बरबाद होता है और धोखा फरेब मिलता है। जुबान की बीमारी होगी।

उपायः- 1. हाथी दांत या खिलौना घर पर न रखें। 2. धनिया जल प्रवाह करें।

राहू खाना नं 4

यदि राहू खाना नं 4 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति माता का सेवक होता है। जमीन-जायदाद वाहन का सुख होता है। ससुराल उम्दा होता है। ननिहाल का सम्पूर्ण सुख होता है। नौकर-चाकर से युक्त होता है। उच्च पद पर आसीन होता है। दयालू होता है। सुखी परिवार वाला होता है।

यदि राहू खाना नं 4 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति माता के लिए कष्टकारी होता है। जमीन जायदाद का सुख कम होता है। वाहन सुख कम होता है या दुर्घटना वाहन द्वारा होती है। ससुराल के लिए भी कष्टकारी होता है। ननिहाल का सुख कम होता है। परस्त्री से संबंध रखने वाला होता है। मतबलपरस्त होता है।

उपाय- 1. सिक्के के चार टुकड़े जल प्रवाह करें। 2. पूजा वाले खड़कने वाले नारियल जल प्रवाह करें। 3. मसूर की दाल गरीब व्यक्ति को दें। 4. हाथी दान्त की बनी हुई कोई वस्तु दान करें। 5. कच्चे कोयले जल प्रवाह करें। 6. धनिया 400 ग्राम जल प्रवाह करें।

राहू खाना नं 5

यदि राहू खाना नं 5 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति को संतान सुख होता है। शिक्षा अच्छी प्राप्त होती है। तांत्रिक विद्या का ज्ञाता

होता है। यदि कन्या राशि में राहू हो तो धनवान होता है। अक्लमंद होता है। राजदरबार से लाभ होता है। यदि राहू मीन राशि में हो तो धनवान होता है। कम्प्यूटर की शिक्षा प्राप्त करता है। गणित की भी शिक्षा प्राप्त करता है। एक अच्छा अर्थशास्त्री होता है। प्रेम विवाह करता है। यदि कुंभ राशि में राहू हो तो माता का सुख होता है। जमीन जायदाद का सुख होता है। वाहन का सुख होता है। पेट पर काले रंग का तिल होता है।

यदि राहू खाना नं 5 अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को संतान सुख कम होता है, गर्भपात तक हो जाता है। यदि टेवे वाला का गर्भपात न होगा तो उसकी संतान का गर्भपात अवश्य होगा। शिक्षा में रुकावट आएगी। शरारती बुद्धि का होता है। यदि राहू वृष राशि में हो तो राजदरबार से हानि होती है और पिता का सुख कम होता है। धोखेबाज होता है। यदि कुंभ राशि में राहू हो तो माता का सुख कम होता है। जमीन जायदाद का सुख कम होता है। वाहन का सुख कम होता है। दुर्घटना का भय होता है। यदि मीन राशि में राहू हो तो धनहानि होती रहती है। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। पत्नी बीमार रहती है। यदि कन्या राशि में हो तो धन हानि होती है। ऐसे व्यक्ति को पेट का रोग होता है या पेट का आपरेशन होता है या कोई और चोट लगती है।

उपायः- 1. अपनी पत्नी से दुबारा शादी करें। 2. रात को मूली सिरहाने रख कर सुबह मन्दिर में दें। 3. चाँदी का हाथी ठोस गले में डालें या अपने घर में रखें। 4. हाथी के खिलौने घर में न रखें। 5. दहलीज के नीचे चाँदी का पतरा लगाएं।

राहू खाना नं 6

यदि राहू नं 6 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति पक्के इरादे वाला होता है। बहादुर होता है। शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। मुकदमें में जीत हासिल करने वाला होता है। विदेश यात्रा करने वाला होता है। यहाँ राहु बिजली की ताकत का मालिक होता है। किसी भी परेशानी से अचानक बचा लाता है किसी को समझ में

भी नहीं आता कि क्या हुआ। जातक हमेशा बढ़ता रहता है। सिक्के की गोली और काँच की गोली शुभ होगी। अच्छी सेहत होती है। नाभि के नीचे काले रंग का तिल होता है।

यदि राहू खाना नं 6 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति रोगी होता है। शत्रु अधिक होते हैं। और शत्रुओं से परास्त होता है। मुकदमें बाजी में भी हारता है। हत्या का भय होता है। नाना पर भारी होता है मामा भी कष्ट में रहते हैं। अचानक धन का नुकसान होता है। और कारण का पता भी नहीं लगता। रोगी होता है पर रोग का आसानी से पता नहीं लगता। कर्जदार होता है। नाभि के नीचे चोट लगती है या जिगर खराब होता है।

उपायः- 1. सरस्वती की उपासना करें तीन फूलों से। 2.काले कुत्ते को रोटी दें। 3. जौ के आटे की गोलियां बनाकर मछलियों को डालें।

राहू खाना नं 7

यदि राहू खाना नं 7 शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होती है। सांझेदारी के व्यापार में लाभ प्राप्त करता है। बस्ती लिंग पर काले रंग का तिल होता है। 21वें वर्ष में विवाह न करें। राजदरबार से लाभ प्राप्त होता है। किसी के आगे हाथ नहीं फैलाता है।

यदि राहू खाना नं 7 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती है। मित्र या सांझेदार धन खा जाते हैं। गुप्त बीमारी होती है। ससुराल भी कष्ट में होता है। ननिहाल के लिए भारी होता है। हारने वाला जुआरी होता है।

उपायः- 1. 7 अल्युमिनियम के चम्मच जल प्रवाह करें। 2. चाँदी की ईंट शादी के समय ससुराल वालों से लेकर पत्नी के हाथों से घर में रखें।(जब कन्यादान हो तब) 3. 21वर्ष में शादी न करें। 4. एक बर्तन में गंगा जल भरकर उसमें चाँदी का खालसी टुकड़ा डाल कर बर्तन को ऊपर से टांका लगाकर घर में रखें और एक

चांदी के बर्तन में गंगाजल डालकर उसमें भी चांदी का टुकड़े डालकर धर्मस्थान पर दें। 5. नारियल बहते पानी में बहाए।

राहू खाना नं 8

यदि राहू खाना नं 8 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति का अगर भाग्य सोया हुआ हो तो पकड़कर जगा देगा और खाली तिजोरी भी धन से भर देगा। लम्बी आयु का होगा। घर का सबसे बड़ा सदस्य काले रंग का होगा। राहू शुभ होगा तो लिंग, गुदा पर काले रंग का तिल होगा। ससुराल खुशहाल होगा।

यदि राहू खाना नं 8 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति का धन झगड़ों में खर्च होता है। जातक की कोई मदद नहीं करता है। बवासीर का रोग होता है। खानदान वालो से भी नहीं बनती है। कार्य बारबार बदलने पड़ते हैं। अचानक मुसीबतें खड़ी होती रहती हैं। मानहानि होती रहती है। जेल तक भी जाना पड़ सकता है। धोखे ही मिलते रहते हैं।

उपायः- 1. सदर दरवाजा बड़ा चौड़ाई में और ऊचाई में ऊँचा रखें। 2. चाँदी का चौरस टुकड़ा मददगार होगा। 3. 8 पीस सिक्के के जल प्रवाह करें। 4. तांबे का पैसा भड़भूजे के भट्टी में डालें। 5. खोटे सिक्के जो बाजार में नहीं चलते जल प्रवाह करें।

राहू खाना नं 9

यदि राहू खाना नं 9 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य छोटी उम्र में जाग जाता है। धार्मिक होता है। यात्रा में लाभ प्राप्त होता है। हकीम होगा। शफा का मालिक होगा। जब तक लालची न होगा फूंक मारकर पागलों का इलाज कर देगा। काले रंग का तिल जांघों पर होता है।

राहू खाना नं 9 में अशुभ हो तो मन्दा भाग्य होता है। गर्भपात होता रहता है। संतान सुख कम होता है। ससुराल से नहीं बनती है। धर्म-कर्म नहीं करता है। नास्तिक होता है। कुत्ता गुम

हो जाता है। स्याह रिश्तेदार की मौत हो जाती है। हाथों के नाखून की बीमारी या नाखून जड़ जाते है। दहलीज के नीचे से घर का गन्दा पानी निकलना। घर में या पास में हर वक्त बिल्ली का रोना मन्दे राहू की निशानी है।

उपायः- 1. दहलीज के बीच चाँदी का पत्तरा दबाएं। 2. सर पर चोटी रखें। 3. केसर का तिलक करें।

राहू खाना नं 10

यदि राहू खाना नं 10 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति राजदरबार से लाभ प्राप्त करता है। पिता का सुख होता है। व्यापार स्थिर और अच्छा होता है। अच्छे चरित्र वाला होता है। समाज में इज्जत भी पाता है। घुटने के आस पास काले रंग का तिल होता है।

राहू खाना नं 10 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को पिता का सुख कम होता है। राजदरबार से हानि उठानी पड़ती है। व्यापार बदलता रहता है। अपना स्वास्थ्य खराब होता है। पैतृक संपत्ति का नुकसान करने वाला होता है। तंग दिल कंजूस होता है। नंगा सिर रखना धन हानि करेगा। छत या ऊँची जगह से गिरता है। घुटने पर या घुटने के आसपास चोट लगती है।

उपायः- 1. नंगे सिर न रहें। नीले काले रंग को छोड़ कर कोई भी टोपी पगड़ी पहने या स्क्राफ बांधें। 2. 4 किलो का एक सिक्का चलते पानी में डाले वीरवार को। 3. जौ किसी भारी वजन के नीचे दबाना अपने घर में शुभ होगा। 4. काले तिल या सरसों काले या नीले वस्त्र में बांध कर जल प्रवाह करना। 5. रोग में जौ गाय के मूत्र से सात बार धोकर चलते पानी में डालें। 6. जौ के आटे की गोलियाँ बनाकर मछलियों को डालना।

राहू खाना नं 11

यदि राहू खाना नं 11 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छी आय कमाने वाला होता है। संतान सुख होता है। अपने पैरों पर आप खड़ा होता है। यदि किसी की मदद करेगा तो पूरी तरह करेगा

धोखा नहीं देगा। सोने का काम उम्दा होता है। टांग पर काले रंग का तिल होता है।

राहू खाना नं 11 अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की पिता की आय कम हो जाती है। धन हानि होती है। टांग पर चोट लगती है या दर्द होता है। बड़े भाई का सुख कम होता है। ससुराल और ननिहाल की स्थिति भी अच्छी नहीं रहती। पत्नी का पेट खराब रहता है। धन जुर्माना और बीमारियों में खर्च होता है। राहू वर्षफल में जब भी खाना नं 11 में आएगा बीमारियों और जुर्माना पर धन खर्च करवाएगा। अचानक बने बनाए काम बिगड़ जाते हैं पता ही नहीं चलता कि क्या हुआ।

उपायः- 1. पिता के बाद सोना कायम करें और पिता की इस्तेमाल की हुई अशियाँ का खुद इस्तेमाल करें जैसे चारपाई, बिस्तरा, कपड़े, घड़ी आदि का। 2. चांदी के गिलास में पानी दूध पिए। 3. चांदी के केस और नाली का इस्तेमाल करें। सिगरेट के इस्तेमाल के समय। 4. चार किलो का सिक्का एक टुकड़ा और चार पूजा वाले नारियल जल प्रवाह करें। 5. 13 पूर्णिमा लगातार गंगा स्नान करें। 6. कच्चे कोयले जल प्रवाह करें। 7. मलका मसूर की दाल पिंगलवाड़ा में देना शुभ होगा।

राहू खाना नं 12

यदि राहू खाना नं 12 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति विदेश यात्रा से लाभ प्राप्त करता है। विदेश में कारोबार करता है। आयात-निर्यात का काम करता है। खर्चा बहुत होता है पर नेक कामों में होता है। रात को आराम की नींद आती है। ससुराल ननिहाल के लिए शुभ होता है। योगाभ्यास करने वाला होता है। ज्योतिष विद्या का ज्ञानी होता है। पैरों पर काले रंग का तिल अथवा चिन्ह का निशान होता है।

यदि राहू खाना नं 12 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को विदेश यात्रा से हानि होती है। गन्दे कामों पर खर्चा अधिक होता है। रात

को नींद नहीं आती है। शराब पीने वाला होता है। चोरी गबन होते रहते हैं। कितना भी दिन में मेहनत करके थक हार जाए पर रात को नींद नहीं आएगी। दिमागी परेशानी खड़ी रहेगी। जिस अंग से सन्यास की कोशिश करे वही अंग मन्दा हो जाएगा ध्यान लगाए तो दिमाग पागल हो जाएगा। आंखो से ध्यान लगाए तो अंधा हो जाएगा। एक टांग पर खड़ा होकर पूजा करे तो लंगड़ा हो जाएगा। नाहक ही तोहमत बदनामी पल्ले पड़ेगी। पैरों में चोट लगती है।

उपायः- 1. सोने के कमरे में सौफ की बोरी या खाण्ड की बोरी या मूंगा कायम करें। 2. रोटी रसोईघर में बैठ कर खाएं। 3. कन्या और बहन की सेवा करें।

केतू (गणेश जी)

केतू संबन्धित वस्तुएं कुत्ता, लड़का

केतू खाना नं 1

यदि केतू खाना नं 1 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति जीवन में तरक्की की सीढ़ी चढ़ता जाता है। धनवान होता है। पहला संतान लड़का होता है। पिता, गुरु का सुख पाने वाला होता है। छोटे भाई का सुख होता है। दूर की और लम्बी यात्रा करने वाला होता है। माथे के ऊपर की तरफ शहद रंग का तिल या चिन्ह होता है। लम्बी आयु होती है।

यदि केतू खाना नं 1 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति की बारबार तबदीली होती रहती है। एक जगह टिक कर नहीं रहता। पिता का सुख कम होता है। जन्मस्थान जिसके यहाँ जन्म ले वह बरबाद हो जाता है। रोगी होता है। स्त्री की आयु कम होती है। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। सिर पर चोट लगती है। पड़ोसी भी अच्छे नही होते हैं।

उपायः- 1. बन्दरों को गुड़ चने खिलाएं। 2. काला सफेद कम्बल दान करें। किसी बुजुर्ग पुजारी को। 3. पैर के दोनो अंगूठों में चाँदी के तार बांधें।

केतू खाना नं 2

यदि केतू खाना नं 2 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति धनवान होता है। पैतृक सम्पत्ति का सुख होता है। यात्रा अधिक करनी पड़ती है। और लाभदायक होती है। राजदरबार से लाभ प्राप्त होता है। माथे पर बीच में शहद रंग का तिल होता है माथे पर केतू का तिकोना निशान होता है जो शुभ होगा।

यदि केतू खाना नं 2 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति को पैतृक संपत्ति का सुख कम होता है। अपने धन का नाश करता है। मांसाहारी होता है। यदि पराई स्त्री से संबंध हो तो बुढ़ापे में अपने बच्चे का सुख नहीं होता संतान से दुखी होगा। चेहरे पर चोट का

निशान होता है। मामा के लिए कष्टकारी होता है।

उपायः- 1. केसर का तिलक लगाएं। 2. चरित्र ठीक रखें। 3. काले सफेद तिल बराबर मात्रा में धर्मस्थान पर दें। यदि कोई ग्रह साथ हो नहीं तो वीराने में दबाएं। 4. इमली धर्मस्थान पर दें। यदि कोई ग्रह साथ हो तो नहीं तो वीराने में दबाएं।

केतू खाना नं 3

यदि केतू खाना नं 3 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति पराक्रमी साहसी निडर होता है। छोटे भाई बहन का सुख होता है। यात्रा से लाभ होता है। दूसरों द्वारा की गई मदद को हमेशा याद रखने वाला होता है। तीन तरफ वाले मकान में रहने वाला होता है। खुद या पिता के तीन भाई होते हैं। अपनी भी नर संतान एक या तीन संतान का सुख होता है। सब के साथ अच्छे संबंध बनाकर रखने वाला होता है। भाई-बन्धुओं के लिए शुभ होता है। हाथ या बाजुओं पर शहद रंग का तिल होता है।

केतू खाना नं 3 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति डरपोक होता है। छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। पड़ोसी मित्रों से लड़ने वाला होता है। भाई से दूर परदेश में रहने वाला या भाई ही परदेश में रहते हैं। बेकार की यात्रा करने वाला होता है। संतान सुख कम होता है। दूसरों की हाँ में हाँ करता रहता है। हाथ पैर या बाजुओं पर चोट लगती है। गले में परेशानी रोग होगा। सरवाईकल दर्द होता है।

उपायः- 1. कानो में सोना डालें। 2. शराब सिगरेट का प्रयोग मत करें। 3. काले सफेद कपड़े में लोहे की कील तथा चूना लपेट कर वीराने में दबाएं। 4. सफेद धोती जिसकी किनारी काली हो किसी युवक (गरीब) को देना शुभ होगा। 5. काले रंग के फ्रेम का चश्मा दान करना।

केतू खाना नं 4

यदि केतू खाना नं 4 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति माता का

सेवक होता है। माता, जमीन जायदाद, वाहन का सुख होता है। धनवान होता है। जिन्दगी ऐशो आराम से गुजरती है। छाती पर शहद रंग का तिल या चिन्ह होता है। कुल पुरोहित या कुल देवता को पूजने वाला होता है।

केतू खाना नं 4 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति माता के लिए कष्टकारी होता है। जमीनजायदाद का सुख कम होता है। वाहन का सुख कम होता है। अचानक दुर्घटना होती रहती है। छाती पर चोट का निशान होता है या छाती पर कोई रोग होता है। फेफड़े का खराब होना ठंड वाले रोग लगते हैं। कुल पुरोहित और कुल देवता का अपमान करने वाला होता है। जन्म स्थान से दूर रहने वाला होता है।

उपायः- 1. कुल पुरोहित कुल देवता की पूजा करना। 2. सोने का दान करना कुल पुरोहित को। 3. केसर का दान करना। 4. कुत्तों की सेवा करना खासकर चितकबरे कुत्ते की। 5. काला सफेद कम्बल पिंगलवाड़ा में देना। 6. काले सफेद तिल धर्मस्थान पर देना।

केतू खाना नं 5

केतू खाना नं 5 में हो तो ऐसे व्यक्ति को संतान सुख होता है। अच्छी शिक्षा प्राप्त होती है। पेट पर शहद रंग का तिल होता है। धनवान होता है। धार्मिक होता है। गुरू की सेवा करने वाला होता है। पोतो का भी सुख होता है। पोते लड़को से तादाद में ज्यादा होंगे। शादी-शुदा जिंदगी भी अच्छी होगी।

केतू खाना नं 5 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को संतान सुख नहीं होता संतान रोगी होती है। शिक्षा में रूकावट आती है। पेट पर चोट लगती है। या पेट का कोई आपरेशन होता है। घर के पास कुत्ते के रोने की आवाज आती रहती है। गृहस्थी जीवन में भी दुखी रहता है।

उपायः- 1. छोटे बच्चों को गोल गप्पे खिलाएं। 2. काले सफेद कपड़े में लोहे की कील और चूना लपेट कर जल प्रवाह

करें। 3. सतनाजा जिसमें काले सफेद तिल हो धर्मस्थान में दें।

केतू खाना नं 6

यदि केतू खाना नं 6 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति उत्साही होता है। शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। विदेश के कारोबार में लाभ प्राप्त करता है। नाभि के पास शहद रंग का तिल होता है। मुकदमों में जीत होती है। ननिहाल के लिए शुभ खासकर छोटे मामा मासी के लिए। दहेज में सोना मिलता है।

यदि केतू खाना नं 6 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति आलसी होता है। अचानक शत्रु बनते रहते हैं। मुकदमों में हार होती है। ननिहाल के लिए कष्टकारी होता है। खासकर छोटे मामा मासी के लिए। नाभि के नीचे चोट का निशान होता है। कुत्ते से डरने वाला होता है। दहेज में जो सोना मिलता हे वो गुम हो जाता है या मजबूरी में गिरवी रखना पड़ता है या बेच कर खा जाता है। जिगर का रोग होते हैं। खाना हजम नहीं होता।

उपायः- 1. सोने का छल्ला बाएं हाथ में छोटी अंगुली में डालें। 2. 6 केले पीले वाले धर्मस्थान पर दें। 3. छोटी कन्या को गोल गप्पे खिलाएं। 4. बहन की सेवा करें। 5. नर खरगोश पालें। 6. चारपाई का दान करें 7. 6 प्याज वीराने में दबाएं। 8. 6 लहसुन वीराने में दबाएं।

केतू खाना नं 7

केतू खाना नं 7 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की पत्नी सुशील सुन्दर समझदार होगी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। साझेदारी में व्यापार करना लाभदायक होगा। उच्च शिक्षा प्राप्त होगी। बस्ती लिंग पर शहद रंग का तिल होगा। जैसे जैसे लड़का बढ़ेगा वैसे वैसे धन बढ़ता जाएगा।

केतू खाना नं 7 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। तलाक भी हो जाता है। सांझेदारी में नुकसान होता है। गुप्त अंग का रोग होता है। शुगर का रोगी

होता है। पत्थरी का रोग होता है। दुर्वचन बोलने वाला होता है। हर्निया का रोग होता है।

उपायः- 1. चार-चार केले चार दिन लगातार जल प्रवाह करें। केले पीले होने चाहिए। 2. चार-चार नींबू चार दिन लगातार जल प्रवाह करे। नींबू पीले होने चाहिए। 3. सफेद धोती काले किनारे वाली किसी गरीब युवक को दान दें।

केतू खाना नं 8

यदि केतू खाना नं 8 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति धनवान होता है। स्त्री सुन्दर विचारों वाली होती है। लिंग गुदा पर शहद रंग का तिल होता है। लम्बी आयु वाला होता है। दहेज में धन पाने वाला होता हैं। गड़ा धन प्राप्त होता है या किसी मृत व्यक्ति की सम्पत्ति मिलती है। बीमा का कार्य करता है। गुप्त विद्याओं का जानकार होता है।

यदि केतू खाना नं 8 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति की स्त्री से नहीं बनती। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। गुप्त अंगो में रोग होता है। अल्पायु होता है। संतान सुख कम होता है। चालचलन का कच्चा होगा। मृत्यु का पूर्व अभास हो जाता है।

उपायः- 1. सोने का दान करें। 2. केसर का दान करें। 3. कानों में सोना डाले। 4. काला सफेद कम्बल धर्मस्थान में दे किसी बुजुर्ग पुजारी को दें। शनिवार को पहले अपने सिर के नीचे रख कर सोएं और सुबह उठते ही दें। 5. नया कपड़ा दरिया में धोकर पहने या गंगाजल के छींटे डालकर पहने शुभ होगा।

केतू खाना नं 9

यदि केतू खाना नं 9 में शुभ होगा तो ऐसा व्यक्ति धार्मिक होगा। दयालु परोपकारी होगा जांघ पर शहद रंग का तिल होता है। समाज सेवक होता है। समझदार अक्लमंद होता है। उच्च पदाधिकारी होता है। दस्तकार होगा तरक्की की शर्त है जितना

सोना खरीदता जाएगा उतना रोजगार बढ़ता जाएगा। माँ पिता की सेवा करेन वाला होता है।

यदि केतू खाना नं 9 में अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति नास्तिक होता है। दुर्वचन बोलने वाला होता है। माता-पिता गुरु की सेवा नहीं करता। सोने का नुकसान पाने वाला होता है। मूर्ख होता है। संतान सुख कम होता है। पराई, स्त्री, के साथ संबंध रखता है। जांघ पर चोट लगती है। कमर दर्द होता है। रीढ़ की हड्डी में रोग होता है।

उपायः- 1. सोने की ईंट रखें। 2. कानों में सोना पहने। 3. काले सफेद कुत्ते की सेवा करें। 4. सतनाजा जिसमें काले सफेद तिल हों धर्मस्थान में दे।

केतू खाना नं 10

यदि केतू खाना नं 10 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को पिता का सुख होता है। राजदरबार से लाभ होता है। राजनीति में जाता है। घुटने में शहद रंग का तिल होता है। व्यापार में लाभ होता है। अच्छे कर्मो वाला होता है। प्रसिद्ध खिलाड़ी होता है। नौकर सेवको से युक्त होता है। चुपचाप अपने रास्ते पर चलने वाला जिस कदर नुकसान होगा चुप रहने से उससे और भी ज्यादा लाभ होगा। मिट्टी में से भी सोना हासिल होगा।

यदि केतू खाना नं 10 में अशुभ होगा तो ऐसे व्यक्ति को पिता का सुख कम होता है। राजदरबार से हानि होगी। कारागार तक भी जाना पड़ सकता है। घुटने पर चोट लगती है। व्यापार में हानि होती रहती है। नीच स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है। गन्दे कर्म करने वाला होता है।

उपायः- 1. लोहे के पात्र में शहद भरकर बाहर वीराने में दबाए। 2. चांदी के बर्तन में (कुज्जा) शहद से भरकर रख लें और एक बाहर वीराने में दबाएं। 3. एक कुत्ता पालें। 4. चालचलन ठीक रखें। 5. शराब सिगरेट का प्रयोग न करें। 6. चितकबरी गाय को फल और भूसा मिलाकर खिलाए। 7. चितकबरे कपड़े मत पहने।

केतू खाना नं 11

यदि केतू खाना नं 11 में शुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को बड़े भाई-बहन का सुख होता है। संतान का सुख होता है। आय अच्छी होती है। टांग पर शहद रंग का तिल होता है। गुजरे समय को याद नहीं करता। हमेशा भविष्य की सोचता है। 11 गुना दौलत जमा होगी। समाज में मान-सम्मान होता है।

यदि केतू खाना नं 11 में अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को बड़े भाई बहन का सुख कम होता है। आय कम होती है। संतान का सुख कम होता है। अगर कोई पीछे से आवाज दे दे तो काम नही बनता। टांग पर चोट लगती है। या दर्द होता रहता है। अपने भाग्य को कोसता रहता है। हर समय कोई-न-कोई चिंता लगी रहती है।

उपायः- 1. रसोई में काला सफेद चकले का इस्तेमाल करें।
2. चितकबरे कुत्ते को दूध में भिगोरक रोटी खिलाएं।
3. किसी अपंग की सत्नाजे की रोटी बनाकर खिलाएं।
4. चारपाई पिंगलवाड़े में दाने दें।

केतू खाना नं 12

यदि केतू खाना नं 12 में शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति आयात-निर्यात का काम करता है। विदेश यात्रा से लाभ प्राप्त करता है। ऐशों-आराम की जिंदगी बिताने वाला होता है। शत्रुओं पर विजय पाता है। पांव पर शहद रंग का तिल होता है। मान-सम्मान इज्जतदार वाला होता है। धनवान होता है। खर्चा अधिक होता है। लेकिन शुभ कामों में। चरित्रवान होता है।

यदि केतू खाना नं 12 अशुभ हो तो ऐसे व्यक्ति को विदेश-यात्रा से नुकसान होता है। बेकार के कामों में खर्चा होता है। पांव मे चोट लगती है। संतान सुख कम होता है। संबंधियों या समाज से अपमानित होता है। बिना काम के घूमता रहता है। आंख का रोगी होता है।

उपायः- 1. चार लहसुन की गड्डी जल प्रवाह करना। 2. चार प्याज जल प्रवाह करें। 3. काले सफेद कपड़े में लोहे की कील तथा चूना लपेट कर जल प्रवाह करना। 4. काले रंग के फ्रेम का चश्मा दान करना।

दो ग्रहों का फल

जब दो ग्रह एक साथ हो या दृष्टि से साथ साथ मिल रहें हों तो उनकी तासीर बदल जाती है। इसलिए ऐसे में ये ग्रह मिश्रित फल प्रदान करते हैं।जो ग्रह अशुभ होगा जिंदगी के पहले आधे जीवन में शुभ फल करते है दूसरे बाद के आधे जीवन में अशुभ फल करते हैं। जो ग्रह शुभ हो जिंदगी के पहले आधे जीवन में अशुभ फल करता है फिर दूसरे बाद के आधे जीवन में शुभ फल करता है।

बृहस्पति-सूर्य

बृहस्पति के साथ सूर्य हो तो ऐसे टेवा वाले की किस्मत में पिता और बेटे की किस्मत शामिल होगी। उसकी किस्मत उसके पिता और बेटे की मदद करेगी।

यदि दोनो खाना नं 1 में हो तो शुभ होता है। जातक की जिन्दगी में राजयोग होता है। लेकिन क्रोधी होता है। यदि वृष कन्या राशि में हो तो भाग्य मन्दा होता है। मेहनत बहुत करनी पड़ती है। संतान सुख भी कम होता है। कर्क वृश्चिक मीन राशि में हो तो भाग्य अच्छा होता है। संतान सुख भी होता है। धार्मिक होता है। समाज में इज्जत मान होता है। राजदरबार से लाभ होता है।

यदि बृहस्पति और सूर्य खाना नं 2 में हो और शुभ असर हो तो धनवान होता है। मकान शानदार कालोनी में होता है। बहादुर इंसान होगा। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 3 में शुभ असर होगा। छोटे भाई बहन का सुख होगा पराक्रमी होगा अच्छी कालोनी में निवास होगा। आस-पड़ोस अच्छा होगा। अशुभ असर होगा तो लालची होगा छोटे भाई-बहन धनवान होंगे। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 4 में शुभ होगा तो मकान वाहन का सुख होगा। माता का सम्पूर्ण सुख होगा। ननिहाल धनवान होंगे। यदि कर्क

वृश्चिक मीन राशि में हो तो पिता का सुख कम होगा। व्यापार में उतार-चढ़ाव होते हैं। यदि अशुभ असर होगा तो उसका उल्टा होगा।

खाना नं 5 मे शुभ असर होगा तो संतान धनवान होती है। उच्च शिक्षा प्राप्त करता है। कानून का जानकार होता है। राजदरबार से लाभ प्राप्त करता है। यदि मेष राशि में हो तो धार्मिक और अच्छी सेहत का होता है। यदि सिंह राशि में हो तो वो भी धार्मिक होता है। वृष कन्या मकर राशि में हो तो अशुभ होगा। संतान के लिए शिक्षा के लिए दोनो का सुख कम होगा।

खाना नं 6 में शुभ असर हो तो मामा खानदान धनवान होगा। नहीं तो मामा खानदान तंगहाल होगा। जातक रोगी होगा राजदरबार से हानि होगी।

खाना नं 7 शुभ असर होगा तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। राजदरबार से लाभ होगा। सांझेदारी से भी लाभ होगा लेकिन जातक क्रोधी होगा जातक का जीवन साथी भी क्रोधी होगा।

खाना नं 8 में शुभ होगा तो दहेज अच्छा मिलेगा। ससुराल अच्छी होगी। बीमा के कारोबार से लाभ होगा किसी मृत की सम्पत्ति मिलेगी। अशुभ होगा तो राजदरबार से हानि होती होगी मन्दा भाग्य होगा। मन्द बुद्धि होगा।

खाना नं 9 में शुभ होगा तो भाग्य बिजली की तरह चमकेगा। सब सुख साधन ऐशो आराम होगा। संतान की शिक्षा अच्छी होगी। बृहस्पति और सूर्य दोनो ग्रह संतान और शिक्षा के कारक हैं। यदि वृष कन्या मकर राशि में होगे तो संतान और शिक्षा सुख कम होगा। संतान और शिक्षा का सुख शनि शुक्र बुध की स्थिति के अनुसार होगा।

खाना नं 10 में शुभ असर होगा तो राजदरबार से लाभ पिता का सुख व्यापार में लाभ प्राप्त होता है। समाज में मान-इज्जत होती है। धनवान होता है। अशुभ होगा तो कोई भी मान-सम्मान नहीं करता किसी का भी भला करेगा तो आगे से बुरा ही होगा।

खाना नं 11 में शुभ असर होगा तो बड़े भाई-बहन धनवान होंगे पिता एक व्यापारी होता है। लेकिन बड़े भाई बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। यदि वृष कन्या मकर राशि में हो तो अपनी भी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी और मन्द बुद्धि होगा।

खाना नं 12 में शुभ असर होगा तो विदेश यात्रा से लाभ होगा यदि सिंह राशि में हो तो विदेश मे ही निवास होता है। कभी किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता है। धनवान होता है।

उपायः- 1. पिता बेटा इकट्ठे रहने से मन्दी हालत ठीक हो जाएगी। 2. किसी से मुफ्त का माल न लें। 3. पिता की चारपाई का इस्तेमाल करें। 4. घर की सबसे पुरानी चारपाई भी शुभ होगी। 5. खालिस सोना केसर घर में कायम रखना शुभ होगा।

बृहस्पति-चन्द्र

बृहस्पति चन्द्र साथ होने पर व्यक्ति धनवान होता है। कानून का जानकार होता है। चाहे अक्ल कम हो धन बढ़ता होगा। यात्रा का लाभ होगा। पैतृक सम्पत्ति भी फलदायक होती होगी। ईश्वरीय सहायता प्राप्त होगी। जिस घर में चन्द्र शुभ होगा तो बृहस्पति दो गुना शुभ हो जाएगा। जिस घर में बृहस्पति शुभ होगा तो चन्द्र दो गुना शुभ हो जाएगा। किस्मत बड़ के पेड़ की तरह होगी। बुढ़ापे में दौलत और गृहस्थी भी ज्यादा मददगार होगी।

खाना नं 1 में एक शुभ असर होगी तो धनवान पिता के पास सम्पत्ति वाहन का सुख होगा। संतान सुख होगा। उच्च शिक्षा का ज्ञाता होगा। यदि शिक्षा मन्दी हो तंगहाल होगा।

खाना नं 2 में शुभ असर होगा तो पैतृक सम्पत्ति मिलेगी खेती बाड़ी की जमीन होगी धनवान होगा। ईश्वरीय मदद मिलेगी। धार्मिक होगा यदि जातक का साली से साथ होगा तो उम्दा न होगा। राहू का संबंध हो जाए तो नजर कमजोर बुढ़ापे का मन्दा हाल होगा।

खाना नं 3 में शुभ असर होगा तो खुशहाल भाग्यवान विजय प्राप्त करने वाला छोटे भाई-बहन की सेवा करने वाला उसके घर में हर समय चहलपहल रहती है। पराक्रमी होता है। यदि बुध का संबंध हो जाए तो बृहस्पति चन्द्र दोनो ही का फल निकम्का हर तरफ से मन्दा फल होगा।

खाना नं 4 में शुभ असर हो तो जन्म धनी परिवार में होता है। बिरादरी मददगार होती है। जीवन भर शान्ति रहती है। माता जमीन जायदाद वाहन का सुख होता है। छोटे काम से भी अधिक लाभ होता है।

खाना नं 5 में शुभ असर हो तो बुद्धिमान होता है। व्यापार में कभी किसी माल की कमी नहीं होती। यानि की माल समाप्त होने से पहले ही और आ जाता है। दूसरा का भला करने वाला होता है। संतान शिक्षा का सुख सम्पूर्ण होता है। अशुभ असर होगा तो इस सबका उल्टा होगा।

खाना नं 6 में शुभ हो तो ईश्वरीय मदद अवश्य प्राप्त होगी। बुध केतू टेवे में जैसे असर देंगे वैसे ही दोनो का असर होगा।

खाना नं 7 में शुभ असर होगा तो तीर्थयात्रा का साथ होगा। दलाली मददगार होगी। व्यापार में मददगार होगें। यदि खाना नं 1 में दुश्मन ग्रह शनि बुध राहू आ जाए 11 गुना निकम्में होंगे।

खाना नं 8 में शुभ असर हो तो धन-दौलत हजारों लाखों में होगी आयु लम्बी होगी। भाई धन की उम्मीद रखने वाले होगें। नेक और मन्दी दोनो हालात पैदा करेंगे। कोई भाई सेनापति की तरह मददगार होगा। कोई भाई धन दौलत को नुकसान देने वाला होगा।

खाना नं 9 में शुभ असर होगा तो पानी की बजाए दूध से पले हुए पेड़ की तरह नेक किस्मत वाला होगा। माता पिता का सुख होगा और वो लम्बा असर तक नसीब होगा। जब जब वर्षफल में 9 में घर में आवे दुबारा बुलन्द हो जावे और हर समय रौनक ही रौनक बढ़ती जावे। धार्मिक होगा।

उपायः- तीर्थयात्रा करने पर लाभ होगा। ऐसे टेवे वाले को अपने लड़की के घर से कुछ खाना पीना नहीं चाहिए। नहीं तो सब कुछ उल्टा हो जाएगा। किसी से मुफ्त का माल न लें।

खाना नं 10 में शुभ होगा तो पिता का सुख होता है। पिता के पास धन दौलत होता है। राजदरबार से लाभ होगा। व्यापारी होगा। यदि स्वार्थी होगा तो मन्दा होगा। अपने मतलब के लिए भी कभी किसी की बात नहीं सुनेगा। घमन्डी होगा। बेउम्मीद होगा। मां बाप का धन दौलत उसके काम नहीं आएगा।

उपायः- दरिया में तांबे का पैसा डालना शुभ होगा।

खाना नं 11 में शुभ असर होगा तो दूसरो की मदद करने वाला होगा। अच्छी आय कमाने वाला होगा। अगर अशुभ होगा तो टेवे वाले की हालत बरबाद होगी।

उपायः- ऐसे में कन्या की सेवा करें। भंगी की सेवा करें। मददगार होगा।

खाना नं 12 में शुभ असर होगा तो विदेश यात्रा करने वाला और विदेश में धन कमाने वाला होता है। लड़का होने पर शुभ फल आ जाता है। अशुभ होने पर घर में मकड़ी के जाले होंगे। टूटे बर्तन होंगे। सफेद धातु के बर्तन बिखरे होंगे।

उपायः- चाँदी का बर्तन खाली तह मकान में दबाना शुभ होगा। मुफ्त का माल न लें।

बृहस्पति-मंगल

खाना नं बैठे के हिसाब से जब मंगल उम्दा हो खानदानी सदस्यों की हालत उम्दा होगी। दो ग्रह टेवे वाले की 72 साल उम्र तक इकट्ठे रहेंगे दोनो इकट्ठे ग्रहों में अगर बृहस्पति नेक हिस्सा एक गुना हो तो मंगल का नेक हिस्सा दो गुना होगा। किस्मत का हाल उम्दा होगा।

खाना नं 1 में शुभ असर हो सरदार हुक्मरान होगा। अमीरों

का अमीर होगा। अशुभ असर हो तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 2 शुभ असर हो तो धनवान होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। भाई-बन्धु और पड़ोसी उस पर जान भी निछावर कर देंगे। जहाँ उसका पसीना बहेगा वहाँ वे खून बहा देंगे। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 3 में शुभ असर होगा तो धार्मिक होगा। पैतृक धन की हिफाजत करने वाला होगा और उसमें अपना धन मिलाकर बढ़ाता होगा। पराक्रमी होगा। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 4 में शुभ असर होगा तो जमीन, जायदाद, वाहन का सुख होगा। भाई और पिता का सुख होगा। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 5 शुभ असर होगा तो संतान, शिक्षा का सुख होगा। संतान की पैदाइश के साथ ही धन का शानदार चश्मा बहने लगेगा। जितना दान करता रहेगा उतना ही बढ़ता जाएगा। रौनक ही रौनक होगी। अशुभ असर हो संतान और शिक्षा का सुख कम होगा। जिस्म में खून कम होगा।

उपायः- किसी से मुफ्त का माल न लें।

खाना नं 6 में शुभ असर होगा तो भाई और पिता का सुख होगा। ईश्वरीय मदद मिलती रहेगी। यदि अशुभ असर हो तो बुध और केतू दोनो ग्रह की आशियों कारोबार, रिश्तेदार खासकर औलाद पर मन्दा असर देगा।

खाना नं 7 में शुभ असर हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। संतान सुख होगा। व्यापार अच्छा होगा। अगर अशुभ असर हो तो खर्चा ज्यादा होगा कमाई कम होगी। हर वक्त खर्चा ही होगा।

खाना नं 8 में शुभ असर होगा तो किसी मृतक की जायदाद मिलती है। बीमा के काम में लाभ प्राप्त होता है। बाकी जो दोनो का खाना नं 8 का असर अलग-अलग होगा।

खाना नं 9 में शुभ असर होगा तो गृहस्थ परिवार धन-दौलत हर तरफ से आलीशान असर होगा यदि अशुभ असर होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 10 शुभ असर हो तो पिता का सुख होगा। राजदरबार से लाभ होगा व्यापार अच्छा होगा। राजनीतिज्ञ होगा। अशुभ असर होगा। मुफ्त का माल खाने वाला होगा। बीमारी पल्ले पड़ी रहेगी।

खाना नं 11 में शुभ असर हो तो भाई और पिता का सुख होगा। जिंदगी शहाना होगी। अशुभ होगा तो मंगल और बृहस्पति की अशियाँ और रिश्तेदार और कारोबार का मन्दा हाल होगा। मंगल बृहस्पति कायम रखना शुभ होगा।

खाना नं 12 शुभ असर हो तो हर तरफ से उम्दा होगा। बड़े परिवार का होगा। जिसे आर्शीवाद दे दे उसका बेड़ा पार हो जाएगा। और खुद भी मीठी नींद सोने वाला होगा। यदि अशुभ असर हो तो इसका उल्टा होगा।

बृहस्पति-बुध

यदि बृहस्पति का असर एक हिस्सा होगा तो बुध का असर दो गुना होगा। खाली बुध होगा काबिल उपाय बुध का ही होगा। यदि बुध का असर दृष्टि के हिसाब से आकर बृहस्पति से मिल रहा हो बृहस्पति का ही नाश होगा। दस्ती दिमागी कामों में उम्दा असर मगर धन दौलत के लिए कभी शाह कभी मलंग अचानक अमीर अचानक गरीब अपनी ही अक्ल से चहल-पहल करेगा।

खाना नं 1 में शुभ असर हो तो राजा की तरह अमीर होगा। सेहत अच्छी होगी। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 2 में शुभ असर होगा तो ब्रम्हज्ञानी होगा। धनवान होगा। उम्दा उपदेश देने वाला होगा। यदि अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 3 शुभ असर होगा तो लेखक होगा पराक्रमी होगा। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। यदि अशुभ असर हो स्त्री रोगी

होगी। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी।

खाना नं 4 में शुभ असर होगा तो राजयोग होगा जमीन जायदाद माता वाहन का सुख होगा। यदि अशुभ असर होगा कायर बुजदिल होगा फकीर होगा तंगदिल होगा। पापभरी कार्यवाही के कारण खुदकुशी करेगा।

खाना नं 5 में शुभ असर होगा तो खुशहाल, भाग्यवान होगा। शिक्षा भी उत्तम होगी। संतान सुख होगा। वीरवार को पैदा हुआ लड़का शुभ होगा। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 6 में शुभ असर होगा तो धार्मिक होगा अशुभ असर होगा तो अएयास होगा।

खाना नं 7 ब्रम्हज्ञानी होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। अशुभ असर होगा लड़के के टेवे में बुध का असर मन्दा होगा। धन दौलत की कमी होगी। औलाद सुख कम होगा। बेइमान होगा। किसी के काम नहीं आएगा। किभी खुशहाल कभी तंगहाल। लड़की के टेवे में बुध और बृहस्पति शुभ होगा।

खाना नं 8 में शुभ असर होगा तो धनवान होगा। व्यापारी होगा। जब नं 2 खाली हो तो बुध उम्दा होगा। अशुभ होगा किस्मत की हवा मन्दी होगी। हर काम उल्टा होगा। मिट्टी का बर्तन खांड भरकर दबाना शुभ होगा। नाक छेदना शुभ होगा।

खाना नं 9 में शुभ होगा तो संतान सुख होगा शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। अशुभ असर तब होगा जब किसी फकीर पीर से ताबीज या धागा ले लेगा।

खाना नं 10 शुभ हो तो खुशहाल भाग्यवान होगा माया से सुखी होगा। अशुभ असर तब होगा। जब टेवे वाला किसी का मदद भला करेगा।

खाना नं 11 में शुभ असर होगा तो 11, 23, 26 साल में मालामाल होगा। दौलतमन्द होगा। इल्म हुनर वाला होगा। नेक काम करने वाला सुखी गृहस्थी वाला होगा लज्जा वाला होगा। अशुभ असर होगा इसका उल्टा होगा।

खाना नं 12 में शुभ होगा तो खुद अपने लिए नेक नसीब लम्बी उम्र वाला होगा। खुशदिल होगा। विदेश यात्रा करने वाला होगा। अशुभ होगा बेइमान होगा तंगदिल होगा। व्यापार में हानि होगी।

बृहस्पति-शुक्र

बृहस्पति शुक्र साथ होने पर दिखावे का धन होता है। यदि बृहस्पति का असर मन्दा और शुक्र का असर उम्दा हो तो वह जातक इश्क में कामयाब होगा उम्दा असर हो तो दुख बीमारी से हमेशा बचाव होगा औरतों से हमेशा मदद मिलती रहेगी। या वह खुद मदद करती रहेगी।

खाना नं 1 घर में इज्जत मान नहीं होता है। मगर बाहर इज्जत मान होता है। शादी-शुदा जिंदगी भी ठीक नहीं होती। पिता के बाद किस्मत रोशन होगी। अशुभ असर होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नही होगी। साधु की तरह निर्धन किस्मत होगी।

खाना नं 2 शुभ असर हो तो मिट्टी के काम में सोना नसीब होगा। धनवान होगा। अशुभ असर हो तो संतान सुख कम होगा सोने के काम में भी मिट्टी नसीब होगी धन हानि करता रहेगा।

खाना नं 3 में शुभ असर खुशहाल भाग्यवान छोटे भाई बहन को तारने वाला होता है। उसकी पत्नी एक मददगार मित्र की तरह मददगार होता है। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 4 में शुभ असर तब होगा जब तक इश्क और पराई स्त्री से दूर रहेगा। वाहन जमीन जायदाद का सुख होगा। अशुभ असर होगा। बुरा तंगहाल होगा।

खाना नं 5 में शुभ असर होगा। शिक्षा संतान का सुख होगा शिक्षा इल्म से खूब दौलत कमाएं और संतान मार्फत हर दम भाग्य बढ़ता होगा। अशुभ असर होगा पराई स्त्री से संबंध होगा तो धन चोरी होता रहेगा।

खाना नं 6 में शुभ असर हो तो संतान सुख होगा नसीब बढ़ता होगा अशुभ असर होगा तो अपनी औरत की बेकद्री करने

वाला और औरत से नफरत करने वाला होगा केतू की आशियाँ का नुकसान होगा कारोबार या रिश्तेदार का।

खाना नं 7 में शुभ असर होगा शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। धन कम चोरी गुम होने पर भी तंग हाल न होगा अगर कभी किस्मत मन्दी हो जाए वो फिर दोबारा खुशहाल हो जाएगा अशुभ असर होगा तो इश्क का परवाना होगा। संतान सुख कम होगा। धन चोरी होगा या मित्र बन्धु खा जाए तों तंग हाल होगा। खाना नं 8 में होगें तो धन दौलत को छोड़कर बाकी सब पर आम असर होगा। शुक्र खाना नं 8 का जो असर है वही होगा। खाना नं 8 में शुभ असर कम होता है।

खाना नं 9 शुभ असर हो तो धार्मिक होगा हर कोई साथ देने वाला होगा। तीर्थ-यात्रा से लाभ होगा। दुनिया का पूरा आराम होगा। दो गुना उम्दा होगा। अशुभ असर होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 10 में शुभ असर होगा तो शानो-शौकत वाला होगा। खुद कमाया धन-दौलत कभी खराब न होगा। अशुभ असर होगा यदि पर स्त्री से ताल्लुक होगा सोना भी मिट्टी हो जाएगा। गुजरे हुए वक्त को याद करता है। क्या शान थी हमारी।

खाना नं 11 गुरू बृहस्पति और शुक्र अपना-अपना फल देंगे। अशुभ होगा तो वीर्य संबंधी बीमारी होगी।

खाना नं 12 में शुभ असर होगा तमाम गृहस्थी आराम सुख होगा। रूहानी सहूलियत प्राप्त होगी। विदेश यात्रा से लाभ होगा। यदि जुआरी या सट्टा खेलेगा तो अशुभ असर होगा।

बृहस्पति-शनि

बृहस्पति शनि साथ-साथ एक ही खाने में बैठे हों या आमने सामने बैठे हों जैसे की एक खाना नं 3 में दूसरा खाना नं 9 में हो राजयोग होता है। जातक जीरो से हीरो हो जाता है। जिन्दगी के सब ऐशो-आराम होते है। जमीन जायदाद वाहन का सुख होता है। लेकिन जिन्दगी में एक बार जातक दुबारा से जीरो अवश्य

होता है यानि की उसका व्यापार रोजगार ठप्प सा हो जाता है। लेकिन कुछ वर्ष बाद वो दुबारा सब कुछ पा लेता है। ऐसा भी कह सकते हैं कि ऐसे जातक को एक बार जिन्दगी में बहुत मुसीबत झेलनी पड़ती है।

खाना नं 1 में यदि मेष राशि में होंगे तो जानदार अशियों का नुकसान होगा। धनदौलत जमीन जायदाद का बहुत सुख होगा। वाहन का सुख होगा। कमर का रोग होगा या पैरों में कोई रोग होगा या उनमें दर्द होता रहेगा। क्योंकि नवम भाव में बृहस्पति की धनु राशि होगी और खाना नं 12 में मीन राशि होगी इसलिए इन दोनों खानों की जानदार अशियों का नुकसान होगा। यदि वृष राशि में होंगे आठवें और नौवें खाने के जानदार आशियों का नुकसान होगा। मिथुन राशि में होंगे तो खाना नं 7 और 10 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। जैसे पत्नी और पिता। कर्क राशि में हों तो खाना नं 6 और 9 की जानादार आशियों का नुकसान होगा। सिंह राशि में हों तो खाना नं 5 और 8 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। कन्या राशि में हों तो 4 और 7 खाना नं की जानदार आशियों का नुकसान होगा। तुला राशि में हों तो खाना नं 3 और 6 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। वृश्चिक राशि में हों तो खाना नं 2 और 5 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। धनु राशि में हों तो खाना नं 4 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। मकर राशि में हों तो खाना नं 12 और 3 की जानदार अशियों का नुकसान होगा। कुंभ राशि में हो तो खाना नं 2 और 11 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। मीन राशि मे हों तो खाना नं 10 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। जानदार आशियों का नुकसान होगा। जो लिखा है अवश्य अगर किसी और ग्रह की मदद न मिल रही हो।

खाना नं 2 में बृहस्पति शनीचर इकट्ठे बैठे हों तो राजयोग होगा। जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा। यदि मेष राशि में हों तो खाना नं 10 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी।(सिर पर और घुटने पर चोट लग सकती है)। वृष राशि में हो तो खाना नं 9 और 12 की जानदार

आशियों का नुकसान होगा। मिथुन राशि में हों तो खाना नं 8 और 11 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। कर्क राशि में होंगे तो खाना नं 7 और 10 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। शादी शुदा जिंदगी भी अच्छी नहीं होगी। सिंह राशि में हो तो खाना नं 6 और 9 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। कन्या राशि में हों तो खाना नं 5 और 8 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। तुला राशि में हो तो खाना नं 4 और 7 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। वृश्चिक राशि में हों तो खाना नं 3 और 6 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। धनु राशि में हों तो खाना नं 5 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। अपनी सेहत भी अच्छी नहीं होगी। सिर पर चोट लगेगी या कोई और रोग होगा। कुंभ राशि में हों तो खाना नं 3 और 12 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। मीन राशि में हो तो खाना नं 11 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। बड़े भाई-बहन का सुख नहीं होगा।

खाना नं 3 में इकट्ठे हों तो राजयोग होगा। जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा। मेष राशि में हों तो खाना नं 2 और 11 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। वृष राशि में हों तो खाना नं 1 और 10 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। अपनी सेहत भी अच्छी नहीं होगी। सिर पर और घुटने पर चोट लगेगी या दर्द होता रहेगा। मिथुन राशि में हों तो खाना नं 12 और 9 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। कर्क राशि में हों तो खाना नं 11 और 8 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। बड़े भाई बहन का सुख नहीं होगा। सिंह राशि में हों तो खाना नं 7 और 10 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। अपनी शादीशुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। तलाक होकर दूसरी शादी भी हो सकती है। कन्या राशि में हों तो खाना नं 6 और 9 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। तुला राशि में हो तो खाना नं 5 और 8 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। संतान सुख कम होगा। वृश्चिक राशि में हों तो खाना नं 4 और 7 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। शादी-शुदा जिंदगी भी अच्छी नहीं होगी। सगाई भी टूट सकती है या शादी भी टूट सकती है। धनु राशि में हों तो

खाना नं 6 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। संतान सुख कम होगा। कुंभ राशि में हो तो 1 और 4 की जानदार आशियों का नुकसान होगा। अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। मीन राशि में हों तो खाना नं 12 की जानदार आशियों का नुकसान होगा।

खाना नं 4, 5, 7, 9, 10, 11 में इकट्ठे बैठे हो तो राजयोग होगा। जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा। ऊपर लिखे गए खाना नं 1, 2, 3 के हिसाब से फलादेश जानें।

खाना नं 6 में बैठे हों तो राजयोग की शर्त नहीं। मेष राशि में हो तो धन हानि होगी। संतान सुख कम होगा। छोटे भाई बहन का सुख होगा। वृष राशि में हो तो छोटे भाई-बहन का सुख होगा। माता का सखु कम होगा। अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। मिथुन राशि में हो तो छोटे भाई बहन का सुख नहीं होगा। कर्क राशि में हों तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। बड़े भाई-बहन का सुख नहीं होगा। आय कम होगी। धन हानि होगी। सिंह राशि में हों तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। कन्या राशि में हों तो पति या पत्नी के छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। पति या पत्नी के गले में टान्सिल या बाजू में चोट लगना नहीं तो सरवाइकल पेन तीनों में से एक अवश्य होगा। तुला राशि में हों तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आयात-निर्यात का व्यापार करेगा। रबड़, प्लास्टिक, या केमिकल लेदर का व्यापार करेगा। वृश्चिक राशि में हों तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। पिता का सुख कम होगा। ध नु राशि में हों तो भाग्य मन्दा होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। मकर राशि में हों तो शिक्षा में रूकावट होगी। संतान सुख कम होगा। कुंभ राशि में हों तो जमीन जायदाद वाहन माता का सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट होगी। मीन राशि में हों तो छोटे भाई बहन का सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट होगी। गले में टान्सिल बाजू में रोग या सरवाइकल पेन होगा।

खाना नं 8 में बैठें हो तो राजयोग की शर्त नहीं। मेष राशि में हों तो जमीन, जायदाद, वाहन माता का सुख कम होगा। अपनी शादीशुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। छाती संबंधी रोग होंगे।

शुगर की बीमारी हो सकती है या पथरी रोग हो सकता है। यदि वृष राशि में हों तो छोटे भाई बहन का सुख कम होगा। कोई भयंकर रोग हो सकता है। कैंसर तक की बीमारी हो सकती है। टान्सिल, बाजू रोग, सरवाइकल भी होगा। मिथुन राशि में हों तो धन हानि होगी। संतान सुख कम होगा। कर्क राशि में हों तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होती है। छाती संबंधी रोग होंगे। सिर पर चोट लगेगी। माता का सुख हल्का होगा। सिंह राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। खर्चा अधिक होगा। कन्या राशि में हों तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। टांग का कोई रोग होगा। तुला राशि में हों तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। ज्योतिष विद्या से धन कमाएगा। वृश्चिक राशि में हों तो आयात-निर्यात का व्यापार करेगा। कम्प्यूटर का करोबार करेगा। कमर में दर्द होगा या कोई और रोग होगा। धनु राशि में होगा तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय कम होगी। ज्योतिष विद्या में रूचि होगी। ज्योतिष विद्या से धन कमाएगा। मकर राशि में हों तो पिता का सुख कम होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। राजदरबार से हानि होगी। कुंभ राशि में हो तो मन्दा भाग्य होता है। भयंकर रोग होगा कैंसर भी हो सकता है। जिगर खराब होगा। मीन राशि में हों तो संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी।

खाना नं 12 में बैठें हो तो राजयोग की शर्त नहीं है। यदि मेष राशि में हो तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। वृष राशि में हों तो पिता का सुख कम होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। रजादरबार से हानि होगी। मिथुन राशि में हों तो मन्दा भाग्य होगा। धन हानि होगी। आंख का रोग होगा। कर्क राशि में हों तो शिक्षा में रूकावट होगी। संतान सुख कम होगा। सिंह राशि में हों तो जमीन जायदाद वाहन माता का सुख कम होगा। शादीशुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। कन्या राशि में हों तो छोटे भाई बहन का सुख कम होगा। टान्सिल, बाजू रोग, या सरवाइकल पेन होगा। तुला राशि में हों तो धन हानि होगी। संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। चेहरे पर या आंख पर कोई रोग होगा। वृश्चिक राशि में हों तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी।

आंख का रोग होगा। कमर दर्द होगा या कोई और कमर रोग होगा। और सुखों में भी कमी आएगी। धनु राशि में हों तो आंख में हल्का रोग होगा। छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। मकर राशि में हो तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। कोई आपरेशन हो सकता है। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। धन हानि होगी। खर्चा अधिक होगा। कुंभ राशि में हो तो पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से हानि होगी। अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। सिर और घुटने पर चोट लगेगी। मीन राशि में हों तो भाग्य मन्दा होगा। कमर का रोग हो सकता है।

बृहस्पति-राहू

यदि बृहस्पति ग्रह हवा है। तो राहू धुआं है। दोनो के इकट्ठे होने पर बृहस्पति की हवा दब जाती है। जिस की वजह से खानदान में किसी बुजुर्ग को सांस की बीमारी होती है। यदि पिता या बाबा की सांस की बीमारी होती है बृहस्पति खराब होगा। यदि ससुराल में ससुर या नाना की सांस की बीमारी होगी तो राहू खराब होगा। ऐसा शख्स हराम या आराम की रोजी का आदी होगा। ऐसा शख्स मेहनत का काम करेगा ही नहीं। मुफ्त में पेट भरने का कोशिश करेगा। बृहस्पति शेर राहू हाथी। बृहस्पति का शेर अपने वचन से हटता नहीं। मुकाबले में कभी झुकता नहीं। अपने जिस्म पर चोट पर चोट चाहे नीला हो जाए सीधा ही चलेगा। राहू का हाथी एक सीधी रास्ते को भी टेढ़ी चालों से नापने से बाज नहीं आएगा। इसी तरह एक सीधा चलेगा दूसरा टेढ़ा चलेगा दो मुसाफिरों का रास्ता कभी बराबर नहीं होगा।

खाना नं 1 में दोनो बैठे हों रोजी रोटी हर वक्त मिलती रहेगी। चाहे वह धनी है चाहे वह गरीब हो सुखी जरूर होगा। घर बैठे बिठाए काम बनते रहेंगे।

खाना नं 2 में बैठे हो जातक धार्मिक काम बहुत करता होगा। परंतु गरीबों का मददगार नहीं होगा। बृहस्पति की आशियों पर कोई बुरा असर नहीं होगा। यहाँ पर राहू खामोश रहेगा।

खाना नं 3 पराक्रमी होगा। बहादुर होना। निडर होगा। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। अगर अशुभ असर होगा तो इसे उल्टा होगा।

खाना नं 4 में बृहस्पति अपने असर के लिए चुप ही होगा यानि कि बृहस्पति का उम्दा असर नही होंगा। अगर यहाँ शुभ होगा तो कोई भी दुर्घटना नहीं होगी। यदि अशुभ होगा तो दुर्घटना होती रहेगी। जैसे वाहन दुर्घटना, रोजगार एकदम से बन्द हो जाना।

खाना नं 5 हाकिम या सरदार होगा। अपने वचन का पक्का होगा। किसी के आगे झुकता नहीं है दो रंग की दुनिया होगी। कभी धनी कभी गरीब कभी निराशा कभी आशा मिलेगी। हर 12 साल के बाद शनि मन्दा आएगा। खानदान में किसी को सांस की बीमारी होगी।

खाना नं 6 बैठे हों तो शत्रुओं पर विजय पाने वाला होता है। बहादुर, शूरवीर होता है। विदेश यात्रा करता है।

खाना नं 7 में हों तो ससुर या पिता को सांस की बीमारी होती है। पत्नी रोगी होगी या धन हानि होगी।

खाना नं 8 में हों तो राजदरबार से हानि होती है। कमर संबंधी रोग होते है। चारो ओर से निराशा जैसे हाल होता है। जातक बेउम्मीद होता है।

खाना नं 9 में हो तो यदि धर्महीन होगा तो कोई भी मान सम्मान नहीं करेगा।

खाना नं 10 में हो तो यदि कंजूस होगा शत्रु बढ़ते जाएंगे। सर दर्द होगा। पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से हानि होगी। यदि शनि अच्छा होगा तो धनी और अच्छा व्यापारी होगा। जिसका भी भला करेगा तो वो टेवे वाला का बुरा ही करेगा।

खाना नं 11 में अपना-अपना फल देंगे।

खाना नं 12 में हो जातक गुणवान बुद्धिमान होता है। विदेश यात्रा से लाभ होता है। अशुभ में होंगे तो इससे उल्टा होगा।

बृहस्पति-केतू

बृहस्पति और केतू दोनो से ही संतान देखी जाती है। यदि दोनो ही शुभ होगा तो संतान सुख होंगे यदि अशुभ होगे तो संतान सुख नहीं होगा दोनो इकट्ठे होने से दोनो का फल उम्दा होगा। बृहस्पति गुरू और केतू उसका चेला है। बृहस्पति किसी की बुराई भलाई नहीं करता। किन्तु केतू किसी बुरे भले के लिए ही अपना छलावा दिखा ही देता है।

खाना नं 1 में हो तो धार्मिक होता है। जातक किसी के यहाँ भी चला जाए उसके यहाँ भी शुभ होता है। जिन्दगी भर आराम पाने वाला होता है। दूसरों में भी सुख बांटने वाला होता है। अगर अशुभ राशि में होंगे तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 2 में यदि शुभ होंगे तो चेहरा चौड़ा माथा होगा। दूसरों का हमदर्द होगा। खुशहाल भाग्यवान होगा। संपन्न परिवार होगा। माथा छोटा होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 3 पराक्रमी होगा। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। धार्मिक होगा। अच्छे विचारों वाला होगा। अशुभ होगा इससे उल्टा होगा।

खाना नं 4 जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा। माता-पिता का सुख होगा बुद्धिमान होगा। अशुभ होगा तो उससे उल्टा होगा। 400 ग्राम पीले नींबू जल प्रवाह करा शुभ होगा।

खाना नं 5 उच्च शिक्षा होगी। अक्लमंद होगा। संतान सुख होगा। अशुभ होंगे तो इसे उल्टा होगा।

खाना नं 6 अच्छी किस्मत वाला होगा। खुशदिल होगा चेहरे लम्बा व नेक स्वभाव होगा। जिसे मौत से पहले ही मरने का आभास हो जाएगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा। 6 लहसुन की गड्डी बाहर वीराने में दबाना शुभ होगा।

खाना नं 7 शादी सुख होगा। धनवान होगा। यदि तपस्वी (ज्यादा पूजा करने वाला) होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 8 में दोनो अशुभ ही होंगे। आलसी होगा।

खाना नं 9 धार्मिक होगा अच्छी किस्मत का साथ होगा। ध ार्मिक भाषा का ज्ञाता होगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 10 अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 11 अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 12 धनवान होगा। विदेश यात्रा से लाभ कमाने वाला होगा।

सूर्य-चन्द्र

सूर्य और चन्द्र 40 साल तक इकट्ठे रहते हैं। यदि दोनो इकट्ठे हों यदि सूर्य का असर 3 हिस्सा हो तो चन्द्र का असर 4 हिस्सा है। लेकिन असर सूर्य का ही नजर आएगा। ऐसे व्यक्ति का बुढ़ापा अच्छा गुजरता है। पैतृक संपत्ति का सुख मिलता है।

खाना नं 1 में हो तो राजा के समान हुक्म देने वाला होता है। माता और संतान का सुख होता है। राजदरबार से लाभ होता है। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 2 में राजदरबार से लाभ सम्पूर्ण मान सम्मान होता है। धनवान होता है। स्त्रियों से आमतौर पर झगड़ा और नफरत होती है। अगर स्त्रियां मुकाबले में हो तो हार होती है। गृहस्थ सुख हल्का होता है।

खाना नं 3 में पराक्रमी होता है। छोटे भाई-बहन का सुख होता है। अशुभ होगा तो उल्टा होगा।

खाना नं 4 में जमीन जायदाद वाहन का सम्पूर्ण सुख होगी। मोती की तरह भाग्य चमकेगा। अशुभ होगा तो मृत्यु अचानक पानी में डूबकर होगी।

खाना नं 5 संतान सुख होगा। अच्छी शिक्षा होगी। बुद्धिमान होगा। अशुभ होगा तो दिल संबंधी और हड्डी संबंधी रोग होंगे।

खाना नं 6 में अपना-अपना फल देंगे।

खाना नं 7 में गृहस्थ सुख होगा। उच्च शिक्षा होगी। संतान सुख होगा। व्यापार में किसी सांझेदारी में लाभ होगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 8 में अपना-अपना फल देंगे।

खाना नं 9 में माता का सुख होगा और माता का सेवक होगा तीर्थयात्रा से लाभ होगा। भाग्य मोती की तरह चमकेगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 10 में अपना अपना फल होगा।

खाना नं 11,12 में हों दोनो का असर मन्दा ही होगा। मांसाहारी शराबी होगा तो उम्र कम होगी। ऐसे व्यक्ति को मांस नहीं खाना चाहिए। और न ही शराब पीनी चाहिए। इससे आयु लम्बी होगी।

सूर्य-मंगल

खाना नं 1 में बैठे हो तो भाइयों और पिता का सुख होगा। शिक्षा उत्तम होगी। साफ दिल होगा। सूर्य की लाली की तरह लाह होगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 2 में हों तो संतान सुख होगा। धनवान होगा। राजदरबार से लाभ होगा। धन बढ़ता ही जाएगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 3 में हो तो पराक्रमी होगा। छोटे भाइयों वाला होगा। अक्लमंद होगा। अशुभ होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 4 माता का सुख होगा जमीन जायदाद वाहन सुख होगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 5 में हो तो अच्छी शिक्षा होगी। संतान सुख होगा। और संतान समझदार पढ़ी लिखी होगी। अशुभ होगा तो इससे उल्ट होगा।

खाना नं 6 में अपना-अपना असर होगा।

खाना नं 7 में अपना-अपना असर होगा।

खाना नं 8 में अपना-अपना असर होगा।

खाना नं 9 में हों तो धार्मिक होगा। साफदिल होगा। राजदरबार से लाभ होगा। धनवान होगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 10 में हो तो राजदरबार से लाभ प्राप्त होगा पिता सुख होगा। टेवे वाला और उसका भाई दोनो ही जायदाद वाले होंगे। अशुभ होगा इससे उल्टा होगा।

खाना नं 11, 12 का अपना अपना असर होगा।

सूर्य-बुध

सूर्य और बुध दोनो ग्रह 29 वर्ष तक साथ रहेंगे। अगर सूर्य का असर 2 हिस्सा हो तो बुध का 1 हिस्सा असर होगा। चाहे दोनो का उत्तम असर हो सूर्य का उत्तम प्रबल होगा। दोनो साथ होंगे। सूर्य कभी अशुभ फल नहीं देगा। बुध बेशक अशुभ फल दें। जिन ग्रहों में सूर्य का फल मन्दा है वहाँ बुध भी मन्दा हो जाएगा। जहाँ बुध मन्दा होगा वहाँ सूर्य मन्दा होगा। सूर्य अगर आत्मा है बुध विधाता की कलम है। सूर्य अगर दुनियावी बंदर है तो बुध लंगूर की दुम की तरह मददगार है। दोनो साथ हो व्यक्ति खुद काम करने की ताकत का आदी होता है। दूसरे की कमाई की उम्मीद नहीं करता। अपनी कमाई पर सब्र रखता है।

खाना नं 1 में मेष राशि में हो सूर्य अशुभ होगा और बुध शुभ होगा। छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। पराक्रमी होगा। शिक्षा में रूकावट होगी। संतान सुख कम होगा। यदि वृष राशि होगा। तो जायदाद जमीन वाहन माता का सुख होगा। धनहानि होगी। संतान सुख हल्का होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। मिथुन राशि मे होगा जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा। लेकिन कुछ कम होगा। माता रोगी होगी। कर्क राशि में हो तो खर्चा अधिक होगा। धनवान होगा। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। धनवान होगा। अच्छी इनकम होगी। बड़े भाई-बहन का सुख होगा। लेकिन अपनी सेहत कुछ खराब होगी। कन्या राशि में

हो तो राजदरबार से लाभ होगा लेकिन कम। जिंदगी के आधे समय के लिए सेहत ठीक होगी। खर्चा अधिक होगा। विदेश यात्रा से लाभ होगा। तुला राशि में हों तो बड़े भाई का सुख कम होगा। किस्मत अच्छी होगी। खर्चा अधिक होगा। विदेश यात्रा से लाभ होगा। आयात-निर्यात काम में लाभ होगा। राजयोग होगा। बड़े भाई-बहन का सुख होगा। पिता का सुख होगा लेकिन आयु शक्की होगी। धनु राशि में होगा तो राजयोग होगा पिता का सुख होगा। धार्मिक होगा। गृहस्थ सुख ठीक होगा। मकर राशि में हों तो मन्दा भाग्य होगा। रोगी होगा। कुंभ राशि में हो तो गृहस्थ सुख होगा। लेकिन संतान सुख कम होगा। मीन राशि में हों तो जमीन जायदाद वाहन माता का सुख होगा। गृहस्थ सुख होगा। लेकिन कुछ रोगी होगा। अन्य सभी खानों में इसी प्रकार फलादेश समझें। यदि सूर्य खराब होगा जिस खाने में सूर्य की राशि होगी उस खाने की वस्तुएं का नुकसान होगा। यदि बुध खराब होगा तो जिस खाने में बुध की रीशि होगी उस खाने की वस्तुऐं का नुकसान होगा।

सूर्य-शुक्र

सूर्य और शुक्र एक साथ बैठे हों तो बृहस्पति पिता बाबा का कोई नेक मतलब नहीं हुआ करता। सूर्य और शुक्र दोनों में एक का फल हो तो हमेशा अच्छा होगा। बल्कि शुक्र फल तो होगा मगर फल न होगा। अगर राजदरबार से बरकत लाभ होगा तो स्त्री की हालत मन्दी होगी।

खाना नं 1 मे सूर्य शुक्र बैठें हो तो अपने लिए और खुद अपनी सेहत और राजदरबार उम्दा होंगे। लेकिन स्त्री का फल अच्छा नहीं होगा। यदि पराई स्त्री से संबंध होगा तो राजदरबार से हानि होगी। जेल तक जाना पड़ सकता है।

खाना नं 2 में बैठें हों तो धर्मिक होगा। परोपकारी होगा। तीर्थयात्रा करने वाला होगा। धनवान होगा। किसी कारण अशुभ हो तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 3 में बैठें हों तो राजदरबार से हानि होगी। छोटे भाई बहन का सुख कम होगा। स्त्री सुख ठीक होगा।

खाना नं 4 में बैठे हों तो वाहन का सुख होगा। जमीन जायदाद का सुख होगा। ऐशो आराम होगा यदि पराई स्त्री से संबंध होगा तो संतान सुख कम होगा।

खाना नं 5 में बैठें हों तो स्त्री को सर की बीमारियां होगी। संतान सुख होगा। दिन में संभोग न करें।

खाना नं 6, 8, 11, 12 में अपना-अपना फल करेंगे।

खाना नं 7 में बैंठे हो तो स्त्री सुख हल्का होगा। स्त्री से लड़ाई झगड़ा होगा। भाग्य भी मन्दा होगा।

खाना नं 9 में हों तो धनवान होगा। तीर्थयात्रा करने पर लाभ होगा। परोपकारी होगा। स्त्री सुख हल्का होगा।

खाना नं 10 में हों तो राजदरबार से लाभ होगा। राजनीति में जाता है। पिता का सुख होता है। यदि खराब हो रहा होगा तो इससे उल्टा होगा।

सूर्य-शनि

सूर्य और शनि साथ बैठें हो या दृष्टि से एक साथ हो रहे हों तो दोनो की तासिर बदल जाएगी। जिस राशि में सूर्य अशुभ हो और शनि अशुभ हो जाएगा। यदि शनि अशुभ हो तो सूर्य अशुभ हो जाएगा।

खाना नं 1 मे सूर्य शनि बैठें हों तो और मेष राशि में हों तो अशुभ हो तो पिता का सुख कम होगा। संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। मन्द बुद्धि होगा दिल या हड्डी संबंधित रोग होंगे। यदि वृष राशि में हों तो जमीन जायदाद का सुख कम होगा। माता का सुख कम होगा। वाहन का सुख कम होगा। राजदरबार से लाभ होगा। राजनीति में जाएगा। अच्छा भाग्य होगा। यदि मिथुन राशि में हों तो भाग्य मन्दा शनि की आशियों की कमी होगी। क्रोधी होगा। पराक्रमी होगा। छोटे भाई

बहन का सुख कम होगा। टान्सिल गले में बाजुओं में दर्द या सरवाईकल दर्द का होना कुछ न कुछ अवश्य होगा। शादी देर से या शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। यदि कर्क राशि में हों तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। यदि अच्छी होगी तो पति पत्नी में से एक की आयु कम होगी। राजदरबार से हानि उठानी पड़ेगी। पिता सुख में भी कमी आएगी। यदि मंगल अशुभ हुआ तो जेल भी जाना पड़ सकता है। यदि सिंह राशि मे बैठें हों तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी रोगी होगा। शादी-शुदा जिंदगी भी अच्छी नहीं होगी। यदि अच्छी होगी तो एक की आयु कम होगी। यदि शनि शुक्र को दृष्टि से देख रहा हो तो बचाव होगा। शुत्रुओ से विजय प्राप्त करेगां पराक्रमी होगा। यदि कन्या राशि में बैठे हों तो खर्चा अधिक होगा। संतान सुख कम होगा। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा। राजदरबार से लाभ होगा। यदि तुला राशि में हो तो बड़े भाई बहन का सुख होगा। अच्छी आय होगी। लेकिन जमीन जायदाद वाहन का सुख कम होगा। संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। वृश्चिक राशि में बैठे हों तो छोटे भाई बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। पिता का सुख कम होगा। या पिता के पैसे का नुकसान होगा। राजदरबार से हानि होगी। धुन राशि में बैठें हो तो धनवान होगा। छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। पराक्रमी होगा। कमर मे दर्द या कोई और रोग होगा। मकर राशि मे हों तो लम्बी आयु होगी। धनहानि होगी। कुंभ राशि में हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नही होगी। छोटे भाई बहन का सुख कम होगा। खर्चा अधिक होगा। मीन राशि में हो तो विदेश यात्रा का का लाभ होगा। लेकिन बचत न के बराबर होगी। अपनी सेहत भी अच्छी नहीं होगी। अन्य सभी खानों में भी राशि का ध्यान रखते हुए फलादेश करें। यदि सूर्य खराब होगा जिस खाने में सूर्य की राशि होगी उस खाने की वस्तुएं का नुकसान होगा। यदि शनि खराब होगा तो जिस खाने में शनि की रीशि होगी उस खाने की वस्तुऐं का नुकसान होगा।

सूर्य-राहू

यदि सूर्य और राहू एक साथ खाना नं 1 में बैठें हो तो

राजदरबार से हानि होगी। संतान सुख कम होगा। ननिहाल सुख कम होगा। धनहानि भी होगी। ऐसे टेवे वाला जिद्दी और क्रोधी होता है।

खाना नं 2 में बैठे हों तो ससुराल से हानि होगी। स्त्री रोगी होगी। धनहानि होगी।

खाना नं 3 में हों तो पराक्रमी होगा। भाई बहन से नुकसान होगा।

खाना नं 4 में हों तो माता का सुख होगा जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा। यदि शरीर पर काले सफेद रंग के धब्बे हों तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 5 में हों तो संतान सुख होगा। राजदरबार से लाभ होगा। यदि अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 6 में हों तो ननिहाल का सुख होगा। शत्रु पर विजय पाने वाला होगा। मुकदमों में जीत होगी। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 7 में हों तो शादी देर से होगी। स्त्री सुख हल्का होगा।

खाना नं 8 में बैठें हों तो अपना-अपना फल देंगे।

खाना नं 9 में हों तो धार्मिक होगा। परोपकारी होगा। तीर्थयात्रा करने वाला होगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 10, 11, 12 में अपना-अपना फल होगा।

सूर्य-केतू

सूर्य केतू यदि इकट्ठे बैठें हों तो केतू बेकार हो जाता है। यदि घर के सामने कुत्ता सूर्य की ओर मुंहकर के भौंकता है तो हानि होगी। ऐसा आदमी व्यर्थ में घूमता रहता है। यदि ऐसा व्यक्ति दूसरों से परामर्श करे तो हानि उठाता है। यात्रा में लाभ नहीं होता। ऐसा व्यक्ति किसी की बुराई करे तो उसका ही नुकसान

होता है। ऐसे व्यक्ति के लड़का होने के बाद धनहानि होती रहती है। कानों का कच्चा होना भी बर्बादी का कारण होता है।

उपायः- 1. गऊ मूत्र घर में छिड़कें। 2. गुड़ और इमली चलते पानी में बहाएं या काले सफेद तिल चलते पानी में बहाएं।

चन्द्र-मंगल

जब दोनो इकट्ठे ऐसे घर में बैठें हों जहाँ चन्द्र शुभ हो वहाँ पर 52 साल उम्र तक दोनो इकट्ठे होंगे और जब दोनो ऐसे घर में जहाँ मंगल शुभ हो तो 38 साल तक इकट्ठे होंगे। दोनो के साथ होने पर दोनो का हिस्सा बराबर होगा। जब मंगल नेक होगा। चन्द्र मंगल दोनो इकट्ठे श्रेष्ठ धन माने जाते हैं। इसलिए जीवन खुशहाल भाग्यवान होता है।

खाना नं 1 में इकट्ठे हों तो लम्बी आयु होती है। धनवान होता है। जमीनजायदाद माता वाहन का सुख होता है। यदि अशुभ हो तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 2 में हों तो धनवान होता है। सेहत अच्छी होती है। यदि घंटी नगाड़े ढ़ोल बजाकर पूजा करेगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 3 में हों तो अक्लमंद पराक्रमी राजदरबार से लाभ दौलतमंद अमीर होगा। लेकिन अहंकारी होगा जिसे किसी की परवाह नहीं होगी। यदि अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 4 में हों तो धन दौलत बढ़ता रहेगा। जमीनजायदाद वाहन माता का सुख उम्दा होगा। धन दौलत बढ़ता रहेगा। जमीन जायदाद, वाहन, माता का सुख उम्दा होगा। अशुभ होगा तो उल्टा होगा। यदि वृश्चिक राशि में हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी या सगाई टूट जाएगी।

खाना नं 5 में हों तो संतान सुख होगा। शिक्षा अच्छी होगी। संतान पढ़ी लिखी होगी। समझदार होगी। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

खाना नं 6 में हों तो अपना-अपना फल देंगें।

खाना नं 7 में हों तो धनदौलत खूब होगा। अमीर कबीला होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। अशुभ होगा तो उल्टा होगा।

खाना नं 8 अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 9 में हों तो खुद का भाग्य जैसा मर्जी हो लेकिन औलाद धनी होगी।

खाना नं 10, 11 में हो अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 12 में हों तो यात्रा से लाभ प्राप्त करेगा। रात को हर प्रकार का आराम होगा। मीठी मीठी नींद आएगी। शांतिप्रिय होगा। यदि अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा।

चन्द्र-बुध

दोनो ऐसे घरों में बैठे हो जहाँ बुध शुभ हो तो चन्द्र भी धर्मात्मा और नेक फल देगा।

खाना नं 1 में अपना-अपना फल देगा।

खाना नं 2 में पिता सुख होगा। धनवान होगा। यदि अशुभ होगा तो इसका उल्टा होगा।

खाना नं 3 में हों तो अपना-अपना फल देगें।

खाना नं 4 में हों तो जमीन जायदाद वाहन माता का सुख कम होगा। दूसरों के काम आने वाला होगा। यदि इश्कबाज होगा तो बर्बाद होगा। आत्महत्या तक कर सकता है।

खाना नं 5 संतान सुख कम होगा। लड़कियां ज्यादा होगी।

खाना नं 6 में अपना-अपना फल देंगे।

खाना नं 7 में हों तो धनवान होगा पर फिर भी दुखी होगा। दुर्घटना का भय होगा। माता को भी चोट लगती रहेगी। टेवे वाले की किस्मत होगी जैसे बकरी दूध तो देगी परंतु मेंगने डालकर।

खाना नं 8, 9 में अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 10 में हों तो स्त्री सुख हल्का होगा। संतान होगी पर उससे संबंध अच्छे नहीं होंगें। दुर्घटना का भय होगा।

खाना नं 11, 12 में अपना-अपना फल होगा।

चन्द्र-शुक्र

चन्द्र और शुक्र दोनो ग्रह 37 साल तक इकट्ठे होते हैं। चन्द्र शुक्र इकट्ठे हों वो ऐसा पानी होता है जिससे मिट्टी धुली हुई हो कीचड़ की तरह किस्मत होगी। दोनो ग्रहों के अपने-अपने घरों का हाल मन्दा होगा। यानि शुक्र है स्त्री और चन्द्र माता। चन्द्र दूध है तो शुक्र दही है। चन्द्र दूध रंग की रेशमी कपड़ा है तो शुक्र सूती कपड़े होंगे। खेती की जमीन शुक्र होती है मकान की तह की जमीन चन्द्र होती है। चन्द्र अगर दुनिया का धन दौलत माया है तो शुक्र जगत लक्ष्मी बोलती हुई मिट्टी की मोहनी तस्वीर होगी। फर्क इतना होगा चन्द्र चांदी ठोस धातु शांति के लिए रूपए पैसे के लिए है तो शुक्र जानदार वस्तुएं है। स्त्री गृहस्थ सुख के लिए है।

खाना नं 1 में हों तो अपना-अपना फल देंगे।

खाना नं 2 में हों तो इश्कबाज में नंबर 1 होगा। ऐसे व्यक्ति को कोई शफा होती है। जिससे आम लोगों की बीमारियां ठीक करता है। जब भी कुआं खुदवाएं या पानी का प्याउ लगवाएं असर मन्दा होगा।

खाना नं 3 में अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 4 में हों तो माता सुख होता है। यदि चन्द्र अशुभ होता है शुक्र भी अशुभ होगा। तब स्त्री सुख भी मन्दा होगा या स्त्री रोगी होगी। शराफत वाला होगा।

खाना नं 5, 6 में अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 7 में हों तो धनवान होगा। दान करने वाला परोपकारी होगा। धार्मिक होगा। दूसरों का मान आदर करने वाला

होगा। यदि दान करने वाला परोपकारी नहीं होगा तो बर्बाद होगा।

खाना नं 8, 9 में अपना-अपना फल होगा।

खाना नं 10 में हों तो राजदरबार से लाभ होगा। पिता का सुख होगा। स्त्री और माता का भी सुख होगा।

खाना नं 11, 12 में अपना-अपना फल होगा।

चन्द्र-शनि

दोनो साथ हों तो अंधा घोड़ा या दरिया में बहता हुआ मरता होगा। एक भला होगा तो दूसरा मन्दा होगा। सांप को दूध पिलाना शुभ होगा।

यदि खाना नं 1 में हों और मेष राशि में हो तो माता का सुख हल्का जमीन जायदाद का सुख कम होगा। वाहन का सुख कम होगा। दाढ़ी मूंछ रखना मुबारिक होगा। वृष राशि में होगा तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। डरपोक होगा। यदि मिथुन राशि में होगा तो धन हानि होगी। यदि कर्क राशि में हों तो अपनी सेहत अच्छी नहीं होगी। यदि सिंह राशि में हों तो खर्चा अधिक होगा विदेश यात्रा करता है। कुंभ, कन्या राशि में हों तो बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय कम होगी। या उतार-चढ़ाव आता रहेगा। टांगों में दर्द या उसकी हड्डी टूट सकती है। यदि तुला राशि में हों तो राजयोग होगा पर जेल भी जाना पड़ सकता है। शिक्षा में रुकावट आती है। शादी-शुदा जिंदगी भी अच्छी नहीं होती। कभी-कभी शादी होती भी नही है। यदि वृश्चिक राशि में हों तो पिता का सुख कम होता है। राजदरबार से हानि होती है। भाग्य मन्दा होता है। छोटे भाई बहन का सुख होता है। पराक्रमी होता है। यदि धनु राशि में हों तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होता है। या किसी की छोटी आयु होती है। अपनी भी आयु कम होती है। यदि मकर राशि में हों तो अपनी शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होती। तलाक तक हो जाता है। यदि कुंभ राशि में हों तो खर्चा अधिक होता है। विदेश यात्रा से लाभ होता है। शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। लेकिन कुछ रोग भी होते हैं। छोटे भाई

बहन का सुख कम होता है। यदि मीन राशि में हो तो खर्चा अधिक होता है। बचत न के बराबर होती है। संतान सुख कम होता है। शिक्षा में रुकावट आती है।अन्य सभी खानों का इसी प्रकार फलादेश समझें। यदि चन्द्र खराब होगा जिस खाने में चन्द्र की राशि होगी उस खाने की वस्तुएं का नुकसान होगा। यदि शनि खराब होगा तो जिस खाने में शनि की रीशि होगी उस खाने की वस्तुऐं का नुकसान होगा।

उपायः- 1.खालिस पानी लगातार 43 दिन तक न पिएं यानि पानी में कुछ न कुछ मिलाएं और जैसे खांड, नींबू, शरबत, जो भी चाहे मौसम के अनुसार लेते रहें। 2. दो रंग के जानवर के माथे पर काला रंग लगाएं।

चन्द्र-राहू

चन्द्र राहू साथ-साथ हों तो राहू का भूचाल 45 वर्ष के उम्र के बाद ही रुकेगा। और 45 दिन या 45 महीने 45वें साल चन्द्र व राहू दोनो का फल बरबाद होगा। चन्द्र राहू साथ के वक्त राहू बंधा हुआ खतरनाक हाथी जो दरिया के रास्ते भी रोक दे। खुद भी बरबाद हो जावे। टेवे वाला धनी होगा। राहू का भूचाल चन्द्र से रुक जाता है। और चन्द्र बैठा होने वाला घर से आगे नहीं जा सकता। दोनो का ही अशुभ असर होगा तो ससुराल घर बरबाद होगा। स्त्री सुख हल्का होगा। यदि शुभ होगा। स्त्री ससुराल मन्दा न होगा। जद्दी घर बार में रोनक होगी। धन में बरकत होगी। अशुभ होगा तो काले सफेद धब्बे होंगे। और मोटे होंगे उभरे हुए।

चन्द्र-केतू

चन्द्र केतू साथ-साथ हों तो माता शुक्र धर्मात्मा होती हुई भी बदनाम औरत नजर आएगी। यानि के चन्द्र को ग्रहण होगा। जमीन जायदाद में उलझता ही रहेगा। यात्रा में मन्दी होगी दोनो का मन्दा असर अमूनन माल जानों पर होगा। बाकी सब बातों में नहीं मन्दा असर होगा। तो चन्द्र राहु का होगा क्योंकि चन्द्र केतू के समय राहू का असर भी मिल रहा होगा।

मंगल-बुध

मंगल बुध साथ-साथ बैठे हों तो टेवे वाले की अपनी बहन से नहीं बनती है। आपस में झगड़ते रहते हैं और उसके भाई की भी हानि होती रहती है। वर्षफल में जब दूबारा से उसी खाना नं आ जाए जिस खानें में जन्म के वक्त था तो भाई को या बहन को हानि होती है।

यदि मंगल बुध खाना नं 1 बैठै हों तो टेवे वाला औरत के कहने पर चलता है। अपनी सारी कमाई अपनी पत्नी को देता रहता है। सेहत अच्छी रहती है। और ससुराल खानदान को तार देता है। साला-साली की मदद करता रहता है।

यदि खाना नं 2 में हों तो संतान सुख होता है। धनवान होता है। धार्मिक होता है।

खाना नं 3 में हों तो ईश्वरीय सहायता प्राप्त होती है। बड़े भाई का साथ हो तो सुखी नहीं होता दुखी। संतान सुख अवश्य होगा।

खाना नं 4 में अपने लिए अच्छा होता है। पर दूसरों के लिए अशुभ होगा।

खाना नं 5 में हो तो टेवे वाले की बात पत्थर पर लकीर होती है। उसके मुंह से कही हुई बात हमेशा पूरी होती है। संतान सुख होता है। शिक्षा अच्छी होती है। बुद्धिमान होता है।

खाना नं 6, 7 में अपना-अपना फल करेंगें।

खाना नं 8 में अकेले मन्दा असर होता है। लेकिन अब मन्दा असर न होगा।

खाना नं 9, 10, 11 और 12 में अपना-अपना असर देगें।

मंगल-शनि

मंगल शनि दोनो ग्रह 40 वर्ष तक साथ रहेंगे। मंगल 3 भाग शनि 4 भाग होगा। अगर नेक हालत हुई डाकू एक ही

असूल के इकट्ठे मिले हुए की तरह बुढ़ापे में छुपते हुए सूर्य की तरह किस्मत की उम्दा शान होगा। दिलेर बहादुर उम्दा सेहत वाला होगा। अगर मन्दा हुए तो धनदौलत परिवार दोनो उजड़े और बीमारी जहमत होगी।

खाना नं 1 में मंगल शनि साथ हों तो अैर मेष राशि में हों शनि का शुभ फल होगा। मंगल का अशुभ फल होगा। पिता का सुख होगा। राजदरबार से लाभ होगा। राजनीति में जा सकता हे। बड़े भाई-बहन का सुख होगा। लेकिन मंगल की वस्तुएं का नुकसान होगा। यदि वृष राशि में होगा तो भी शुभ असर होगा। मंगल का अशुभ असर होगा। खर्चा अधिक होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। धनवान होगा। पिता का सुख होगा। भाग्य अच्छा होगा। राजदरबार से लाभ होगा। राजनीति में जाएगा यदि मिथुन राशि में होंगे तो बड़े भाई बहन का सुख कम होगा। रोगी होगा। आयु कम होगी। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। टान्सिल बाजुओं में दर्द या सरवाइकल दर्द होगा। यदि कर्क राशि में हो तो शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। पिता का सुख कम होगा। राजदरबार से हानि होगी। संतान सुख कम होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। यदि सिंह राशि में हों तो व्यक्ति अपना जन्म स्थान छोड़ देगा। माता का सुख कम जमीन जायदाद का सुख कम वाहन का सुख कम होगा। शादी-शुदा जिदंगी अच्छी नहीं होगी। यदि कन्या राशि में हों तो छोटे भाई बहन का सुख कम होगा। उच्च शिक्षा होगी। संतान सुख होगा। लेकिन रोगी होगा। यदि तुला राशि में होंगे तो शिक्षा में रूकावट आएगी। शादी-शुदा जिदंगी अच्छी नहीं होगी। धन आदि का नुकसान होगा। जमीन जायदाद का सुख होगा। माता का सुख होगा। वाहन का सुख होगा। टानसिल का रोग बाजुओं में दर्द या सरवाइकल दर्द होगा। छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। यदि वृश्चिक राशि में हों तो रोगी होगा। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। जमीन, जायदाद, वाहन, माता का सुख होगा। यदि धनु राशि में होगा तो धन होगी। चेहरे पर चोट या कोई और रोग होगा। आंखों की बीमारी होगी। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। शिक्षा में रूकावट आएगी। संतान सुख कम

होगा। पेट के रोग होंगे। खर्चा अधिक होगा। यदि मकर राशि में हों तो जमीन, जायदाद, वाहन, माता का सुख कम होगा। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। धन आता रहेगा। यदि कुंभ रीशि में हों तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। टान्सिल का रोग या बाजुओं में दर्द या सरवाइकल दर्द होगा। पत्नी के कमर में दर्द होगा। पत्नी के छोटे भाई-बहन की शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। राजदरबार से हानि होगी। पिता सुख कम होगा। जेल तक भी जाना पड़ सकता है। यदि मीन राशि में होंगे तो बचत न के बराबर होगी। खर्चा अधिक होगा। धनहानि होगी। बड़े भाई-बहन का सुख होगा। विदेश यात्रा से धन कमाएगा।

खाना नं 2 में मंगल और शनि एक साथ बैठे हों तो खाना नं 2 और खाना नं 9 की अशियों का नुकसान होगा। खाना नं 11 की अशियों का लाभ होगा। यदि वृष राशि में बैठे हों तो खाना नं 1 की आशियों का नुकसान होगा। और खाना नं 10 और खाना नं 11 की अशियों का लाभ होगा। यदि मिथुन राशि में हों तो खान नं 4, 7, 12 का नुकसान होगा। और खाना नं 9 , 10 की अशियों का लाभ होगा। यदि कर्क राशि में हो तो खाना नं 11 की अशियों का नुकसान होगा। खाना नं 8, 9 की अशियों का लाभ होगा। यदि सिंह राशि में हों तो खाना नं 2, 5, 10 की अशियों का नुकसान होगा। खाना नं 7, 8 की अशियों का लाभ होगा। यदि कन्या राशि में हों तो खाना नं 4, 9 की अशियों का नुकसान होगा। खान नं 7 की अशियों का लाभ होगा। यदि तुला राशि में हों तो खाना नं 3, 4 की अशियों का नुकसान होगा। खाना नं 5 की अशियों का लाभ होगा। यदि वृश्चिक राशि में हों तो खाना नं 7 की अशियों का नुकसान होगा। खाना नं 4, 5 का शुभ फल होगा। यदि धनु राशि में हों तो खाना नं 2, 5, 6 का फल अशुभ होगा। खाना नं 3, 4 का शुभ फल होगा। यदि मकर राशि में हों तो खाना नं 5 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 2, 3 का शुभ फल होगा। यदि कुभ राशि में हों तो खाना नं 4, 11 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 1, 2 का शुभ फल होगा। मीन राशि में हों तो खान नं 3, 10 और 11 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 1 का शुभ

फल होगा।

खाना नं 3 में मेष राशि में मंगल और शनि बैठे हों तो खाना नं 3, 10 का अशुभ फल होगा। खाना नं 1, 12 का शुभ फल होगा। यदि वृष राशि में हों तो खाना नं 2 और 9 का अशुभ फल होगा। खाना नं 11, 12 का शुभ फल होगा। यदि मिथुन राशि में हों तो खान नं 1, 5, 9 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 10, 11 का शुभ फल होगा। यदि कर्क राशि में हों तो खाना नं 7, 12 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 9, 10 का शुभ फल होगा। यदि सिंह राशि में हों तो खाना नं 3, 6, 11 का अशुभ फल होगा। खाना नं 9 का शुभ फल होगा। यदि कन्या राशि में हों तो खाना नं 5, 10 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 7 का शुभ फल होगा। यदि तुला राशि में हो तो खाना नं 4, 5, 9 का अशुभ फल होगा। खाना नं 7 का शुभ फल होगा। यदि वृश्चिक राशि में हों तो खाना नं 3, 8 का अशुभ फल होगा। खाना नं 5 का शुभ फल होगा। यदि धुन राशि में हों तो खाना नं 2, 3, 7 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 4, 5 का शुभ फल होगा। यदि मकर राशि में हों तो खाना नं 1, 6 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 3, 4 का फल शुभ होगा। यदि कुभ राशि मे हों तो खाना नं 5, 9, 12 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 2, 3 का शुभ फल होगा। यदि मीन राशि में बैठे हों तो खाना नं 4, 11, 12 का अशुभ फल होगा। और खाना नं 1, 2 का शुभ फल होगा।

यदि मंगल शनि इकट्ठे बैठें हों तो मंगल का जिस खाने से संबंध होगा। यानि के मंगल की मेष राशि और वृश्चिक राशि होगी उसे खाने का अशुभ फल होगा। और मंगल की अशियों का अशुभ फल होगा। चाहे मंगल शनि किसी भी खाना नं बैठे हों।

मंगल-राहू

मंगल रोटी पानी है तो राहू चूल्हा है। मंगल महावत हैं तो राहू हाथी है। यदि मंगल राहू इकट्ठे बैठें हों तो राहू का फल अलग नहीं होता। अब राहू शरारत नहीं कर सकता। यदि जिस्म पर

लहसुन का निशान हो तो राहू बिगड़ा हुआ हाथी होगा। अपनी ही फौज को मारता होगा। ऐसे समय खाना (रोटी) रसोई घर में बैठ कर खाए तो राहू चुप रहेगा।

मंगल-केतू

मंगल बद होगा और गोली या जंतर से मारा हुआ मंगल शेर केतू कुत्ता मंगल केतू की बाहम झगड़े से मंगल का प्रभाव कम हो रहा हो तो दो कुत्ते नर मादा का काले सफेद रंग का रखना शुभ होगा। सात तरह के फल लगातार 9 दिन तक गरीबों में बांटना शुभ होगा। मंगल नेक होगा तो अच्छा होगा। संतान सुख कायम होगा।

बुध-शुक्र

बुध शुक्र खाना नं 1 में बैठें हों तो किस्मत नेक होती है। राजदरबार से लाभ होता है। यदि अशुभ हो तो अल्प आयु होती है। नौकर चाकर का सुख नहीं होता है।

खाना नं 2 में यदि शुभ हों तो व्यापारी उम्दा होवे। आढ़ती उम्दा होवे। चाल-चलन भी उम्दा होगा। यदि चाल-चलन उम्दा न होगा तो अशुभ फल होगा।

खाना नं 3 में बैठें हों तो पत्नी पतली होगी। छोटे भाई-बहन का सुख होगा। जब तक माता का साथ होगा। सुखी रहेगा।

खाना नं 4 में बैठें हों तो व्यापारी होगा। राजयोग होगा। उम्दा होगा। धनवान होगा। यदि अशुभ हुआ तो ससुराल खानदान बर्बाद होगा। बुध और शुक्र के कारोबार मन्दा असर देंगे। बुध के बरतन ढ़ोल राग रंग और बाजे शुक्र के खेती बाड़ी गाय बैल के कारोबार निकम्मा असर देंगे। मामू खानदान भी मन्दा होगा।

खाना नं 5 में हों तो संतान सुख होगा। शिक्षा अच्छी होगी। यदि इश्कबाज होगा तो बरबाद होगा।

खाना नं 6 में हों तो अपने लिए राजयोग होगा। लोहे की तरह मजबूत बुध की रेल शुक्र की मिट्टी सीमेन्ट का काम देगी।

यदि लड़के न भी होवे लड़कियों का फल लड़को से भी उम्दा होगा। औरत मददगार होगी। गृहस्थ जीवन उम्दा होगा। यदि औरत की बेइज्जती करेगा या झगड़ा करेगा तो हाल मन्दा ही होगा।

खाना नं 7 में हों तो ग्रह फूलों की तरह उम्दा होंगे शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। उम्दा व्यापारी आढ़ती होगा। अशुभ होगा तो इससे उल्टा होगा। कांसे का कटोरा दान देना शुभ होगा।

खाना नं 8 में दोनो ग्रह हो तो मन्दा ही फल करेगें।

"रब्ब ने बनाई जोड़ी-इक अंधा तो दूजा कोढ़ी

राख भरी दो मिलकर बोरी-जितनी उड़े उतनी थोड़ी"

मामू खानदान बरबाद होंगे। शादी-शुदा जिंदगी और संतान सुख भी कम होगा।

खाना नं 9 में अपना-अपना फल देंगे।

खाना नं 10 में हों तो उम्दा सेहत का मालिक होगा। अक्ल मंद होगा। अशुभ फल होगा तो जहरीला असर होगा।

खाना नं 11, 12 का अपना-अपना असर होगा।

बुध-शनि

बुध शनि दोनो ग्रह जब भी एक साथ होंगे मेष सिंह धनु राशि में दोनो अशुभ फल करेंगे।

खाना नं 1 में और मेष राशि में हों तो दोनो अशुभ फल करेगें। छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। डरपोक होगा। पिता का सुख हल्का होगा। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय कम होगी लेकिन खाना नं 6 की अशियों का लाभ होगा। यदि वृष राशि में बैठें हों तो धनवान होगा। संतान सुख होगा। शिक्षा अच्छी होगी। राजयोग होगा पिता का सुख होगा। राजदरबार से लाभ होगा। यदि मिथुन राशि में हों तो सेहत अच्छी होगी। जमीन जायदाद वाहन माता का सुख होगा। अच्छी किस्मत होगी। यदि

कर्क राशि में हों तो खर्चा अधिक होगा। शादी-शुदा जिदंगी अच्छी नही होगी। यदि शनि शुक्र को नहीं देख रहा होगा। पति पत्नी में से किसी की आयु कम होगी। यदि सिंह राशि में हों तो धन हानि होगी। चेहरे पर कोई रोग होगा। नजर कमजोर होगी। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। आय कम होगी। रोगी होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। यदि शनि शुक्र को नहीं देख रहा होगा तो। यदि कन्या राशि में हों तो अच्दी सेहत होगी। राजयोग होगा। राजदरबार से लाभ होगा। पिता का सुख होगा। संतान सुख होगा। शिक्षा अच्छी होगी। लेकिन कोई न कोई बीमारी होगी। यदि तुला राशि में होंगे तो खर्चा अधिक होगा। राजयोग होगा। अच्छी शिक्षा होगी। संतान सुख होगा। जमीन जायदाद वाहन माता का सुख होगा लेकिन टान्सिल रोग, बाजुओं में दर्द या सरवाइकल दर्द होगा शादी-शुदा जिदंगी अच्छी नही होगी। यदि खाना नं 1 में शनि बुध होंगे तो एक ही लाभ होगा शिक्षा का या शादी-शुदा जिन्दगी का। यदि वृश्चिक राशि में हों तो छोटे भाई-बहन का सुख होगा। पराक्रमी होगा। आयु लम्बी नही होगी। यदि धनु राशि में होंगे तो सेहत अच्छी नहीं होती। धनहानि होगी। चेहरे पर चोट लगेगी कोई रोग होगा या नजर कमजोर होगी। राजदरबार से हानि होगी। पिता का सुख कम होगा। माता पिता में क्लेश होगा। यदि मकर राशि में हों तो धनवान होगा। व्यापारी होगा। नेक किस्मत होगी। पर कुछ न कुछ रोग होगा। यदि कुभ राशि में हों तो खर्चा अधिक होगा। सेहत ठीक होगी। लेकिन आयु कम होगी। संतान सुख होगा। शिक्षा अच्छी होगी। यदि बुध शनि वृष, मिथुन, कन्या, तुला, मकर, कुंभ, राशि में हों तो शुभ फल करेंगे। अपनी आशियों का शुभ फल करेंगे। और जिस खाने में मिथुन, कन्या, मकर और कुभ राशि होगी। उस खाने से संबंधित अशियों का शुभ फल करेंगे। यदि कर्क वृश्चिक मीन राशि में होंगे तो मिश्रित फल करेंगे। जैसे खाना नं 1 का फल समझा दिया गया वैसे ही बाकी खानों का फलादेश समझें।

बुध-राहू

बुध और राहू दोनो मिलकर चन्द्र बृहस्पति को बरबाद करते

हैं। यदि राहू हाथी है तो बुध उसकी सूड़ है। दूसरों का कभी भी भला न करने वाला यदि दोनो ग्रह किसी भी खाने में वृष, मियुन, कन्या, तुला, मकर, कुंभ राशि में होंगे तो अच्छा फल करेंगे। यदि वृष, तुला राशि में हों तो हो तो शुक्र को देखना अवश्य पड़ेगा। शुक्र अगर शुभ होगा तो दोनो शुभ फल करेंगे। यदि शुक्र अशुभ होगा तो दोनो अशुभ फल करेंगे। जिस खाने में राहू बुध होंगे उस खाने की अशियों की हानि करेगा। साथ ही जहाँ पर वृष, तुला, राशि होगी उस खाने की भी अशियों की हानि करेगा। ऐसे ही मकर, कुंभ राशि में होने पर शनि की हालत पर निर्भर करेगा मेष, सिंह, धनु, राशि में बुध अशुभ फल करेगा जहाँ बैठा होगा और जिस खाने में बुध की राशियाँ होगीं उसका भी अशुभ फल होगा। राहू मेंष राशि के लिए मंगल को देखेंगे जैसे मंगल होगा वैसे ही फल करेगा। सिंह राशि के लिए सूर्य को देखेंगे जैसे सूर्य होगा वैसा ही फल करेगा। धनु राशि के लिए बृहस्पति को देखेंगे जैसा बृहस्पति होगा राहू वैसा ही फल करेगा। ऐसे ही कर्क, वृश्चिक, और मीन राशि का फल होगा।

उपायः- कच्ची मिट्टी की 100 गोलियां बनाकर रख लें। फिर एक गोली रोज धर्मस्थान में डालें। लगातार 100 दिन नागा न होने पावे। चाहे धर्मस्थान बदल सकते हैं।

बुध-केतू

बुध केतू साथ होने पर व्यक्ति बहुत चालाक चतुर होता है। क्योंकि दोनो ही चालाक चतुर ग्रह हैं। कब किधर हो जाएं पता ही नहीं चलता। बुध केतू का भी वैसे फल जाने जैसा बुध राहू का है।

उपायः- रात, पक्की शाम शनिवार की या वीरवार की पक्की शाम को बादाम और नारियल जलाना, भूनना या तलना मन्दा फल देगा इसलिए ऐसा न करें।

शुक्र-शनि

शनि पर जब भी कोई चोट होगी शुक्र कुर्बानी करता होगा।

शनि प्रेमी है तो शुक्र प्रेमिका है। जब शनि शुक्र को देखे तो मददगार होगा। जब दोनो खाना नं 3 में हो तो और खाना नं 3 में मेष राशि में हो तो जमीन जायदाद वाहन माता का सुख कम होगा। अच्छी किस्मत वाला होगा। पत्नी साथ निभाने वाली होगी। विदेश यात्रा से लाभ या विदेश में व्यापार करता है। सेहत अच्छी नही होती। पत्नी एकदम पतली होगी। नहीं तो अशुभ फल होगा। यदि वृष राशि में होंगे तो छोटे भाई-बहन का सुख होता है। पराक्रमी होगा। आय जितनी भी अधिक होगा बचत कम ही होगी। बड़े भाई-बहन का सुख होगा। विदेश में व्यापार करने वाला होगा। यदि मिथुन राशि में हों तो धनवान होगा। मामा भी अमीर होगा। पिता का सुख होगा। राजदरबार सेलाभ होगा। बड़े भाई-बहन का सुख होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी होगी। शिक्षा और संतान सुख कम होगा। पेट कमर के रोग होंगे। यदि कर्क राशि में होंगे तो सेहत अच्छी होगी राजयोग होगा। ऐशो आराम का सब समान होगा। पिता सुख होगा। राजदरबार से लाभ होगा। यदि सिंह राशि में होंगे तो संतान शिक्षा सुख कम होगा। विदेश यात्रा होती रहेगी। उम्मीद से कम ही मिलेगा। यदि कन्या राशि में होगा जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा। बड़े भाई-बहन का सुख कम होगा। शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगा पर तलाक नहीं होगा। जिन्दगी साथ रहकर कर जाएगी। यदि तुला राशि में होंगे तो छोटे भाई बहन का सुख होगा। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। लेकिन तलाक नहीं होगा। लड़ते झगड़ते जिन्दगी कट जाएगी। संतान और शिक्षा का सुख कम होगा। किस्मत का आध ार मंगल पर होगा। कमर को रोग होगा। यदि वृश्चिक राशि में होंगे धनवान होगा। शिक्षा संतान का सुख होगा। संतान सुख होगा। लेकिन कुछ हल्का माता का सुख कम होगा पैरों में रोग होगा। यदि धनु राशि में होंगे तो छोटे भाई-बहन का सुख कम होगा। संतान सुख होगा शिक्षा अच्छी होगी। जमीन जायदाद और माता का सुख कम होगा। यदि मकर राशि में होंगे तो शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं होगी। जमीन जायदाद माता वाहन का सुख होगा। विदेश यात्रा से लाभ होगा। या विदेश में ही व्यापार करेगा। नहीं तो आयात-निर्यात का व्यापार करेगा। यदि कुंभ राशि में होंगे

तो धनवान होगा। संतान और शिक्षा का सुख हल्का होगा। किस्मत का फैसला सूर्य पर होगा यदि मीन राशि में होंगे तो संतान शिक्षा सुख होगा। जमीन जायदाद सुख कम होगा। राजदरबार से लाभ होगा। पिता सुख होगा। किसी सरकारी नौकरी पर कार्यरत होगा।

बाकी के घरों का भी ऐसे फलादेश करें यदि शनि शुक्र अशुभ होंगे अपनी आशियों का अशुभ फल करेंगे और जिस खाने में उनकी राशि पड़ेगी उस खाने का भी अशुभ फल करेंगे। यदि शुभ होंगे तो अपनी आशियों का शुभ फल करेंगे और अपनी राशियों वाले खाने का अशुभ फल करेंगे।

शुक्र-राहू

शुक्र और राहू इकट्ठे बैठें हों तो ज्यादातर औरत की सेहत अच्छी नहीं होती है। शुक्र और राहू का फल भी खाने अनुसार वैसा ही होगा जैसा बुध और राहू में समझाया गया है। मन्दे की निशानी होगी। टेवे वाला व्यक्ति हाथ के नाखून बड़े रखता होगा। और उनमें नेल पालिश लगाता होगा। और आंखों में सूरमा डालता होगा। ये शुक्र राहू की मन्दे की निशानी होगी। धोए हुए चावल खालिस चांदी के डिब्बी में घर में रखना शुभ होगा। सौंफ चीनी वीराने में दबाना मददगार होगा। स्त्री के हाथों से नीला फूल पक्की सांय के समय दबाना शुभ होगा।

शुक्र-केतू

शुक्र केतू इकट्ठे बैठें हों तो संतान सुख होगा और गृहस्थ सुख होगा। बाकी शुभ अशुभ फल जैसा कि बुध-केतू के खाने के अनुसार समझाया गया है वैसा ही होगा।

शनि-राहू

शनि राहू यदि साथ बैठें हो और शुभ हों तो टेवे वाला धनवान खजाना का मालिक बनता है। हर किसी की सहायता को तैयार रहता है। राजा के समान हुक्म चलाने वाला होता है। उसकी हर

इच्छा पूरी होती है। यदि शरीर पर लहसुन का निशान हों तो इसका उल्टा होगा। और अपने पैतृक सम्पत्ति की भी हानि करेगा। बादाम तले और भुने हुए न खाएं। बाकी खानों के अनुसार फल जिस राशि में बैठे हो उस राशि के ग्रह की हालत से लगाएंगें। जैसा कि बुध राहू में समझाया गया है।

शनि-केतू

शनि केतू दोनो इकट्ठे होंगे तो संतान जरूर होगी। चाहे संतान का घर अशुभ होवे यदि टेवे वाला कोई जानवर रखें तो जानवर एक रंग का होना चाहिए। घोड़े का कोई वहम नहीं बाकी का अशुभ फल खाना के अनुसार जिस राशि में हों उसी राशि के ग्रह के अनुसार होगा। ज़ैसा की बुध केतू या बुध राहू में समझाया गया है।

एक ही ग्रह को देख कर फलादेश न करें न ही समझें। सभी ग्रहों का अध्ययन करने के बाद ही फलादेश करें और समझें। कोई भी उपाय 43 दिन 43 हफ्ते या 43 माह लगातार करें। एक उपाय पूरा होने के बाद दूसरा उपाय 2 हफ्ते बाद शुरू करें। दबाने वाले उपायों में ध्यान रखें जिस औजार से खोदें उसे भी वहीं छोड़ आएं। उपाय करने से पहले अच्छी तरह समझ लें कि जिस ग्रह का उपाय करने जा रहें हैं। वह ग्रह खराब फल दे रहा है। यदि ऐसा न हुआ तो अच्छा ग्रह भी खराब हो जाएगा।

नोट — जहाँ पर लिखा है कि फलां फलां वस्तुएं का सुख कम होगा इसका मतलब यह नहीं है कि वो वस्तुएं मिलेगी ही नहीं वस्तुएं मिलेगी परंतु उनका नुकसान भी होगा। जैसेः बड़े भाई का सुख नहीं होगा। बड़े भाई बहन होंगे लेकिन आपस में प्यार नहीं होगा। या परदेश में निवास करते होंगे या किसी एक की कम उम्र में मृत्यु हो गई होगी। ऐसा ही सब वस्तुऐं और भावों के बारे में समझें।

ज्योतिष एवं वास्तु सीखने के इच्छुक लेखक से संपर्क कर सकते हैं। कोई भी गुरु या आचार्य शिष्य को संपूर्ण अनुभवी तजुर्बे का ज्ञान नहीं देता सिर्फ किताबी ज्ञान जो सदियों से चला आ रहा है वही देता है। समाजिक परिवर्तन के कारण उनका आज के परिवेश में विशेष महत्व नहीं रह गया है। उदाहरण के लिए जैसे तीस-चालीस वर्ष पहले एक ही छत के नीचे दस भाई बहन इकट्ठे रहते थे और परेशानियां कम होती थी लेकिन आज दो भाई भी एक छत के नीचे नहीं रहते। उस वक्त भी वही ग्रह होते थे और आज भी वही ग्रह है जिसके कारण फलादेश करने की विधि में तब्दीली आई है। लेखक इस नई विधि द्वारा ज्योतिष सिखाते हैं। जो बहुत ही आसान व व्यावहारिक है।

जो नजर आता है वो होता नहीं है

इसके कुछ उदाहरण इस प्रकार है। यदि शनि मेष राशि में हो और मंगल वृष राशि में हो तो शनि शुभ हो जाएगा।
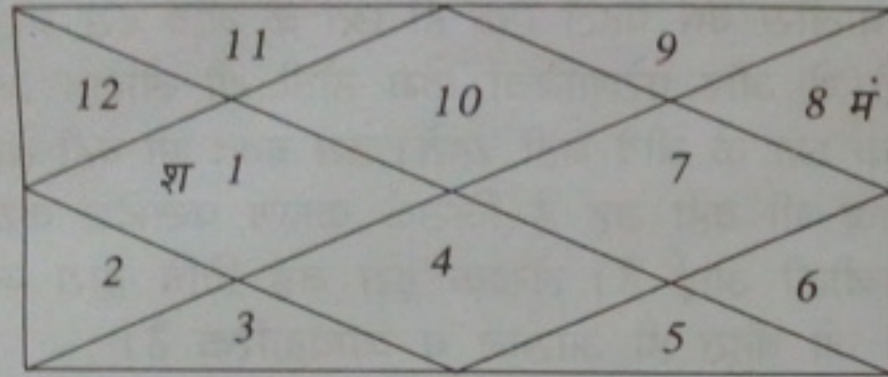
इस कुण्डली में शनि मेष राशि में चौथे खाने में विराजमान है और मंगल ग्यारहवें खाने में विराजमान है शनि मेष राशि में अशुभ होता है। लेकिन अब शनि शुभ होगा। टेवे वाले की सेहत पहले खाने से देखेंगे व्यापार धन दूसरे खाने से देखेंगे। क्योंकि शनि की मकर और कुंभ राशि पहले और दूसरे खाने में पड़ती है। इस टेवे वाले की सेहत बहुत अच्छी है व्यापारी है। और धनवान है। यदि शनि सिंह राशि में अशुभ हो और सूर्य धनु राशि में शुभ हो तो शनि शुभ हो जाएगा।
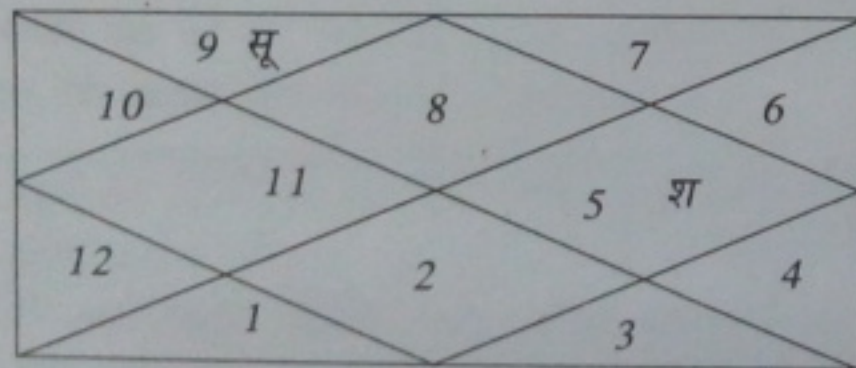
इस कुण्डली में शनि सिंह राशि में खाना नं 9 में है और सूर्य मेष राशि में खाना नं 5 में शुभ राशि में है। अब शनि शुभ फल करेगा। इस टेवे वाला का छोटा भाई है। क्योंकि छोटा भाई तीसरे भाव से देखेंगे। क्योंकि तीसरे भाव में शनि की कुंभ राशि है। टेवे वाला एक व्यापारी और फैक्टरी का मालिक है। धनवान है। धन

और व्यापार दूसरे भाव से आएगा। दूसरे भाव में मकर राशि है। जिसका स्वामी शनि है।
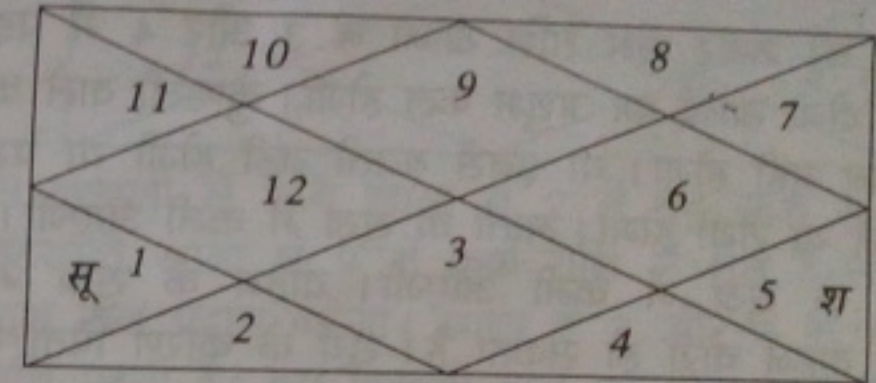
यदि शनि मिथुन तुला कुंभ राशि में शुभ हो और सूर्य धनु मेष सिंह राशि में शुभ हों तो दोनो ग्रह शनि सूर्य अशुभ हो जाएंगे।
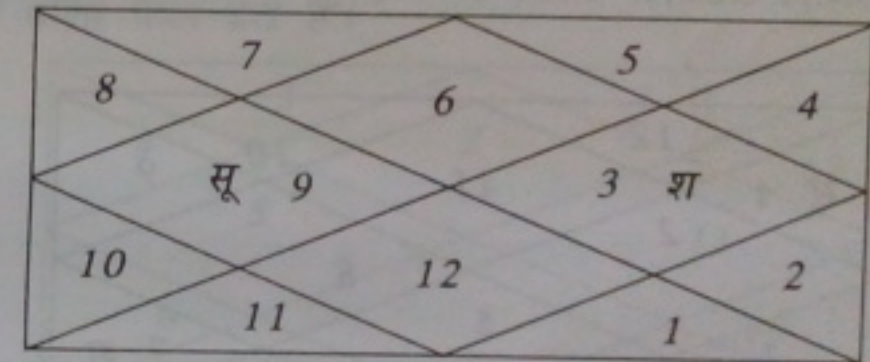
इस कुण्डली में मिथुन राशि में दसवे खाने में शुभ बैठा है। सूर्य धनु राशि में खाना नं 4 में शुभ है लेकिन अब दोनो ग्रह शनि और सूर्य अशुभ प्रभाव देंगे। पंचम भाव में और छठे भाव में शनि की मकर कुंभ राशि पड़ती है। दोनो भावों का अब अशुभ फल होगा। शिक्षा कम होगी या शिक्षा में रूकावट आएगी। पेट संबंधी रोग होंगे। खाना नं 12 में सिंह राशि सूर्य की पड़ती है। जिसके कारण रात की नींद हराम होगी। हानि होती रहेगी। पैर टूटेगा या कोई और रोग होगा।
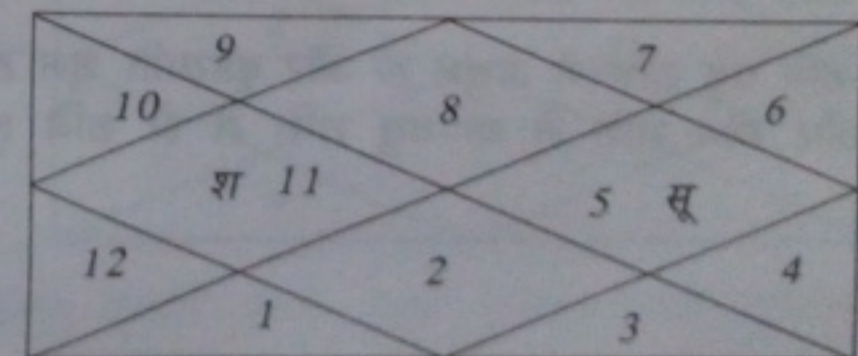
इस कुण्डली में शनि खाना नं 4 में अपनी कुंभ राशि में शुभ है। और सूर्य खाना नं 10 में अपनी सिंह राशि में शुभ है। लेकिन अब दोनो ग्रह अशुभ हो जाएंगे।

शनि की मकर कुंभ राशि खाना नं 3 और 4 में पड़ती है। अब इन दोनो खानों का अशुभ फल होगा। कुण्डली वाले का छोटा भाई बहन नहीं होगा। या इनसे बनती नहीं होगी या परदेश मे रहते होंगे या रोगी होगा। माता के सुख में कमी आएगी। जमीन जायदाद के सुख में कमी आएगी। वाहन के सुख में कमी आएगी। वाहन चोरी हो सकता है। सूर्य के कारण पिता के सुख में कमी आएगी। घुटने पर चोट लगेगी व्यापार में घाटा होगा। सरकारी नौकरी नहीं होगी। अगर होगी तो समय से पहले छोड़नी पड़ जाएगी। या महकमें की तरफ से टेवे वाले के खिलाफ जांच पड़ताल होगी। सरकारी दफ्तर से कोई नुकसान उठाना पड़ सकता है।
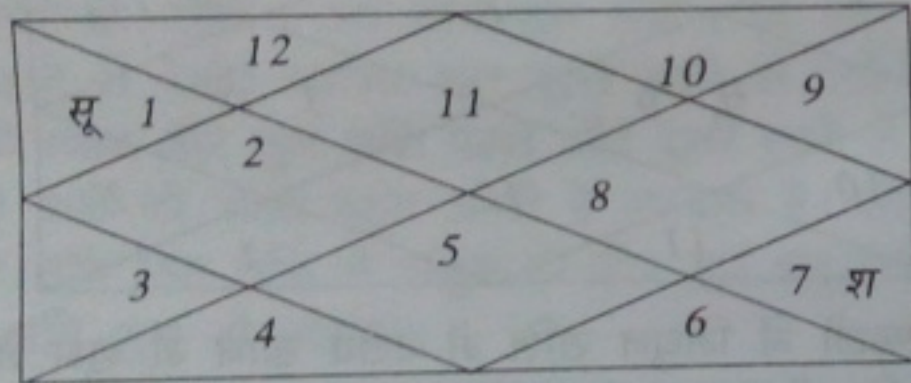
इस कुण्डली में शनि खाना नं 9 में तुला राशि में शुभ है और सूर्य मेष राशि में खाना नं 3 में शुभ है लेकिन अब दोनो ग्रह अशुभ होंगे जैसे खाना नं 12 और 1 में मकर कुंभ राशि पड़ती है जो शनि की है पैर पर चोट लगेगी सेहत अच्छी नहीं होगी। शादी-शुदा जिंदगी अच्छी नहीं होगी। तलाक हो जाएगा। और नहीं तो पति पत्नी दोनो की सेहत अच्छी नहीं होगी।

यदि शनि धनु राशि में अशुभ हो और बृहस्पति शुभ हो कर्क वृश्चिक और मीन राशि मे या धनु राशि में हो शनि शुभ हो जाएगा।
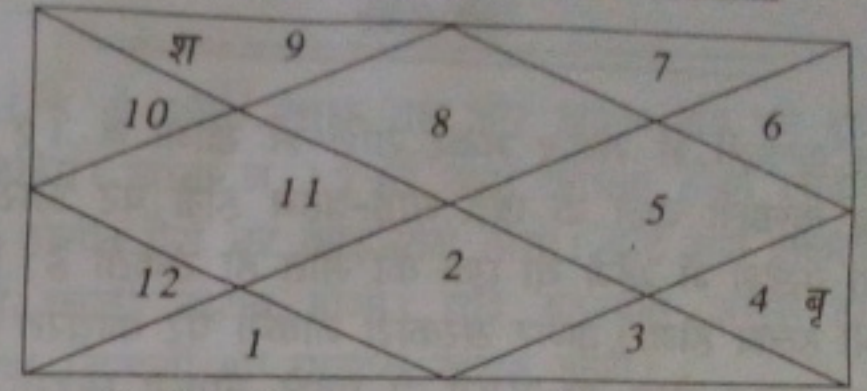
इस कुण्डली में शनि खाना नं 2 में धनु राशि में अशुभ है और बृहस्पति खाना नं 9 में कर्क राशि में शुभ है लेकिन अब शनि शुभ फल प्रदान करेगा। खाना नं 3 और 4 में मकर और कुंभ राशि पड़ती है। इस कुण्डली वाले का छोटा भाई बहन होगा जो कि खाना नं 3 से देखेंगे। और खाना नं 4 के सारे सुख मिलेंगे जैसे वाहन सुख जमीन जायदाद का सुख माता का सुख आदि। खाना नं 6, 8 और 12 में जो ग्रह बैठें हों वो शुभ और अशुभ दोनो फल देते हैं।
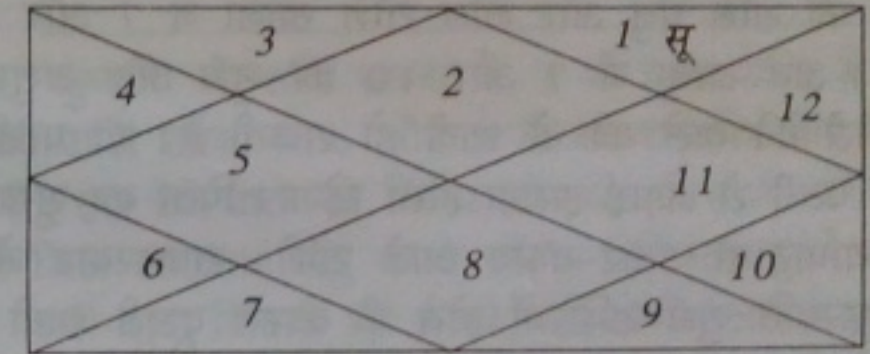
इस कुण्डली में सूर्य खाना नं 12 में शुभ मेष राशि में है इस कुण्डली वाले को जमीन जायदाद वाहन का सुख होगा लेकिन इसका नुकसान भी होगा जैसे वाहन का चोरी हो जाना दुर्घटना का होना।
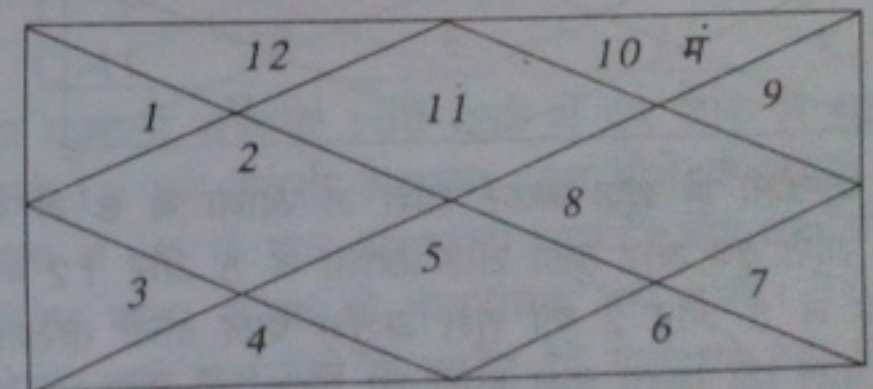
इस कुण्डली में मंगल मकर राशि में खाना नं 12 में शुभ है। इस कुण्डली वाले के छोटे भाई-बहन होंगे पर उनसे बनेगी नहीं या परदेश में रहेंगे या एक की मौत हो सकती है। पिता का सुख भी हल्का होगा। अगर सरकारी नौकरी पर कार्यरत होगा तो निलंबित जरूर होगा या समय से पहले नौकरी छोड़नी पड़ेगी।

4 2
5 3 1
6 12
7 9 11
8 बृ 10
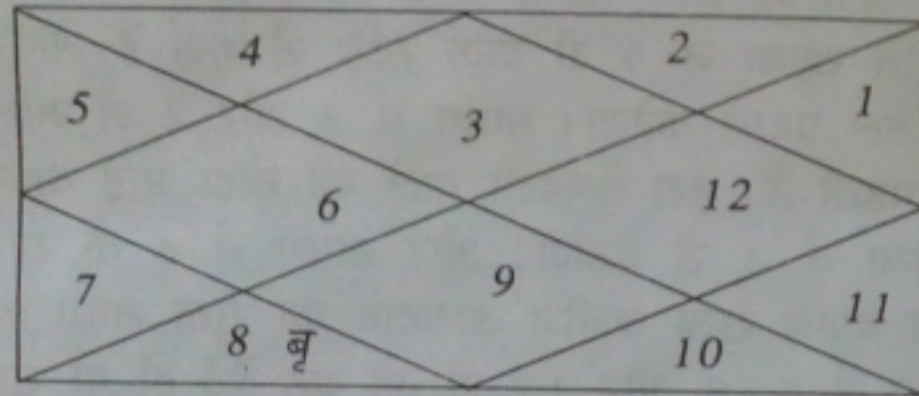
इस कुण्डली में बृहस्पति वृश्चिक राशि में छठे घर में है। और बृहस्पति की राशि धनु और मीन राशि खाना नं 7 और 10 में पड़ती है। अब खाना नं 7 और 10 का शुभ और अशुभ फल होगा। जैसे टेवे वाले की दो शादी हो सकती है। या पत्नी रोगी होगी या पत्नी से लड़ाई झगड़ा होता रहेगा। पिता का सुख हल्का होगा। व्यापार से उतार-चढ़ाव आते रहेंगे। राजदरबार में हानि होगी। बृहस्पति शुभ राशि में होने के कारण दूसरी शादी होगी। यदि कभी जेल जाना पड़ेगा तो जमानत हो जाएगी। फैसला हक में होगा।
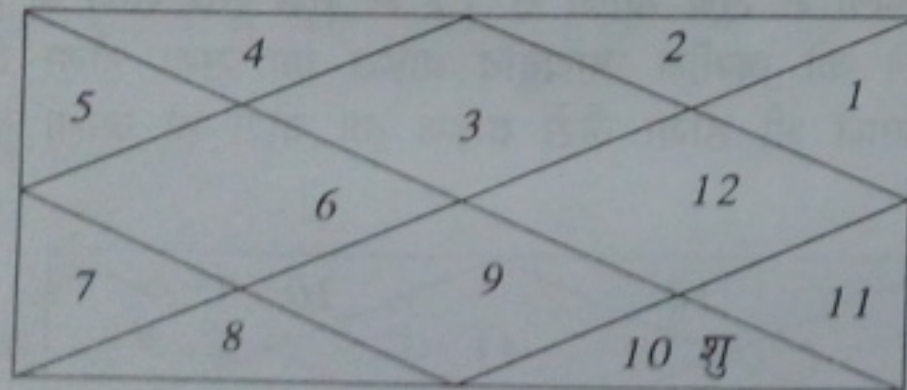
इस कुण्डली में शुक्र मकर राशि में खाना नं 8 में बैठा है। शुक्र की राशि वृष और तुला राशि खाना नं 5 और 12 में पड़ती है। खाना नं 5 और 2 का शुभ अशुभ फल दोनो करेगा। जैसे इस टेवे वाले की शिक्षा कम होगी या शिक्षा में रुकावट आएगी। पेट संबंधित रोग होगा। लेकिन पहली संतान लड़का ही होगी।

खाना नं 5 में कोई अशुभ ग्रह और अशुभ ग्रह की दृष्टि नहीं होनी चाहिए। खाना नं 12 में खर्चा अधिक होगा लेकिन हानि कम ही होगी। पैरों पर कोई रोग होगा। चोट लग सकती है या पैरों की चमड़ी खराब होगी। यदि बृहस्पति अशुभ होगा तो शादी-शुदा जिन्दगी भी एकदम खराब होगी।

यदि खाना नं 6, 8, 12 के खाने की राशियों के ग्रह कहीं भी बैठे हों शुभ अशुभ फल दोनो करेंगे।
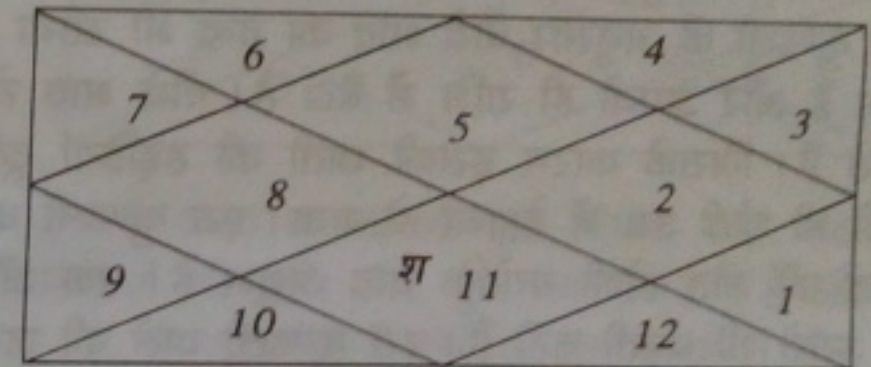
इस कुण्डली में शनि खाना नं 7 में कुंभ राशि में शुभ है। शनि की राशि खाना नं 6 और 7 में मकर राशि और कुंभ राशि पड़ती है। इस टेवे वाले को जिगर की बीमारी होगी। लेकिन जल्द आराम मिल जाएगा। शत्रु बनते रहेंगे। लेकिन शत्रुओं पर विजय होगी। शादी-शुदा जिंदगी भी अच्छी नहीं होगीं। लड़ाई झगड़ा होता रहेगा।
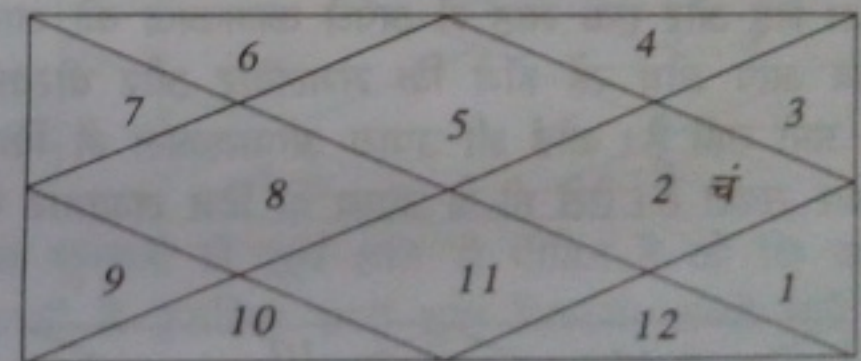
इस कुण्डली में चन्द्र 10वें खाने में वृष राशि में शुभ है और खाना नं 12 का स्वामी है। चन्द्र शुभ होने के कारण टेवे वाले की खाना नं 12 के फल अशुभ हो जाएंगे। और धन हानि होगी। यदि विदेश यात्रा करेगा तो फलदायक नहीं होगी। पैरों पर कोई रोग होगा। चन्द्र शुभ होने के कारण टेवे वाले को चन्द्र की अशियों का लाभ मिलेगा ही।
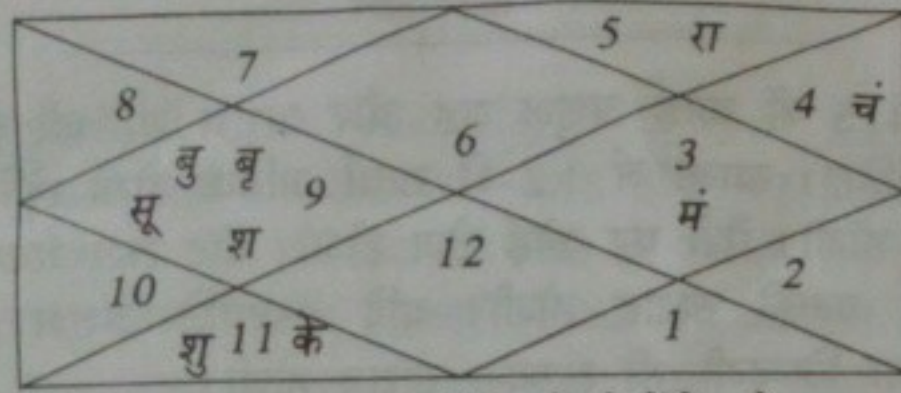
इस कुण्डली का अध्ययन करेगे तो देखेंगे चौथा खाना बहुत ज्यादा पीड़ित है चौथे खाने का स्वामी बृहस्पति शनि बुध द्वारा पीड़ित है और शनि बुध भी खाना नं 4 में अशुभ राशि में स्थित है। लाल कुण्डली के अनुसार चौथे भाव का चन्द्र भी खाना नं 11 में अशुभ है और अपनी ही राशि में बैठा है। चौथे भाव से छाती को देखते हैं। जिसके कारण इसकी छाती की हड्डियां टूटी और माता की भी छोटी उम्र में देहान्त हो गया। इस कुण्डली वाले का बड़ा भाई की मौत होगी क्योकि चन्द्र अशुभ है। एक और बड़ा भाई है उससे भी बनती नही है। इस कुण्डली वाले की जब छाती की हड्डी टूटी तो इसकी पत्नी और लड़का लेखक के पास आए। लेखक ने सबसे पहले वजन के बराबर जौ लड़के के द्वारा चलते पानी में डलवाया फिर कनक और गुड़ के लड्डू बन्दरों को खिलावाए। जातक को डाक्टरों ने 7 दिन से 10 दिन तक का समय अस्पताल में रहने का दिया और 3 माह का बैड रेस्ट का दिया था। लेकिन ये उपाय करने से दो दिन बाद ही अस्पताल से छुट्टी मिल गई और एक माह में अपने कामकाज को जाने लग गया। अब आप सोच रहें होंगे कि मंगलवार और वीरवार एक साथ तो आते नहीं है। कोई भी उपाय आपातकाल में किसी भी दिन में कर सकते है। ऐसे ही ये उपाय दो दिन लगातार करवाए गये थे।
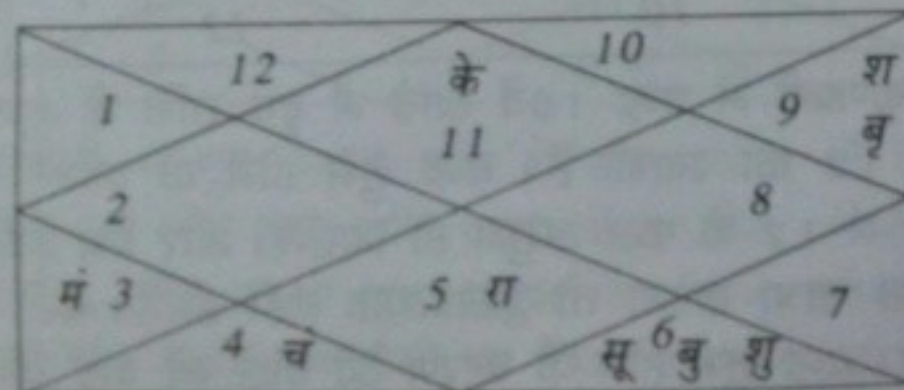
इस कुण्डली वाला जातक एक नौकरी वाले परिवार से है इस कुण्डली में शनि और बृहस्पति का राजयोग है। शनि बृहस्पति 6, 8, 12 भाव को छोड़कर कहीं भी हों तो राजयोग बनाते हैं। इस राजयोग के कारण जातक एक व्यापारी है लेकिन ऐसे राजयोग में जिन्दगी में एक बार 5-6 वर्ष का मन्दा अवश्य आता है
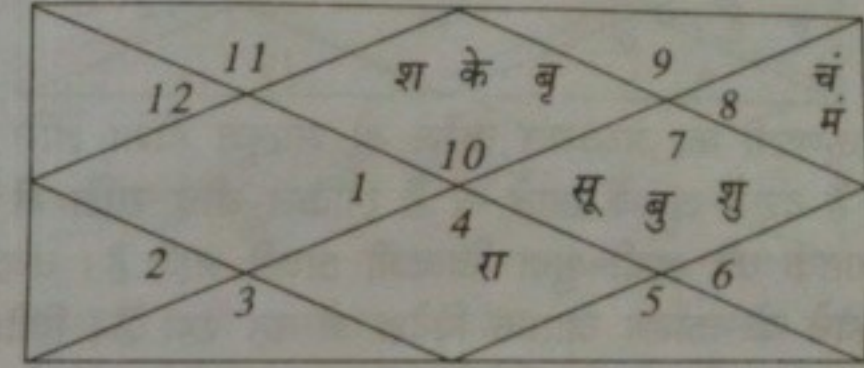
ये कुण्डली वाला जातक भी एक नौकरी वाले परिवार से है। इस कुण्डली में भी शनि और गुरू का राजयोग है और साथ में बुध शुक्र का भी राजयोग है लेकिन सूर्य साथ में नीच राशि का है। इस जातक का व्यापार बहुत अच्छा है फैक्टरी का मालिक है अच्छी कालोनी में निवास करता है इस कुण्डली वाले का थोड़ा बहुत ही मन्दा आएगा क्योंकि इसमें दो राजयोग है।
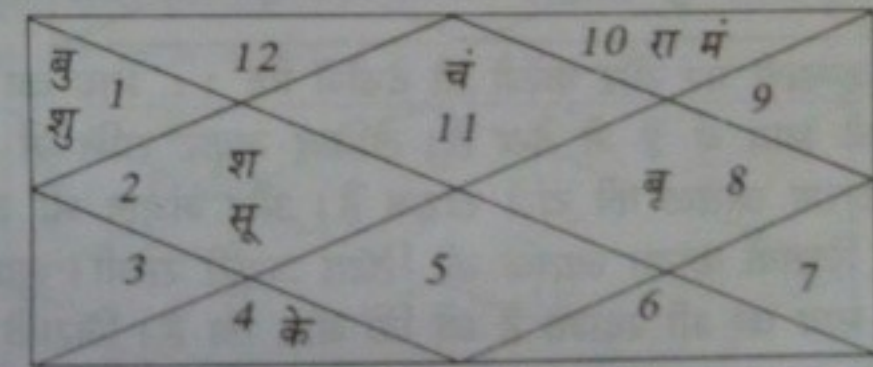
इस कुण्डली में सूर्य शनि से पीड़ित है जो कि सप्तम भाव का स्वामी है इसलिए शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नही है। दसवें भाव का स्वामी मंगल 12वें भाव में ऊँच राशि मकर में बैठा है। इसलिए पिता का सुख कम है। पिता की मृत्यु हो गई ग्यारहवें भाव का स्वामी बृहस्पति भी शनि को सप्तम दृष्टि द्वारा पीड़ित है जिसके कारण बड़े भाई की भी मौत हो गई। आय में भी उतार-चढ़ाव आता रहता है।
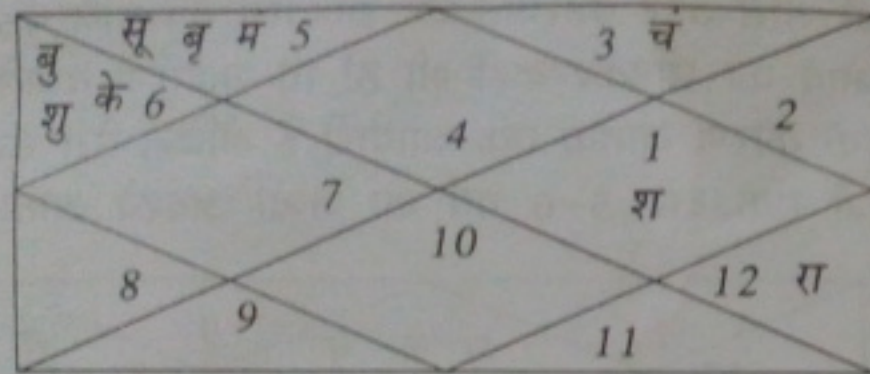
इस कुण्डली का अध्ययन करेंगे तो मालूम होगा शनि जो कि सप्तमेश है दसवें अपने खाने में है लेकिन नीच राशि में जिसके कारण जातक की शादी-शुदा जिन्दगी अच्छी नहीं है। चन्द्र खाना नं 12 होने के कारण जातक विदेश में रह रहा है। विदेश जाने का कारण एक ये भी है चौथे भाव का स्वामी शुक्र नीच कन्या राशि में बैठा है।
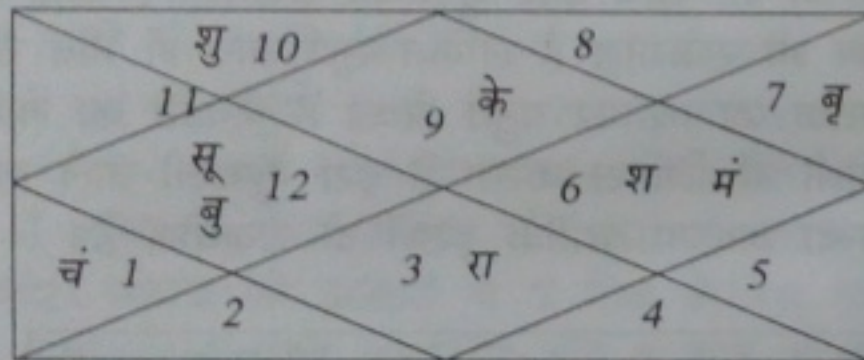
इस कुण्डली पर गौर करेंगे तो देखेंगे कि 11 भाव का स्वामी शुक्र अपने भाव नं 2 में बैठा है। लेकिन मकर राशि में बैठा है जिसके कारण जातक की टांगे खराब है। और मंगल भी शनि से पीड़ित है जिसके कारण जातक की शिक्षा अधूरी रहेगी। शुक्र आय के 11वें भाव का भी स्वामी है जो कि नीच का है। जिसके कारण जातक दो बार व्यापार से घाटा कर के व्यापार बन्द कर दिया है और अब कोई नया व्यापार करने की सोच रहा है।
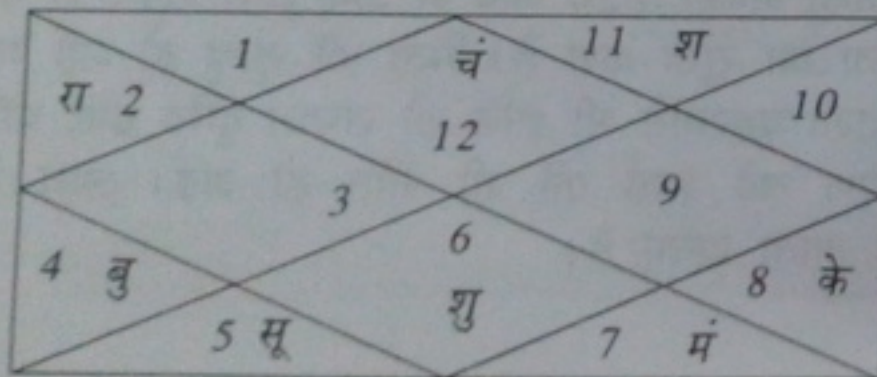
इस कुण्डली को अध्ययन करने पर मालूम होता है कि पांचवा भाव पीड़ित है और सांतवे भाव के शुक्र भी नीच राशि में बैठा है जातक की शिक्षा अधूरी है। क्योकि पांचवे भाव का स्वामी चन्द्र मीन राशि में बीच का बैठा है इसलिए कई बार गर्भपात भी हुआ।
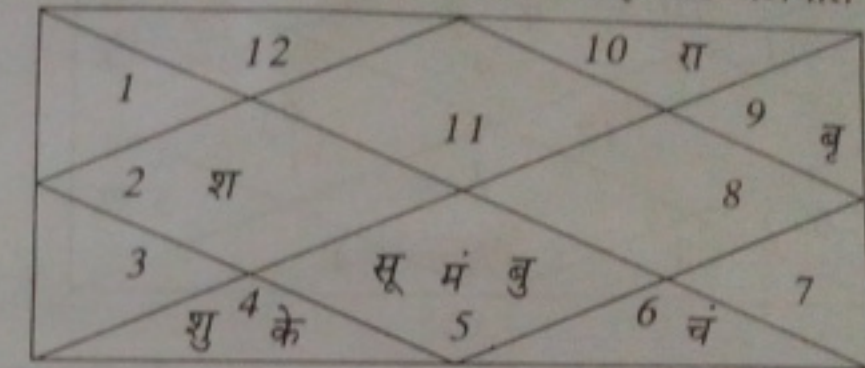
इस कुण्डली को अध्ययन करेंगे तो 5वें भाव का स्वामी बुध सिंह राशि में नीच का बैठा है सूर्य साथ बैठा था। इसलिए शिक्षा अच्छी होगी लेकिन बच्चों में दो लड़कियाँ ही है। जातक बिल्डिंग कन्शट्रक्सन का काम करता है। क्योंकि चौथे भाव से बिल्डिंग कन्सट्रक्शन का काम आता है चौथे भाव का स्वामी शुक्र छठे भाव में बैठा है और केतू राहू से पीड़ित है। लेखक ने जातक को मना किया था कि काम को बदल लें इस काम में घाटा ही होगा लेकिन जातक नहीं माना। जातक की दो तीन वर्ष में ही सारी पूंजी नष्ट होगी। फिर जातक लेखक के पास पूछने आया कि कौन सा काम करूँ।
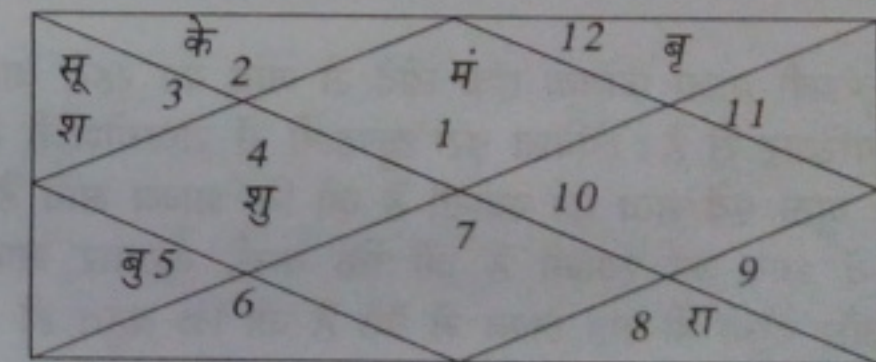
मेष लग्न की इस कुण्डली में शनि और सूर्य मिथुन राशि में तीसरें भाव में बैठे हैं। मिथुन राशि में सूर्य नीच का और शनि शुभ होता है। लेकिन अब यहाँ इसके विपरीत शनि अशुभ और सूर्य शुभ होगा। पंचम भाव का स्वामी सूर्य से शिक्षा और बच्चे देखेंगे। जातक को अच्छी शिक्षा प्राप्त है लेकिन बच्चों में दो लड़कियाँ है क्योंकि शनि की पंचम भाव पर नीच दृष्टि है जातक

की आय भी कम है। बड़े भाई भी नही है।
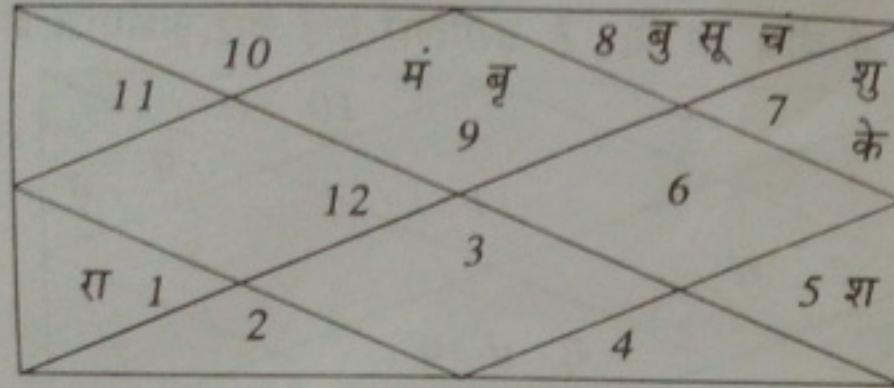
इस कुण्डली में शनि सिंह राशि में नवम भाव में नीच का बैठा है जो कि दूसरे और तीसरे भाव का स्वामी है। दूसरा भाव धनवान है इसलिए जातक को धन का बहुत अधिक नुकसान हुआ जातक ने किसी का उधार दिया जो वापिस नहीं मिला।
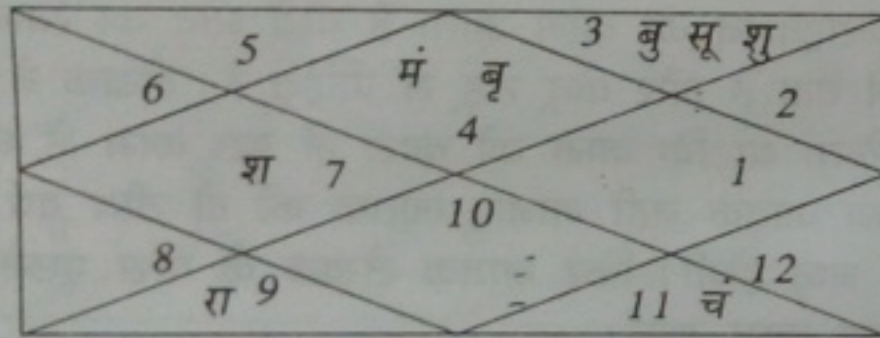
इस कुण्डली वाला जातक एक छोटे से गांव का रहने वाला है और छोटे परिवार से है। लेकिन इस कुण्डली में राजयोग है मंगल गुरू का 1 गुरू 9वें भाव का स्वामी है जो कि भाग्य भाव है और मंगल 10वें भाव का स्वामी है जो कि कर्म, व्यापार भाव का स्वामी है और दोनो ही ग्रह लग्न में बैठे है जो कि बहुत ही अच्छा राजयोग है।

जातक एक अच्छा व्यापारी है। एक अच्छी कालोनी में अपना आवास है। पंचम भाव का स्वामी मंगल कर्क राशि ये नीच का है तब भी संतान दो लड़के ही है। मंगल गुरू के साथ-साथ होने के कारण मंगल शुभ ही रहेगा। गुरू चाहे अशुभ हो जाए। जिसके कारण नौवां भाव प्रयाप्त होगा। जातक धर्म में कम विश्वास रखता है। धर्म के मामले में डावांडोल ही रहता है।
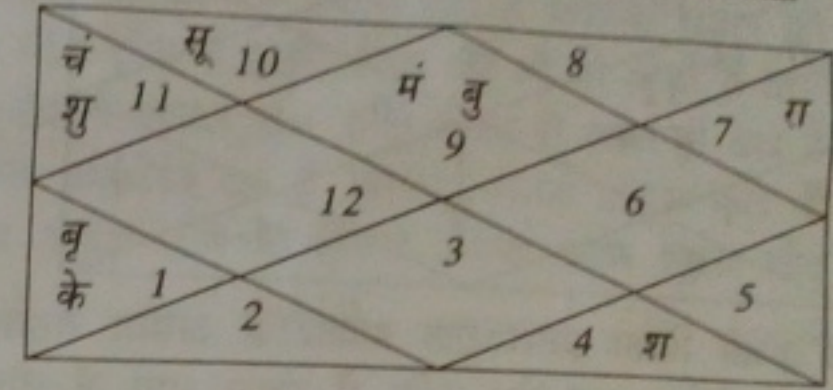
इस कुण्डली में दो परिवर्तन योग है बृहस्पति मंगल की मेष राशि में पंचम भाव में है और मंगल धनु राशि में लग्न में बैठा है। चन्द्र शनि की कुंभ राशि में तीसरे भाव में बैठा है और शनि चन्द्र की कर्क राशि में अष्टम भाव में बैठा है।

जातक एक इंजिनियर है और एक अच्छी कंपनी में काम करता है लेकिन जातक की पिता की मौत जल्दी होगी। क्योकि दसवें भाव का स्वामी बुध नीच राशि में धनु राशि में लग्न में बैठा है और सूर्य भी अच्छा नहीं है जातक के 23वें वर्ष में माता की भी मौत होगी क्योकि शनि अष्टम भाव में है।

पंचम भाव में बैठे बृहस्पति को देख रहा है। बृहस्पति चौथे भाव का स्वामी है और चौथे भाव से ही माता का सुख आता है।
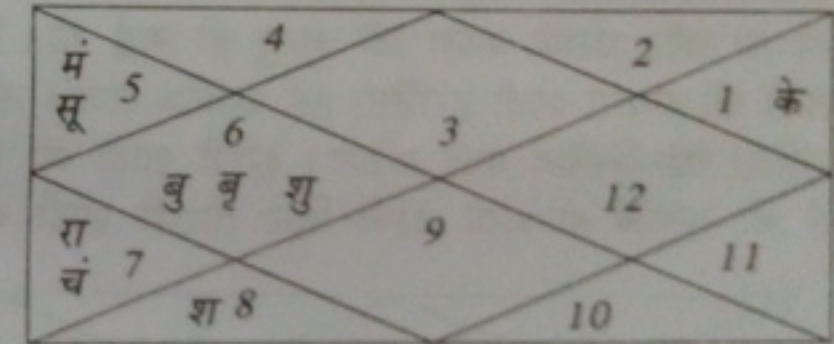
इस कुण्डली में ग्यारहवें भाव का स्वामी मंगल सिंह राशि में सूर्य के साथ शुभ है इस जातक का बड़ा भाई है लेकिन उस का सुख नही है क्योंकि शनि मंगल सूर्य को दसवी नीच दृष्टि डाल रहा है। बड़े भाई ने कभी भी कुण्डली वाले की मदद नहीं की, न ही आपस में प्यार है।
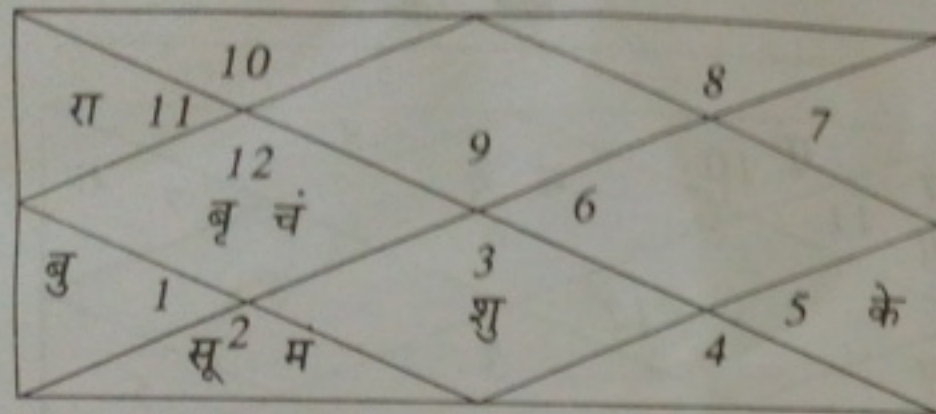
जातक अच्छी शिक्षा प्राप्त एक डाक्टर है अपना बहुत बड़ा नर्सिंग होम है लेकिन बुध मेष राशि में पंचम भाव में नीच का होने के कारण जातक की पत्नी अनपढ़ मिली क्योंकि बुध सप्तम भाव को खराब कर रहा है मजबूरी में शादी करनी पड़ी और बुध दशम भाव का भी स्वामी है जिसके कारण राजदरबार में भी हानि उठानी पड़ी। जातक को जेल भी जाना पड़ा।
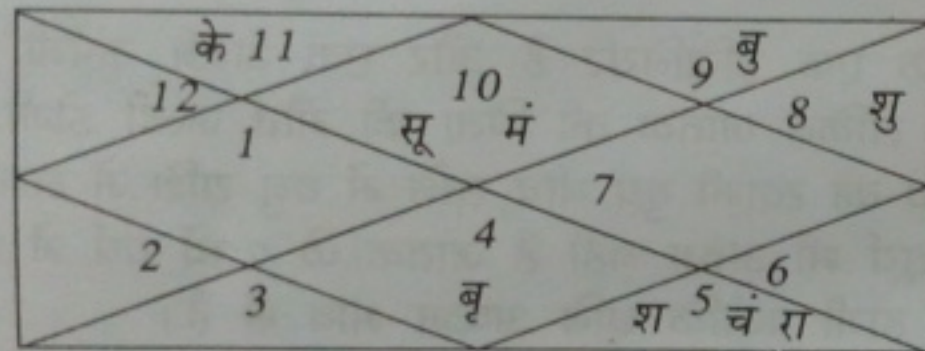
इस कुण्डली में मंगल लग्न में मकर राशि में ऊँच है लेकिन बृहस्पति की नीच दृष्टि से ये अशुभ हो गया जिस कारण तीन साल की उम्र में अपना जन्म स्थान जो चौथे भाव से आता था छोड़ दिया था और उसके माता की मृत्यु हो गई थी। पिता ने दोबारा शादी की दोबारा शादी इसलिए हुई क्योंकि मंगल ऊँच राशि में है इसलिए यह मिश्रित फल करेगा। दूसरी शादी भी दुखदायी थी उससे भी तलाक हो गया उसने फिर तीसरी शादी की।
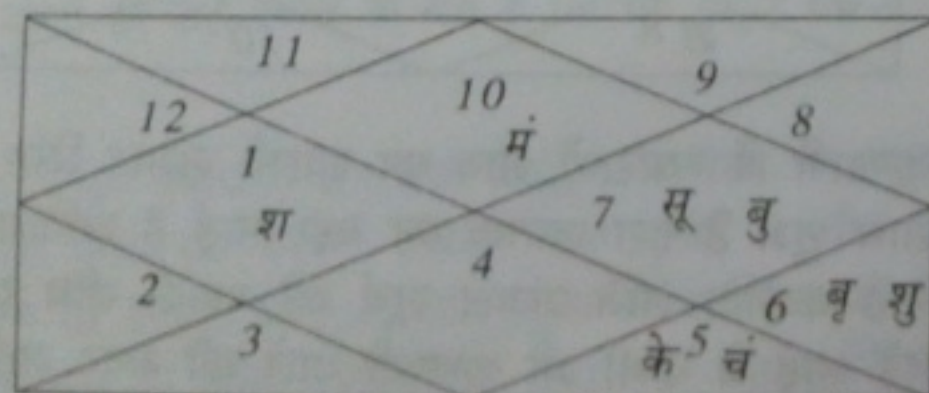
इस जातक की सगाई टूटी है क्योंकि मंगल की सप्तम भाव की नीच दृष्टि है इसके पिता की भी दो शादी है क्योंकि चौथे भाव का स्वामी मंगल शुभ राशि मकर में लग्न में बैठा है लेकिन शनि मंगल को देख रहा है इसलिए मंगल अशुभ फल भी देगा। चौथा भाव अशुभ होने के कारण अपना जन्म स्थान छोड़ दिया था।

सूमों की खट्टी कुत्तया ने चट्टी

यानि कि ऐसे आदमी को अपने धन का सुख नहीं होता इसके मरने के बाद अन्य लोग इसके पैसे का लाभ उठाते हैं। आजकल बैंको में ऐसे बहुत से खाते हे जिनमें करोड़ो अरबों रूपएं जमा है परतु उनके वली वारिस का पता ही नहीं है जैसे एक कुण्डली का उदाहरण नीचे दे रहें हैं-

इस कुण्डली में धन भाव में राहू बैठा है धन भाव का स्वामी शुक्र लाभ स्थान पर शुभ राशि में विराजमान है ऐसे व्यक्तित के पास धन खूब होगा लेकिन कंजूस होगा क्योंकि धन भाव का स्वामी शुक्र सूर्य के साथ बैठा है। यदि शुक्र के साथ कोई ओर दुश्मन ग्रह होता तब भी ऐसा होता।
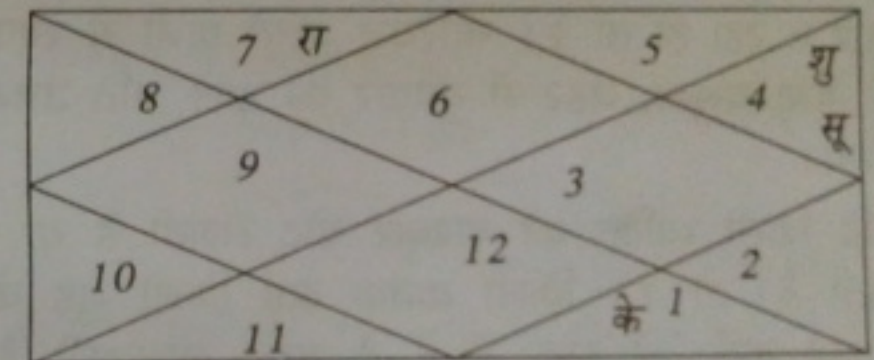
कारगर उपाय

1. यदि किसी व्यक्ति को लड़ाई झगड़े में मुकदमें बाजी में और किसी कारण मान हानि का खतरा हो शनि किसी भी खाने में बैठा हो तो सरसों का तेल मिट्टी के लोटे में भरकर किसी खड़े गन्दे पानी में डुबाएं। फौरन फल की प्राप्ति होगी। ऐसा आवश्यक नहीं है कि शनि खाना नं 6 में हो तो ही यह उपाय करना है। लेखक ने सैकड़ों जातकों को ये बताया कि ये उपाय करना है जिन का शनि खाना नं 6 में नहीं था तब भी उनको फौरन फायदा हुआ है।
2. जब भी किसी व्यक्ति को कोई भी टेन्शन हो और कुछ भी सूझ न रहा हो तो 21 नारियल चलते पानी में साफ पानी में गंगा यमुना, नहर में बुधवार को डाले अति उत्तम लाभ होगा।
3. यदि किसी व्यक्ति को बारबार चोट लगती है या दुर्घटना होती है। तो 11 किलो कनक ढ़ाई किलो गुड़ के साथ मांगने वाले को दान में दे दें बहुत लाभकारी है। दान रविवार या मंगलवार को दें।
4. यदि किसी गर्भवती महिला को बच्चा होने के समय डाक्टर ने कहा कि आपरेशन से बच्चा होगा और सातवां माह हो तो वजन के बराबर जौं चलते पानी में वीरवार को डालें और उससे अगले हफ्ते मंगलवार को 80 किलो गुड़ गौशाला में गौऊओं को खिलाएं और लाल धागा कमर पर बांधे ये आवश्यक है बच्चा होने से पहले कम से कम 30 दिन का समय होना चाहिए। ये उपाय अवश्य मददगार होगा।
5. यदि किसी की हड्डी टूट जाए तो उसके लिए उपाय है कनक को भून कर और गुड़ की चाश्नी बनाकर लड्डू बना लें कनक गुड़ बराबर मात्रा में होने चाहिए और वे लड्डू बन्दरों को खिलाएं बहुत जल्द आराम आएगा। यदि डाक्टर ने कहा कि आपको 90 दिन में आराम आएगा तो आपको 45 दिन में ही आराम आ जाएगा। यह उपाय भी बहुत

लोगों के ऊपर आजमाया हुआ है। ये उपाय मंगलवार या रविवार को करें। उदाहरण के तौर पर एक कुण्डली है जो पेज नं 198 पर दी गई है जिसकी छाती की हड्डी (रिप) टूट गई है चौथी मंजिल से गिरने के कारण।

6. यदि किसी को कोई बीमारी हो और बारबार हो रही हो तो सेंधा नमक पत्थर वाला 80 किलो गोशाला में गऊओं को खिलाएं। और शनिवार को तिल्ले वाला झाड़ू किसी धर्म स्थान पर दे या किसी गरीब मांगने वाले को दें यदि किसी कारण 80 किलो नमक एक साथ नहीं खिला सकता तो हर शनिवार थोड़ा सा नमक गाय को देते रहें। यदि मंगल अशुभ हों तो चार मीठे पान गुलकन्द वाले किसी को खिलाएं मंगलवार को।
7. यदि बारबार कोई काम न बन रहा हो और प्रतीक हो किसी की नजर लग रही है तो लाल मुंह वाला बन्दर मिट्टी वाला घर आफिस फैक्टरी दुकान आदि में रखें और बन्दर का मुंह बाहर की तरफ होना चाहिए यानि के दरवाजा की तरफ। यदि आप को लगे आपका कार्य किसी ने बांध रखा है तो आप रात को सोने से पहले और खाना खाने के बाद लोबान, गुगुल, हरमल आटे का छान और किसी भी चौराहे की मिट्टी एक मिट्टी के बरतन में रखकर जलाएं और उसका धुआं सारे घर में करे। फिर जब जल कर ठंडा हो जाए तो उसकी राख मिट्टी के बर्तन के साथ किसी चौराहे पर एक किनारे रख दें। ये उपाय लगातार तीन दिन करें शुक्र शनि और रविवार को। सामान तीनों दिन अलग-अलग खरीदें।
8. हरिद्वार जाकर स्नान करें स्नान करने की विधि घर से सामान लेकर जाएं। 1. एक नारियल पानी वाला 2. सवा पाव गुड़ 3. एक मुट्ठी चावल 4. एक मुठ्ठी आटा 5. 7 पताशे खण्डित न हों 6. 7 सिक्के एक रूपए वाले 7. मिठाई का डिब्बा। कपड़े समेत स्नान करें जब तक आपका मन करे। स्नान करने के अंतिम समय नारियल अपने सर पर रखें और जिस तरफ से पानी का बहाव आ रहा हो उस

तरफ मुंह करके तीन बार डुबकी लगाएं या तीन बार जितना नीचे बैठ सकें बैंठे फिर नारियल को अपने पीछे की तरफ डाल दें। और बाहर आ जाएं। पीछे की तरफ नहीं देखेंगे। कपड़े न निचोड़े कपड़े जहां पर एक बार रख दें वहीं पर पड़े रहने दें। उन्हे पैर से या किसी और वस्तु से इधर उधर न करें उन कपड़ों को वहीं छोड़ दें वापस नहीं लाएं। फिर नए वस्त्र पहन कर गुड़ पानी में डाले फिर पताशे, फिर आटा फिर चावल फिर मिठाई से मुंह मीठा कर लें और सात सिक्के और बाकी की मिठाई गरीबों में बांट दें। जब वापस घर आएं घर के अंदर जाने से पहले अपना मुंह मीठा कर लें। ये उपाय बहुत लोगों पर कारगर मददगार साबित हुआ है।

9. यदि आप का मकान नहीं बन पा रहा हो तो या रूकावट आ रही हो तो आप आटे और बेसन की चार रोटियां बनाकर गाय को खिलाएं। ये ख्याल रखें आटा और बेसन बराबर मात्रा में होने चाहिए। और साथ में इस मंत्र का जाप करें। ग्यारह माला रोज करें। ऊँ नमः श्री वराहाय धरन्यु द्धारणाय स्वाहा।

10. सवा किलो काले चने मसाले वाले बनाकर 43 शनिवार गरीबों में बांटे चने सरसों के तेल में बनाएं। आमचूर धनिया पाउडर अवश्य डालें। ये उपाय व्यापार, मकान और वाहन के लिए बहुत अधिक कारगर है।

11. 1.गाय को मीठी रोटी रोज खिलाएं जो सबसे पहले बनी हों। 2. कौओं को बेसन के पकौड़े सरसों के तेल के बने हुए रोज खिलाएं। 3. कुत्ते को रोटी रोज डाले जो भी ये तीनों उपाय रोज करेगा उसे अपनी जिन्दगी में जो परेशानी आएगी फौरन हल हो जाएगी। इस उपाय के साथ कोई और उपाय भी कर सकते हैं उसका कोई वहम नहीं है।

12. चोरियां या वैसे ही धनहानि बारबार हो रही हो थोड़े से जौ लेकर घर के अंधेरी जगह पर किसी कपड़े में बांध कर उस पर भारी वजन रख दें।

13. यदि किसी के बच्चें की शादी में रूकावट हो तो माता-पिता दोनो 2 केले छोटे से केले के पत्ते पर रखकर मन्दिर में लक्ष्मी नारायण की मूर्ति पर रखकर प्रार्थना करें लगातार 108 दिन तक।

14. यदि किसी की लड़की की शादी में रूकावट आ रही हो तो सात रंग की साड़ियां और ब्लाउज पेटी कोट और एक साड़ी के साथ श्रंगार का सामान लेकर मन्दिर में माता की मूर्ति को पहनाएं और बुधवार को बाकी की साड़ियां मन्दिर में दे दें। यदि सात साड़ियां नहीं दे सकते तो एक साड़ी का पूरा सेट दें। बाकी के 6 रंग के ब्लाउज दे दें। और लड़की एक रोटी मीठी एक नमक वाली सुबह और शाम को दोनो समय गाय को खिलाए 43 दिन तक लगातार। कोई वहम् न करें।

15. कभी भी कोई नए काम पर जा रहा हों जो नौकरी के साक्षात्कार के लिए जा रहा हो तो 15 केले मन्दिर में रखकर जाएं।

16. यदि बच्चे पढ़ाई खूब करते हैं लेकिन अंक कम आते हैं या पढ़ाई में दिल नहीं लगता हो तो एक बार 9 दर्जन केले वीरवार को धर्मस्थान पर रखें या गरीब बच्चों में बांटे बच्चे के हाथों से। उसके बाद हर माह पहले वीरवार को चार दर्जन केले भी धर्मस्थान पर रखें या गरीब बच्चों में बांटे इस उपाय से अवश्य लाभ होगा।

17. यदि राहू अशुभ हो तो पूर्णिमा के पूर्णिमा 13 पूर्णिमा लगातार हरिद्वार जाकर गंगा में स्नान करें और एक नारियल गंगा जी में प्रवाह करें शतप्रतिशत लाभ होगा। राहू शैतानी करना बंद कर देगा। ये ख्याल रहे कि स्नान करने से पहले कुछ खाया न हो। इसलिए स्नान सुबह सुबह करें।

18. अगर व्यापार का नाश हो रहा हो तो 1. दुर्गा का पाठ कराएं 2. तोते को चूरी खिलाएं फिर उड़ा दें बुधवार के दिन 3. सफेद कबूतर को मूंग की दाल रात को भिगोकर बुधवार सुबह डालें।

19. किसी की लड़की की शादी न हो रही हो तो एक मिट्टी की लड़के और लड़की की मूर्ति लेकर अलग-अलग हो या एक साथ बनी हो को बराबर मात्रा में हल्दी, आटा, चावल का आटा लेकर लेप लगा कर एक लकड़ी का पटरा लेकर उसके नीचे रखें और लड़की को पटरे पर कुछ देर बिठाएं बैठते समय मन में यही विचार होने चाहिए कि मेरी शादी जल्दी हो जाए ये उपाय निर्जला एकादशी के दिन करे उसके बाद 6 एकादशी और करें।
20. यदि आप शनि महाराज से परेशान हैं तो अमावस्या के अमावस्या लगातार 17 बार गंगा स्नान करें दोपहर को तीन बजे के आसपास। और स्नान करने के बाद कुछ बादाम गंगा जी में प्रवाह करें।

ज्ञानवर्धक बातें

1. कौन ऐसा बुद्धिमान है जो सभी चीजों को पूर्णतः जानता हो? अतएव अपने विचारों पर अधिक निर्भर न रहो। परंतु दूसरों के विचार को भी सुनने के लिए तैयार रहो।
2. दूसरों को दुख देने, बड़ों का अपमान करने से चित्त अप्रसन्न रहता है। गुरु पूज्य देव की निन्दा करना नीचपन है, इसका सदा त्याग करो।
3. यदि सुख चाहता है, तो विद्या छोड़ दे, यदि विद्या चाहता है तो सुख छोड़ दे, क्योंकि सुख चाहने वाले आलसी को विद्या कैसी? विद्या चाहने वाले को सुख (आलस्य) कैसे हो सकता है।
4. कोयल की शोभा स्वर से, स्त्री की शोभा लज्जा, सहनशीलता, नम्रता, सेवा से, धन की दान से, घर की बुजुर्गों की सेवा से, मुख की सत्य बोलने से, हृदय की सुन्दर विचारों से, सिर की शोभा माता-पिता, गुरू साधु बड़ों के चरणों में झुकने से होती है।
5. लोभी को धन से घमन्डी को हाथ जोड़कर, मूर्ख को उसके अनुसार बर्ताव से और पण्डित सज्जन को सच्चाई से वश में करना चाहिए।
6. हे मनुष्य जोश में आकर इतना जोश-खरोश न दिखा, इस दुनिया में बहुत से दरिया चढ़-चढ़कर उतर गए-कितने ही बाग लगे और सूख गए।
7. जो जितना छोटा है, वह उतना ही घमण्डी और उछलकर चलने वाला है, जो जितना गंभीर और निरभिमानी है, नदी-नाले थोड़े से जल से इतरा उठते है, किन्तु सागर जिसमें अनन्त जल भरा है, गंभीर रहता है।
8. हमें अधिक शान्ति मिलती यदि हम आपने को दूसरों के काम और वचनों में उलझाए न होते, उन वस्तुओं में फंसे होते जिनसे हमारा कोई संबंध नहीं है।

9. सच तो यह है कि शरीर बिजली की चमक और बादल की छाया की तरह चंचल और अस्थिर है। जिस दिन जन्म लिया, उसी दिन मौत पीछे पड़ गई, अब वह अपना समय देखती है और समय पूर्ण होते ही प्राणी को नष्ट कर देगी।
10. किसी पहाड़ से गिर जाना परंतु किसी की नजरों में मत गिरना।
11. झूठ भी अच्छा यदि वह प्रेम से जन्मा हो, सत्य बुरा है अगर वह केवल चोट पहुँचाने के लिए बोला गया हो।
12. यदि मनुष्य केवल प्रतीक्षा करे हर वस्तु प्राप्त हो जाती है।
13. जिससे आप जितना ज्यादा चिपकते हो वही चीज आपके लिए दुःख का कारण बनेगी।
14. जो लोग मादक द्रव्यों की तरफ भाग रहें हैं, उन्हें असल में ध्यान की तलाश है।
15. एक ठीक संतुलित व्यक्ति किसी चीज के विरूद्ध नहीं होता और न ही किसी के पक्ष में होता है।
16. जब कोई देश इतने सारे संतो को पैदा करता है, तो उसे उतनी ही संख्या में पापी पैदा करने पड़ते हैं। वरना संतुलन नहीं रहेगा। एक बुद्ध होने के लिए लाखों पापी चाहिए।
17. जितना तुम स्वयं को जानते हो उतना ही तुम दूसरों को जान सकते हो। उससे रत्ती भर ज्यादा नहीं।
18. भ्मंतज पे जीम `मंज व् हिवक ंदक कमअपसण
19. जो आदमी अपनी आवश्यकताओं को काटकर अपनी इच्छाओं की पूर्ति करता है। वह दुःखी रहता है।
20. प्रकाश को एक ही फूंक में भगा सकते हो। लेकिन अंधेरा को मार कर नहीं भगा सकते।
21. परमात्मा पृथ्वी की कोई भाषा नहीं समझता। परमात्मा केवल प्रेम की भाषा ही समझता है।
22. दुख को अगर दबाए तो बढ़ता है दुख को अगर प्रकट करें तो घटता है।

23. आनंद को दबाए तो घटता है आनंद को अगर प्रकट करे तो बढ़ता है।
24. पुरुष चलता है तो बुद्धि से, विचार से, तर्क से। स्त्री चलती है भाव से, कल्पना से स्वप्न से।
25. भला करना बहुत महंगा पड़ता है दया करनी भी बहुत मंहगी पड़ती है।
26. नेकी ही मुसीबत झेलती है।
27. सम्मानित आदमी ही बदनाम होता है।
28. जो आदमी अपनी जितनी गलती मानता जाएगा। वह उतना ही सही होता जाएगा।
29. सामूहिक पूजा नहीं होती। सामूहिक कीर्तन होता है।
30. असल में जिनमें बदलने की क्षमता होती है वे ही जीवित रहते हैं अन्यथा मर जाते हैं।
31. जिन्दगी में विश्राम बहुत मुश्किल है। मंजिल कभी नहीं मिलती बल्कि वह खुद मंजिल बन जाता है।
32. सत्य को वही जानेगा जिसकी कोई शर्त नहीं है।
33. जिसके हम मालिक हैं, उसे हम बदल सकतें हैं, जिससे आप लड़ते हैं, उसके आप मालिक कभी नहीं बन सकते है।
34. अशांति पैदा होती है, अस्वीकार की वृत्ति से।
35. सच भी एक अति है और झूठ भी एक अति है। सपना ठीक मध्य है। संसार को सच कहना भी एक अति है और झूठ कहना भी एक अति है। संसार को एक सपना कहना ठीक मध्य है।
36. दूध में मधुरता तब तक होती है जब तक सर्प उसे नहीं छूता। पुरुष में गुण भी उसी समय तक रहतें हैं जब तक कि तृष्णा का स्पर्श नहीं होता। अतः बुद्धिमानों । अनित्य नाशवान् विषयों से दूर रहो, क्योंकि इनमें जरा भी सुख नहीं।
37. मनुष्य जितना अधिक नम्र होगा, जितना अधिक परमात्मा

में उसका विश्वास होगा, उतना ही अधिक वह अपने कार्यों में कुशल होगा और उतनी ही अधिक शान्ति और हार्दिक तुष्टि को भोगेगा।

38. अभिमानी और लोभी को कभी शान्ति नहीं मिल सकती। दीन और विनम्र हृदय पूर्ण शान्ति में सदा साथ रहता है।

39. यदि तुम्हारे पास धन हो तो भी उस पर गर्व न करो, बलशाली मित्रों पर गर्व न करो, परंतु गर्व करो उस परमात्मा पर जो तुम्हें सब कुछ देता है और जो तुम्हें स्वयं अपना बना लेना चाहता है।

40. मांस खाने वालों, मदिरा पीने वालों, निरक्षर, मूर्खों इन पुरुष रूपधारी पशुओं के भार से पृथ्वी दुःखी रहती है। मूर्ख का हृदय सूना होता है। दरिद्रता सब से सूनी कष्टकर है।

41. यह अच्छा है कि कभी-कभी हम कठिनाई और कष्टों में पड़ जाते हैं, क्योंकि उनसे प्रायः हम अपने अन्तर में प्रवेश करते हैं। और यह सोचते हैं कि हमारा यहां का जीवन निर्वासन का है और ऐसी दशा में हमें किसी भी सांसारिक वस्तु में विश्वास नहीं रखना चाहिए।

42. अपने सत्कार्यों पर अभिमान करो, क्योंकि मनुष्य का न्याय परमात्मा के न्याय से सर्वथा भिन्न है, और प्रायः जो उसे (मनुष्य का) सुखद प्रतीत होता है, वही परमात्मा को अरूचिकर हो जाता है।

43. माता के समान कोई तीर्थ, रक्षक, सरोवर, देवता नहीं है माता की सेवा करने वाला तर जाता है। पिता, गुरू, संत महात्मा भी तीर्थ हैं। तीर्थ वह है जो तार देता है।

44. आंख के समाने मीठी-मीठी बातें करने वाले परन्तु आंख के पीछे होने पर सभी कार्य नष्ट करने वाले मित्र को कंठ तक बाहर से दूध और अंदर जहर भरे घड़े की तरह छोड़ देना चाहिए।

45. जैसे दीपक अंधकार को खाता है और कालिख छोड़ता है इसी तरह मनुष्य जिस तरह, जिस हाथ का पका हुआ अन्न

खाता है उसकी वैसी ही बुद्धि, विचार संस्कार संतान बनती है।

46. सोच करने से कोई लाभ नहीं है, सोच करने वाला केवल दुःख ही भोगता है। जो मनुष्य सुख और दुःख दोनो को त्याग देता है। जो ज्ञान से तृप्त है और बुद्धिमान है, वही सुख पाता है।

47. सदा प्रसन्न रहने का उपाय है दूसरों के गुण देखो त्रुटियों नहीं, सदाचारी बनो दुराचारी नहीं, दानी बनो कृपण नहीं, दयालु बनो कठोर नहीं, सहनशील बनो क्रोधी नहीं, निष्कपट बनो कपटी नहीं, त्यागी बनो लोभी नहीं।

48. अपनी बड़ाई स्वयं मत करो इससे दूसरों की दृष्टि में गिर जाओगे। बेईमान का दिमाग और मूर्ख की जिहव्वा भयानक है इनसे बचो। सांप के दांत तथा बिच्छू की पूंछ में विष होता है किन्तु दुष्ट के अंग-अंग में विष समाया होता है।

49. मेरा अहंकार मुझे स्वयं से मिलने नहीं देता। जब मन शुद्ध हो जाता है वह अपने आप गिर जाता है।

50. पहाड़ से गिर जाओ लेकिन किसी की नजरों में न गिरो।

वर्षफल

आयु	घर 1	घर 2	घर 3	घर 4	घर 5	घर 6	घर 7	घर 8	घर 9	घर 10	घर 11	घर 12
1	1	9	10	3	5	8	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5

आयु	घर 1	घर 2	घर 3	घर 4	घर 5	घर 6	घर 7	घर 8	घर 9	घर 10	घर 11	घर 12
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	2	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4

आयु	घर 1	घर 2	घर 3	घर 4	घर 5	घर 6	घर 7	घर 8	घर 9	घर 10	घर 11	घर 12
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	9	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	1	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	9	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	12	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	6	9	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11
89	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	8
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	9	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8